भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 264 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 18 सितम्बर 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस हजार वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्
क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान
प्रयागराज
10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

अफगानिस्तान में तालिबान संकट के खतरे बता पीएम मोदी बोले- भारत जैसे पड़ोसियों पर सबसे ज्यादा असर

नई दिल्ली (एजेंसी)। शंघाई सहयोग संगठन (एण्द्य) - कलेक्टिव सिक्योरिटी ट्रीटी ऑर्गनाइजेशन के आउटरीच शिखर सम्मेलन में पीएम नरेंद्र मोदी ने अफगानिस्तान को लेकर भारत की बात रखी है। उन्होंने कहा है कि अफगानिस्तान में हाल के घटनाक्रम का सबसे अधिक प्रभाव भारत जैसे पड़ोसी देशों पर होगा। और इसलिए, इस मुद्दे पर क्षेत्रीय फोकस और सहयोग जरूरी है। यह जरूरी है कि वैश्विक समुदाय सामूहिक रूप से और उचित विचार-विमर्श के साथ नई प्रणाली की मान्यता पर निर्णय ले। इस मामले पर भारत यूनाइटेड

नेशंस का समर्थन करता है। पीएम मोदी ने अफगानिस्तान मसले को लेकर 4 मुख्य मुद्दे पर ध्यान देने की जरूरत बताई है। उन्होंने कहा है कि पहला मुद्दा यह है कि अफगानिस्तान में सत्ता-परिवर्तन समावेशी नहीं है, और बिना बातचीत के हुआ है। दूसरे बात उन्होंने कही कि अगर अफगानिस्तान में अस्थिरता और कट्टरवाद बना रहेगा, तो इससे पूरे विश्व में आतंकवादी और चरमपंथी विचारधाराओं को बढ़ावा मिलेगा। अन्य उग्रवादी समूहों को हिंसा के माध्यम से सत्ता पाने का प्रोत्साहन भी मिल सकता है।पीएम मोदी ने आगे कहा है कि अफगानिस्तान में ड्रग्स, अवैध हथियारों और मानव तस्करी का प्रवाह बढ़ सकता है। बड़ी मात्रा में अत्याधुनिक हथियार अफगानिस्तान में रह गए हैं। इनके कारण पूरे क्षेत्र में अस्थिरता का खतरा बना रहेगा। उन्होंने भयंकर मानवीय संकट को चौथा सबसे बड़ा मसला बताया है। उन्होंने कहा है कि वित्तीय और व्यापार प्रवाह में रूकावट के कारण अफगान जनता की आर्थिक हालात ख़राब होती जा रही है। इसके साथ ही कोविड की चुनौती भी बनी हुई है। पीएम मोदी ने कहा है कि आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस का सिद्धांत होना चाहिए। सीमा पार आतंकवाद और आतंकवाद के वित्तपोषण जैसी गतिविधियों पर रोक लगाने के लिए इसकी एक आचार संहिता होनी चाहिए।

विदेश से आए पैसों को लेकर फंसे सोनू सूद अभिनेता के ठिकानों पर छापेमारी में मिले कागजात

नई दिल्ली (एजेंसी)। फिल्म अभिनेता सोनू सूद फिलहाल इनकम टैक्स के राडार पर हैं। शुक्रवार को भी उनसे जुड़े विभिन्न ठिकानों पर छापेमारी जारी रही। इस बीच समाचार एजेंसी एएनआई ने एक सूत्र के हवाले से इस छापेमारी से जुड़ी कुछ जानकारी दी है। इस जानकारी से सोनू सूद पर आईटी रेड की वजहों की प्रारंभिक वजह सामने आ रही है। सूत्रों के मुताबिक सोनू सूद ने विदेशी योगदान विनिमय अधिनियम (एफसीआरए) से जुड़े नियम तोड़े थे। इसको लेकर ही इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने छापेमारी को अंजाम दिया है। इस संबंध में मिले कुछ कागजात से खुलासा हुआ है कि सोनूसूद ने

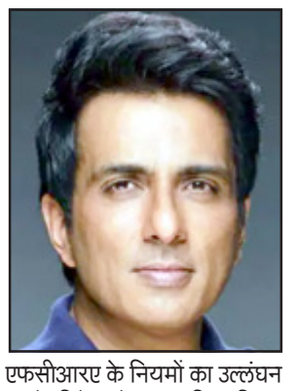

एफसीआरए के नियमों का उल्लंघन करके विदेश से धन हासिल किया है। सूत्रों ने बताया कि विदेश से मिले इस पैसे को फिल्म अभिनेता ने कई अन्य जगहों पर खर्च किया। एक अन्य सूत्र ने बताया कि सोनू सूद के ठिकाने पर टैक्स चोरी की रकम भी मिली है। सूत्र के मुताबिक यह रकम अभिनेता के पर्सनल फाइनेंस से जुड़ी है। इसके अलावा सूद चैरिटी फाउंडेशन के अकाउंट्स की भी छानबीन चल रही है। सूत्रों ने बताया कि अनगिनत संख्या में रसीदें भी उनके ठिकाने से मिली हैं। सूत्रों ने दावा किया कि छापेमारी में बोगस लोन और बोगस बिलिंग से जुड़े कई दस्तावेज भी छापेमारी के दौरान पाए गए हैं। अब इनकम टैक्स डिपार्टमेंट इन कागजातों की जांच कर रहा है। एक सूत्र ने बताया कि इस बात के भी सुबूत मिले हैं कि विभिन्न जरिए से अलग-अलग अकाउंट्स में पैसे मंगाए गए हैं।

चायल में आकाशीय बिजली की चपेट में आने से युवक की मौत

मवेशियों को जंगल के चराते समय हुई घटना, घर मे कोहराम

अखंड भारत संदेश

चायल,कौशाम्बी। तहसील क्षेत्र के शाहपुर पेरवा गांव में शुक्रवार की दोपहर हुई तेज बारिश के दौरान आकाशीय बिजली की चपेट में आने से एक युवक की मौत हो गई। युवक अपने मवेशियों को लेकर खेतों में चराने के लिए गया था। तभी वह हादसे की चपेट में आ गया। युवक की मौत से परिजनों में कोहराम मचा है। सूचना पर पहुंची राजस्व और पुलिस की टीम ने युवक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। पिपरी कोतवाली के शाहपुर पेरवा निवासी बैजनाथ पाल पुत्र रामदास भेंड़पालन कर परिवार का भरण पोषण करते हैं। उनका पांचवे नम्बर का बेटा दीपचंद्र पाल (20) भी पढ़ाई के साथ साथ भेंड़पालन मे पिता का हाँथ बंटाता था। शुक्रवार की सुबह बैजनाथ अपनी बीमार बेटी का इलाज कराने के लिए प्रयागराज गए हुए थे। उनका बेटा दीपचंद्र छोटे भाई सौरभ के साथ मवेशियों को लेकर चराने के लिए खेतों की ओर गया था। दोपहर करीब तीन बजे हुई तेज बारिश के दौरान वह बचने के लिए पेड़ के नीचे खड़ा हो गया। तभी उसके ऊपर आकाशीय बिजली गिर गई। इससे दीपचंद्र की मौके पर मौत हो गई। मौके पर रहे छोटे भाई सौरभ ने घटना की जानकारी परिजनों को दिया। घटना को लेकर परिजनों में कोहराम मचा है। सूचना पर पहुंची राजस्व व पुलिस टीम ने पंचनामा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। एसडीएम चायल ज्योति मौर्या ने बताया कि मृतक के परिजनों को मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष से पीड़ित परिवार को राहत राशि प्रदान की जाएगी।

सलमान खुर्शीद, अनुप्रिया पटेल सहित कई नेता आज प्रयागराज में

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। विधान सभा चुनाव होने को भले ही अभी कई महीने बाकी हों लेकिन सियासी सरगर्मियां तेज हो गई हैं। शनिवार को शहर में भी ऐसा ही महौल बना रहेगा। बीजेपी से लेकर कांग्रेस सहित तमाम छोटी पार्टियों के कद्दावर नेता शहर में हैं और वे अपनी चुनावी रणनीतियों को ही साधने के लिए सियासी गतिविधियों में हिस्सा लेंगे।कांग्रेस विधान सभा चुनाव के मद्देनजर अपना घोषणा पत्र तैयार कराने में जुटी है। इसके लिए उसने घोषणा पत्र निर्माण कमेटी का गठन किया है। अचानक इस कमेटी का कार्यक्रम प्रयागराज में तय कर दिया गया। इसमें पूर्व विदेशमंत्री सलमान खुर्शीद, पीएल पुनिया, राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत सहित कई बड़े नेता आज यहां शहर में होंगे। वे यहां न केवल

पार्टी के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक करेंगे बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों से भी मुलाकात कर आगामी चुनावी रणनीतियों को तय करेंगे। सलमान खुर्शीद बमरौली एयरपोर्ट पर उतरने के बाद सीधे दारागंज घाट पर जाएंगे। वहां वह निषादों से, पंडों से और सागर पेशा से जुड़े लोगों से बात करेंगे।

इसके बाद उनकी वार्ता समाज के दूसरे तबकों जैसे वकील, किसानों, व्यापारियों, ट्रेड यूनियन नेताओं के साथ होगी। इस बातचीत का मकसद ही जनता की नब्ज टटोलना है और उसी के आधार पर अपनी सियासी समीकरण को आगे बढ़ाना है। उधर, प्रदेश के प्रमुख पार्टी बसपा ने भी शनिवार को पार्टी के नेता सतीश मिश्रा की पत्नी कल्पना मिश्रा की अगुवाई में प्रबुद्ध सम्मेलन का आयोजन किया है।

इसका मकसद सवर्णों के साथ समाज के पढ़े-लिखे तबकों को साथ लाना है, जिससे कि बसपा नई सियासी समीकरण बना सके। उधर, आप सांसद संजय सिंह भी शनिवार को शहर में हैं। वे अपनी सभा करेली में अपनी सभा कर बहुत से लोगों को सदस्यता भी दिलाएंगे। अपना दल एस की अनुप्रिया भी शहर में ही है। हालांकि, उनका कोई बड़ा कार्यक्रम नहीं है लेकिन पार्टी नेताओं के मुताबिक वह सर्किट हाउस में कार्यकर्ताओं के साथ आगामी चुनावी रणनीति पर चर्चा करेंगी। इसके अलावा विकासशील इंसान पार्टी के मुखिया और बिहार सरकार मत्स्य एवं पशुपालन मंत्री मुकेश साहनी भी होंगे। उनका आगामी चुनावों के मद्देनजर निषाद समाज के लोगों को साधेंगे। इन सबके इतर केंद्र और राज्य की सत्ताधारी पार्टी के कई कद्दावर नेताओं का जमावड़ा है। वे भी अपने-अपने तरीके से चुनावी रूझान को समझने के लिए आए हैं। इससे शनिवार का दिन सियासी समीकरणों के बीच बीतेगा।

पत्नी और साली के ऊपर तेजाब फेंकने के आरोपी को दस साल की सजा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पत्नी और साली पर तेजाब फेंकने के जुर्म में जिला अदालत ने जमालुद्दीन उर्फ राजू को 10 साल की कैद व दस हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। अभियोजन की ओर से एडीजीसी सुशील कुमार वैश्य ने सात गवाह पेश किए। दोष सिद्ध होने पर अपर जिला जज डॉ. दिनेश चंद्र शुक्ल ने शुक्रवार को सजा सुनाई। कोर्ट ने कहा कि आरोपित से जुर्माने की रकम वसूल कर 50-50 हजार रुपये दोनों पीड़िता को प्रतिकर के रूप में भी दिया जाए।पीड़िता की मां ने 19 मई 2014 में थाना मऊआइमा में मुकदमा दर्ज कराया था कि उसकी दो पुत्रियां इंटर कॉलेज में उर्दू की परीक्षा देने जा रही थीं। बड़ी लड़की की शादी आरोपित के साथ 10 वर्ष पूर्व में हुई थी। दहेज की मांग को लेकर प्रताड़ित करता था इसलिए बेटी मायके में ही रहती थी। तलाक का मुकदमा भी दायर किया था। पहले से घात लगाए बैठे आरोपित ने पीड़िता व उसकी बहन पर तेजाब फेंक दिया था।

ममता बनर्जी पर इनामः बीजेपी नेता को पकड़ने अलीगढ़ आई बंगाल पुलिस टीम को पीटा, सीओ से भिड़े सांसद-विधायक

अलीगढ़ (एजेंसी)। ममता बनर्जी का सिर कलम करने पर 11 लाख रुपये इनाम देने का बयान देने वाले भाजपा नेता को गिरफ्तार करने पहुंची बंगाल पुलिस को दुश्वारियों का सामना करना पड़ा। अलीगढ़ आई पुलिस टीम को शुक्रवार शाम लोगों ने कमरा बंद कर पिटाई की। सूचना पर भाजपा सांसद-विधायक और समर्थक मौके पर पहुंच गए। सांसद-विधायक भी स्थानीय पुलिस की तरफ से पहुंचे सीओ से भिड़ गए। बाद में स्थानीय पुलिस बंगाल पुलिस टीम को समर्थकों से बचाते हुए थाने ले गई। घटना को लेकर भाजपा समर्थकों ने काफी देर तक हंगामा किया।

भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा के पूर्व मंडल अध्यक्ष योगेश वार्ष्णेय ने 2017 में बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का सिर कलम करने पर 11 लाख रुपये इनाम देने का बयान दिया था। मामले में योगेश के खिलाफ कोलकाता में तीन मुकदमे दर्ज किये गये थे। योगेश की गिरफ्तारी को टीम पूर्व में कई बार अलीगढ़ आ चुकी है। लेकिन योगेश एक बार भी पुलिस गिरफ्त में नहीं आया। शुक्रवार को फिर सेः बंगाल पुलिस स्थानीय गांधीपार्क पुलिस को लेकर उनके घर पहुंची। जैसे ही टीम उसके घर पहुंची देखते ही देखते समर्थकों की भीड़ जमा

हो गई। भारी भीड़ के बीच भाजपा समर्थकों ने बंगाल पुलिस टीम की कमरे में बंद कर जमकर धुनाई की। सूचना पर सांसद सतीश गौतम, कोल विधायक अनिल पाराशर और शहर विधायक संजीव राजा मौके पर पहुंच गए। बंगाल पुलिस का बचाव करते हुए गांधीपार्क पुलिस उनको अपने साथ थाने ले गई। घटना के बाद मौके पर सांसद व विधायक समर्थकों के साथ हंगामा करते रहे।

अलीगढ़। भाजपा समर्थकों को पुलिस से लेकर मीडिया तक किसी को घर में नहीं घुसने दिया। सभी को घर से बाहर रखा। हालांकि बाद में स्थानीय पुलिस मकान में घुसी थी। सांसद सतीश गौतम ने सीओ मोहसिन खान व इंस्पेक्टर गांधीपार्क वंशीधर पांडेय से सवाल-जवाब किया।

राहुल गांधी के वैष्णो माता मंदिर में दर्शन के बाद भाजपा के युवा कार्यकर्ताओं ने रास्ते पर गंगाजल छिड़का

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल ही में कांग्रेस सांसद राहुल गांधी वैष्णो माता मंदिर में दर्शन के लिए जम्मू कश्मीर गए थे। राहुल गांधी द्वारा माता का दर्शन किये जाने के बाद अब भाजपा कार्यकर्ताओं ने यात्रा के रास्ते पर गंगाजल छिड़का है। जम्मू और कश्मीर भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा के सदस्यों ने यात्रा ट्रैक पर गंगाजल छिड़का है। रास्ते के शुद्धिकरण की इस प्रक्रिया का नेतृत्व जम्मू और कश्मीर बीजेपी युवा मोर्चा के अध्यक्ष अरूण जामवाल ने किया।

जम्मू-कश्मीरः आतंकियों का कुलगाम में डबल अटैक, पुलिसकर्मी के बाद बिहार के मजदूर की हत्या की

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में सुरक्षाबलों की चोट से बौखलाए आतंकवादियों ने शुक्रवार को कुलगाम में दो कायराना हमले किए। एक तरफ जहां पुलिसकर्मी को गोली मारकर शहीद कर दिया तो दूसरी तरफ बिहार के एक मजदूर की भी जान ले ली। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि शाम करीब 6:05 बजे आतंकियों ने पुलिसकर्मियों पर फायरिंग की। गोली लगने से घायल बंटू शर्मा को अस्पताल भेजा गया, लेकिन रास्ते में ही उन्होंने दम तोड़ दिया। सुरक्षाकर्मी हमलावर आतंकी की तलाश में जुटे थे तभी रात करीब 8:50 पर एक और हमले की खबर आई। आतंकियों ने इस बार गैर स्थानीय मजदूर को निशाना बनाया। मृतक मजदूर की पहचान शंकर कुमार चौधरी (35) के रूप में हुई है। वह बिहार के कटिहार जिले के प्रीत नगर के निवासी थे और कुलगाम के डीएच पोरा इलाके के निहामा में स्थित एक ईंट भट्टे में काम करते थे। अधिकारियों ने बताया कि हमलावरों को पकड़ने के लिए तलाशी अभियान चलाया जा रहा है। जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक पार्टियों ने शुक्रवार को कुलगाम जिले में आतंकवादियों द्वारा एक पुलिसकर्मी की हत्या किये जाने की निंदा की। नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने एक ट्वीट में कहा, "मैं दक्षिण कश्मीर के कुलगाम में आतंकवादी हमले की निंदा करता हूं।

जीएसटी काउंसिल के फैसलेः जिंदगी बचाने वाली वाली दवाओं पर जीएसटी में छूट, पेट्रोल-डीजल पर बड़ा झटका

नई दिल्ली (एजेंसी)। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अगुवाई में जीएसटी काउंसिल की 45वीं बैठक के नतीजे आ गए हैं। बैठक में पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के दायरे में लाने की उम्मीद थी। हालांकि, केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि जीएसटी काउंसिल को लगा कि यह पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के तहत लाने का समय नहीं है। उन्होंने कहा कि अधिकतर राज्य इस विचार से सहमत हैं। मतलब ये कि पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बड़ी कटौती का इंतजार कर रहे लोगों के लिए एक झटका है। हालांकि, तेल विपणन कंपनियों को डीजल में मिलाने के लिए आपूर्ति की जाने वाली बायोडीजल पर जीएसटी दर को 12ज़् से घटाकर 5ज़् कर दिया गया है। अब देखना अहम होगा कि तेल कंपनियां क्या ग्राहकों को इस छूट का फायदा देती हैं कि नहीं। आपको बता दें कि पेट्रोल और डीजल की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर हैं। इस वजह से आम लोगों की जेब पर बोझ बढ़ रहा है। यही वजह है कि पेट्रोल और डीजल के जीएसटी दायरे में लाने की उम्मीद की जा रही थी। केरल, महाराष्ट्र का विरोधः इससे पहले राज्यों की ओर से पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के दायरे में लाने के प्रस्ताव का विरोध किया गया। केरल के वित्त

मंत्री के एन बालागोपाल ने कहा कि अगर पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के दायरे में लाने को लेकर कोई कदम उठाया जाता है, राज्य उसका पुरजोर विरोध करेगा। बालागोपाल के मुताबिक इस कदम से राज्य के राजस्व संग्रह पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। वहीं, महाराष्ट्र ने भी ऐसे किसी प्रस्ताव के विरोध का ऐलान किया है।

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार, जो वित्त विभाग भी संभालते हैं, ने इस कदम का विरोध करते हुए कहा कि मौजूदा कर प्रणाली को उन राज्यों की वित्तीय स्वायत्तता बनाए रखने के लिए नहीं बदला जाना चाहिए जो पहले से ही कोविड -19 महामारी के कारण वित्तीय संकट में हैं। उन्होंने मांग की है कि केंद्र को ईंधन पर लगाए गए अपने करों को कम करना चाहिए जिससे लोगों को कीमतों में बढ़ोतरी से राहत मिल सके।कोरोना दवाओं पर छूट बरकरारः मीडिया से बात करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि कोरोना से जुड़ी दवाओं पर जीएसटी छूट जारी रहेगी। ये छूट 31 दिसंबर 2021 तक के लिए है। वहीं, जीवन-रक्षक दवाओं पर भी जीएसटी छूट का फैसला लिया गया है। वित्त मंत्री ने बताया कि ज़ोल्गेन्स्मा और विल्टेप्सो दवाओं पर जीएसटी छूट दी गई है। ये दोनों बेहद जरूरी दवाएं हैं जिनकी कीमत करीब 16 करोड़ रुपए है। इसलिए जीएसटी काउंसिल ने इन 2 दवाओं के लिए जीएसटी से छूट देने का फैसला किया है। वहीं, मेडिकल इक्विपमेंट्स पर जीएसटी छूट नहीं दी गई है। विशेष विकलांग व्यक्तियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले वाहनों के लिए रेट्रो फिटमेंट किट पर जीएसटी दरों को भी घटाकर 5ज़् कर दिया गया है।

खबर संक्षेप

माण्डा पेयजल समूह की मशीन देखने नही आये अधिकारी आपूर्ति रही ठप, पिछल्ले चार दिन से है मशीन खराब

माण्डा। मांडा खास क्षेत्र में पेयजल समूह की मशीन चौथे दिन भी बनने हेतु शहर नहीं गयी, जिससे पेयजल की आपूर्ति चार दिनों से ठप होने से उपभोक्ताओं को बूंद बूंद पानी हेतु परेशानी उठानी पड़ रही है. शनिवार रात से ही मांडा राजमहल के समीप स्थित मांडाखास पेयजल समूह की मशीन खराब है. पिछले चार दिन से मशीन खराब होने की जानकारी के बावजूद शहर में बैठे अधिकारियों पर कोई असर नहीं पड़ रहा है। मशीन खराब होने और पेयजल आपूर्ति बाधित होने की जानकारी जिले के अधिकारियों को रविवार प्रातः ही दे दी गई थी. पेयजल आपूर्ति ठप होने से इस समूह से संबंधित लगभग पांच सौ उपभोक्ताओं को पेयजल हेतु काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। संबंधित उपभोक्ताओं ने विभागीय अधिकारियों और जिला प्रशासन से अविलम्ब ध्वस्त मशीन ठीक कराने की मांग की है।

एसडीएम एवं क्रमिक अनशन रत कांग्रेस नेताओं की वार्ता विफल

● आठवें दिन भी अनशन जारी, एसडीएम से लिखित आश्वासन पर ही अनशन होगा खत्म पर अड़े कांग्रेसी

कांग्रेस नेताओं से वार्ता करते उपजिलाधिकारी व कांग्रेस यूथ के प्रदेश महासचिव जितेन्द्र की अगुवाई में चल रहे अनशन के आठवें दिन अनशत रत कांग्रेसी

अखंड भारत संदेस

करछना। यूथ कांग्रेस के प्रदेश महासचिव जितेंद्र तिवारी की अगुवाई में दर्जनों से अधिक कांग्रेसियों द्वारा करछना सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के सामने अपनी पांच सूत्रीय मांगों के पूरा न होने पर आज गुरूवर को बारिश के बीच आठवें दिन भी क्रमिक अनशन पर बैठे रहे ! जिसके अनुसार बीस दिन पूर्व उपजिलाधिकारी करछना विनोद कुमार पांडेय को ज्ञापन सौंप कर बाढ़ प्रभावित गांवों के किसानों को फसल की नुकसानी का मुआवजा दिलाने, बेघर हुए लोगों को आवास मुहैया कराने, न्याय पंचायत स्तर पर गौशाला बनवाने, अघोषित बिजली कटौती बंद हो व बिजली के जर्जर तार बदले जाए, अरैल में सड़क निर्माण व लाइट की व्यवस्था के साथ बेंदो पनासा मार्ग व थरी गांव रोड की मरम्मत कार्य की मांग की है! जिसके पूरा ना होने तक अनशनरत रहने की बात कहा है। वार्ता के दौरान एसडीएम ने कहा कि इन समस्याओं से सम्बन्धित अधिकारियों से वार्ता कर आगे वार्ता की जायेगी। जिस पर कांग्रेसी नहीं माने और अनशन पूर्ववत रहा। इस मौके पर वरिष्ठ कांग्रेसी नेता रंगराज सिंह, विकास सोनी, दिनेश सोनी, अरुण कुशवाहा, बड़कऊ यादव , आयुष मिश्रा, बनटू यादव , शहजाद उल हक, सोनू सिंह सुरेश पटेल , नागेश पाण्डेय पीआर भट्टाचार्य, पवनेश सोनी, प्रकाश चंद्र पाण्डेय आदि पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

खड़ी ट्रक में ट्रेलर की टक्कर से खलासी की मौके मौत

सहसों। सरायइनायत थाना क्षेत्र के बगई खुर्द गांव के सामने हंड़िया-कोखराज नेशनल हाईवे बाईपास पर खड़ी ट्रक में शुक्रवार को भोर में टेलर ने पीछे से टक्कर मार दिया। दोनों गाड़ियों की टक्कर में ट्रेलर सवार खलासी की मौत हो गई। चालक की हालत गंभीर बनी हुई है। मिली जानकारी के अनुसार आजमगढ़ के दिलदार गंज थाना अंतर्गत पथनी गांव निवासी ट्रेलर चालक इंद्रेश यादव 27 वर्ष अपने परिवार के ही भतीजे खलासी विकास यादव 20 वर्ष पुत्र लालचंद्र के साथ केमिकल लादकर बनारस की तरफ जा रहा था। बगई खुर्द गांव के सामने आलू लदा ट्रक का पहिया पंचर हो गया था। जिसे वहीं पर खड़ी करके ट्रक चालक पंचर रहा था। कि अचानक ट्रेलर गाड़ी अनियंत्रित होकर ट्रक में पीछे से जोरदार टक्कर मार दिया। भिड़ंत जोरदार होने के कारण चालक और खलासी दोनों गाड़ी में फंस गए। सूचना पाकर मौके पर पहुंची सहसों पुलिस ने बड़ी मशक्कत के बाद दोनों को बाहर निकाला। टक्कर में ट्रेलर खलासी विकास यादव की मौके पर ही मौत हो गई। चालक इंद्रेश यादव को गंभीर हालत में स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय प्रयागराज में भर्ती कराया गया है। हालांकि इसकी जानकारी पुलिस ने ड्राइवर व खलासी के परिजनों को दे दी है।

न्यूज झरोखा

जंघई की कांस्टेबल बेटी को उत्कृष्ट कार्य हेतु एसपी एवं डीआईजी ने किया सम्मानित

जंघई। क्षेत्र के असवां जंघई गाँव के निवासी रजनीश मिश्रा एवं माया मिश्रा की बेटी एवं अनूप मिश्रा की बहन कांस्टेबल नीतू मिश्रा को उत्कृष्ट कार्य हेतु डीआईजी गोरखपुर जे.रविंद्र गौड़ एवं एसपी देवरिया डा. श्रीपति मिश्र ने प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। नीतू को देवरिया जनपद के रवामपार थाने में सर्वोत्तम बीट पुलिस आफिसर चुने जाने पर प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है ।नीतू की इस उपलब्धि पर जंघई क्षेत्र में हर्ष की लहर है सभी ने नीतू को बधाई देते हुए ईश्वर से प्रार्थना किया है कि नीतू मिश्रा निरंतर प्रगति करें।

अवैध शराब सहित एक गिरफ्तार

लालापुर। लालापुर पुलिस ने शुक्रवार के दिन लालापुर क्षेत्र से शराब तस्करी करने वाले एक नैनी इलाके के तस्कर को पकड़ा लिए उसके पास से 20 लीटर अवैध देशी शराब बरामद की है । पकड़े गए आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर पुलिस ने जेल भेज दिया है ।लालापुर एसओ मनीष कुमार त्रिपाठी को मुखबिर से सूचना मिली कि क्षेत्र से कुछ बाहरी अवैध शराब के तस्कर शराब लेकर कहीं निकलने की फिराक में है । सूचना मिलते ही एसओ ने दरोगा शिवप्रताप सिंह को टीम के साथ पकड़ने के लिए भेजा । तब तक कई तस्कर शराब लेकर भाग निकले। एक तस्कर पुलिस के हाथ लगा जिसके पास से 20 लीटर अवैध देशी शराब बरामद हुई । पकड़े गए आरोपी का नाम पुलिस ने आकाश भारतीय निवासी चकमुंडी,थाना नैनी बताया है । अभियुक्त के खिलाफ केस दर्ज कर जेल भेज दिया गया ।

वर्कर्स यूनियन के केन्द्रीय अध्यक्ष कामरेड एस.पी.एस. यादव पंचतत्व में विलीन

प्रयागराज। नार्थ सेन्ट्रल रेलवे वर्कर्स यूनियन के केन्द्रीय अध्यक्ष एवं इण्डियन रेलवे इम्प्लाइज फेडरेशन के उपाध्यक्ष कामरेड सुरेन्द्र पाल सिंह यादव का कल सोलह सितम्बर को लगभग शाम चार बजे ह्रदयगति रुक जाने से देहान्त हो गया। उक्त जानकारी देते नार्थ सेन्ट्रल रेलवे वर्कर्स यूनियन के सहायक महामंत्री सैय्यद इरफात अली ने बताया कि आज पहुँच मुक्तिधाम झाँसी में सुरेन्द्र यादव का दाह-संस्कार सम्पन्न हुआ जिसमे वर्कर्स यूनियन के महामंत्री कामरेड मनोज पाण्डेय, बृज किशोर उपाध्याय, आलोक वर्मा, सैय्यद इरफात अली, अरविन्द राय, सुबोध सिंह,राकेश शर्मा, हरिवंश पाण्डेय, अम्बरीष त्रिपाठी, दिनेश गुप्ता, नरेश मिश्रा, मनोहर सिंह के अलावा सैकड़ो कर्मचारी व परिवार जन मौजूद रहे उत्तर मध्य रेलवे झाँसी के विधुत विभाग में वरिष्ठ खण्ड अभियन्ता /निर्माण के पद पर कार्यरत कॉमरेड एस.पी.एस. यादव वर्कर्स यूनियन के संस्थापना के समय से ही संगठन के अध्यक्ष रहे ।

कबरा बसही व पुरैनी हासिमपुर में वैक्सीनेशन कैम्प में दिखा उत्साह

करछना। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना की वैक्सीनेशन टीम नें करछना के बसही, कबरा, एवं पुरैनी हासिमपुर में वैक्सीनेशन कैम्प का आयोजन किया गया, जिसमें बडी संख्या में महिलाओं सहित युवाओं में टीकाकरण कराने के लिए भीड़ के साथ उत्साह दिखा । कबरा में वैक्सीनेशन टीम नें 385 , लोगों का वैक्सीनेशन किया ।इस कार्य में गांव के प्रधान प्रतिनिधि चंद प्रकाश तिवारी व स्वास्थ टीम का योगदान सराहनीय रहा है । इसी क्रम में पुरैनी हासिमपुर में वैक्सीनेशन टीम नें 400, लोगों का वैक्सीनेशन किया और प्रधान प्रतिनिधि सुरेश पाण्डेय ने व गाँव के कयी गणमान्य लोगों ने सहयोग में योगदान सराहनीय किया। बसही में कोविड वैक्सीनेशन को लेकर जनता में बहुत ज्यादा उत्साह दिखा बसही में स्वास्थ्य टीम द्वारा आयोजित कोविड वैक्सीनेशन में आज लक्ष्य 400 पूरा हो गया' वैक्सीनेशन को लेकर पब्लिक में काफी उत्साह दिखा । वैक्सीनशन में ग्राम पंचायत बसही के युवाओं एवम अभिलाशा दीक्षित ,मधुबाला ,विदयोत्मा सिंह योगदान सराहनीय रहा ।प्रधान बसही ने योगदान दिया साथ ही सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना अधिक्षक डॉक्टर नवीन गिरी का विशेष योगदान पर गांव के लोगो ने आभार व्यक्त किया ।

ग्राम सभा सुभाष में लगा कोविड वैक्सीन कैंप

कोरांव। मेजा ब्लाक अंतर्गत ग्राम सभा सुभाष में रविंद्र जैसल प्रधान एवम वरिष्ठ सपा नेता के प्रयास से कोविड वैक्सीन टीकाकरण का का कैंप लगा जिसमे ग्रामीणों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और हर उम्र के लोगो ने जागरूकता दिखाते हुए कोरोना वैक्सीन का टीकाकरण कराया। इस मौके पर सपा नेता ने कहा कि संभावित कोविड की तीसरी लहर को देखते हुए आमजन को चाहिए कि वह स्वयं ही शासन द्वारा चलाएं जा रहे हैं कोरोना टीकाकरण का भयमुक्त होकर लाभ उठाएं और अपने आसपास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करें क्योंकि सुरक्षा ही बचाव है। जैसा कि पिछले दिनों देखा गया था कि लोगों की लापरवाही के कारण देश की जनता ने वह दिन देखा जो कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था और अगर हम सब अब भी उस घटना से सबक नहीं लिए उसके जिम्मेदार हम आप स्वयं होंगे।जहां ग्राम वासियों ने ग्राम प्रधान के साथ-साथ वैक्सीन लगाने में नियुक्त कर्मचारी डॉक्टर संध्या पांडे अर्चना पांडे एवं अनीता सिंह आशा कार्यकत्री विमला सिंह पटेल आंगनबाड़ी कार्यकत्री कल्याणी देवी धर्मराज पटेल मदन सिंह पटेल विद्या कांत कृपाशंकर शिक्षक नंदलाल शिक्षामित्र का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर ग्राम सभा निवासी रवि तिवारी गेंदालाल पांडे राम भवन पाल अमर कुशवाहा रामजी सिंह पटेल मुखिया राम सागर पांडे आदि लोग उपस्थित रहे।

बारिश से जलमग्न गांव रस्तीपुर का जनजीवन अस्त व्यस्त चारों ओर पानी ही पानी ग्रामीणों को उठानी पड़ रही भारी परेशानी

बारिश से जलमग्न रस्तीपुर गांव जनजीवन अस्त व्यस्त

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर। क्षेत्र के रस्तीपुर गाँव में लगातार हो रही बारिश के कारण लोगों के घरों में बरसात का पानी भर गया है आवागमन बाधित है। लोग दैनिक सामान हेतु परेशान है घुटने तक गाँव में पानी जमा है बरसात का पानी जमा होने के कारण बिमारी फैलने का खतरा बना हुआ है।प्रशासन या प्रधान से कोई मदद नहीं मिल रही जिससे आम लोगों मे हैरानी परेशानी है। समाजसेवी आशुतोष तिवारी ने बताया कि लगातार हो रही बारिश के कारण आम जनजीवन ठप सा हो गया है रोजगार बंद हो गया है लोगों का कार्य बारिश में प्रभावित हो रहा है सब परेशान है लेकिन आम लोगों की मदद हेतु प्रशासन या कोई समाजसेवी नजर नहीं आ रहा है।

बरियांवा में बारिश से कच्चा खपरैल गिरा गृहस्थी नष्ट

प्रतापपुर।क्षेत्र के मझियारी बरियांवा गाँव में बारिश के कारण श्याम दुबे पुत्र स्व. राधेश्याम दुबे का कच्चा खपरैल का घर गिर गया है।जिसमें उनकी समस्त गृहस्थी नष्ट हो गई है रहने को घर नहीं है प्रधान एवं लेखपाल को सूचित करते हुए सरकारी आवास की मांग किया है।

अंतर्जनपदीय शातिर जालसाज को पुलिस ने किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

नैनी। कोतवाली पुलिस व एसओजी यमुनापार की गठित टीम ने शुक्रवार को अंतर्जनपदीय जालसाज को गिरफ्तार कर सलाखों के पीछे भेज दिए। जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली इंस्पेक्टर अनिल सिंह व एसओजी यमुनापार उपनिरीक्षक एवं प्रभारी संतोष कुमार सिंह को शुक्रवार को जरिए मुखबिर से सूचना मिली कि वांछित शातिर अंतर्जनपदीय जालसाज और रंगदारी की वसूली करने वाला आरोपी नैनी कोतवाली क्षेत्र के छिवकी के समीप शंकर दिन मंदिर के निकट मौजूद है। सटीक सूचना मिलते ही इंस्पेक्टर अनिल कुमार सिंह और एसओजी यमुनापार प्रभारी संतोष कुमार सिंह के नेतृत्व में एसएसआई अजय कुमार सिंह, उपनिरीक्षक संतोष सिंह, जगदीश कुमार, हेड कांस्टेबल तनवीर खान, मोहित राय, जसवंत राठौर, स्वतंत्र राठौर, कांस्टेबल अंगद गिरि, स्वतंत्र यादव, भानु सिंह व मुकेश कुमार उक्त स्थान पर पहुंचे और घेराबंदी करते हुए शातिर जालसाज को गिरफ्तार कर नैनी कोतवाली उठा लाए। पुलिस के मुताबिक पकड़ा गया आरोपी जौनपुर के मुगरा बादशाहपुर थाना क्षेत्र स्थित पलई का पूरा गांव निवासी दीपक तिवारी पुत्र देवी शंकर तिवारी है। इसके खिलाफ बीते कुछ दिन पूर्व नैनी कोतवाली में मुकदमा अपराध संख्या 491/21 धारा 143, 448, 380 व 411 के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया था । तभी वह पुलिस की पकड़ से दूर चल रहा था। हालांकि गठित टीम ने उक्त आरोपी को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिए। पकड़े गए आरोपी के कब्जे से उक्त मुकदमें से संबंधित साइकिल व दो हजार नकदी बरामद किया गया है। पुलिस के मुताबिक शातिर जालसाज के खिलाफ जौनपुर, प्रयागराज जिले के उतरा?व, सोरांव, कर्नलगंज नैनी, करछना और झूंसी थाने में विभिन्न धाराओं में मुकदमा पंजीकृत है।

गिरफ्त में दो शातिर,नशीला पदार्थ चोरी के उपकरण व नकदी बरामद

चोरी के बाद बिखरा पड़ा सामान

एक ही रात में अज्ञात चोरों ने 4 दुकानों का ताला तोड़कर खंगाला

उतरांव। उतरांव थाना क्षेत्र के को खोदायपुर बाबुरिहन में बीती रात अज्ञात चोरों ने चार दुकानों का ताला तोड़कर हजारों रुपए समेत सामान उठा ले गए। वही भुक्तभोगियों ने अज्ञात चोरों के खिलाफ लिखित प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। खोदायपुर बाबूरिहन में बीती रात अज्ञात चोरों ने ताला तोड़कर 11000 नगद तथा खाद्य पदार्थ उठा ले गए। दुकान के बगल शू हाउस में ?5000 नगद तथा सामान व सैलून में कुछ नगदी तथा सामान अज्ञात चोरों ने उड़ा दिए।रात में ही उक्त गांव का एक व्यक्ति ने दवा लेने के लिए आया तो ताला टूटा देखकर दंग रह गया। वहीं पास पड़ोस को सारी का घटना की जानकारी दी तो सूचना पर 112 नंबर पुलिस मौके पर पहुची।सूचना पर पहुची पुलिस मामले की जांच में जुट गई। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंचे दुकानदार महेंद्र कुमार यादव रमेश,जितेंद्र व मोहम्मद अनीस ने थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की है। वही एक ही रात में चार दुकानों में चोरों द्वारा ताला तोड़कर चोरी की घटना से पूरे क्षेत्र में हड़कंप मचा हुआ है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है । एक ही रात में चार दुकानों में चोरी की घटना पुलिस के लिए बड़ी चुनौती है। अब देखना यह है कि पुलिस इस घटना का खुलासा कितना जल्द करेगी।

अखंड भारत संदेश

कई मुकदमों में चल रहे थे वांछित, चेकिंग के दौरान पकड़े गए

पुलिस की गिरफ्त में दो शातिर व बरामद सामान

शिव शंकर निवासीः म0 नं0 169 कच्ची सड़क समइया माता मंदिर के सामने दारागंज को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 300 ग्राम नशीला पाउडर एलप्राजोलम व मुकदमें से सम्बन्धित चोरी के सम्पत्ति के विक्री किए गए 18300/- रुपए नकदी और चोरी के 04 अदद टच स्क्रीन एण्ड्रोइड मोबाइल भिन्न-भिन्न कम्पनियो के जिन्हें रेलवे स्टेशन छिवकी के प्लेटफार्म नंबर 02/03 के पूर्वी छोर पर बने जं0 बोर्ड के पास से बहद थाना जीआरपी प्रयागराज से गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त हुई।

नैनी। आला अफसरों के निदेशों पर त्योहारों के दृष्टिगत चलाये जा रहे संदिग्ध व्यक्तियों/वस्तुओं की चेकिंग व तलाश वांछित अपराधीगण के अभियान के अन्तर्गत क्षेत्राधिकारी रेलवे प्रयागराज अमित कुमार श्रीवास्तव के पर्यवेक्षण मे प्रभारी निरीक्षक जीआरपी के कुशल नेतृत्व मे गठित टीम के द्वारा जीआरपी प्रयागराज एवं आरपीएफ छिवकी व क्यूआरटी टीम द्वारा गुरुवार को समय चेकिंग के दौरान दो शातिर किस्म के अपराधी जिनका नामः शाहिद पुत्र मुस्तकीम निवासी बलिया के रेवती थाना व हाल पता, मीरा गली मोहल्ला नाटे यादव का किराए का मकान थाना दातागंज और सागर बाल्मिकी पुत्र

नशीला पदार्थ के जरिए यात्रियों को बनाते थे निशाना

नैनी। अभियुक्तगणों ने पूछताछ में बताया कि हम लोग द्वारा चलती ट्रेनो व प्लेटफार्म मे यात्रियों के खाने-पीने की वस्तुओ मे नशीला पाउडर मिलाकर सामान/मोबाइल आदि चोरी करके अगले स्टेशन पर उतर जाते हैं।

गिरफ्तार करने वाली टीम

एसआई राकेश कुमार राय- चौकी प्रभारी जीआरपी छिवकी, अजीत कुमार शुक्ला- थाना जीआरपी प्रयागराज, हेड कांस्टेबल अनिल कुमार गुप्ता, विनोद कुमार यादव, अजमल खान, नदीम, रियाजुद्दीन, एसआई मनोहर लाल मौर्या- आरपीएफ पोस्ट छिवकी, फूलचंद भारती रहे।

आत्मदाह की चेतावनी पर राजस्व टीम ने की पैमाइश

● छह विश्वा के बैनामा की जगह तीन विश्वा पर दिलाया कब्जा, तनाव की स्थिति बरकरार

अखंड भारत संदेश

करछना। तहसील प्रशासन की लचर न्याय व्यवस्था से आजिज एक पीडित महिला आत्म दाह करने को मजबूर हैं। अनगिनत शिकायतों के बावजूद महिला ने आजिज आकर एसएसपी प्रयागराज से अपनी पीडा बताते हुए न्याय की फरियाद की हैं ।करछना तहसील के बरांव (नौवां) गांव की रहने वाली महिला ललिता देवी पत्नी दुर्गा प्रसाद ने गांव स्थित बरांव में सन् 2015 ,में आराजी संख्या 1075 ,छह विष्वा जमीन का बैनामा कराया था जिसका राजस्व अभिलेखों में नाम अंकित है, उक्त पर महिला ने मकान बनवा कर अपनें बच्चो के साथ रहती रहीं हैं, उक्त जमीन और उस पर बनें मकान को गांव का एक दंबग किस्म का करछना थाने में तैनात चंद्रमा प्रसाद चौकीदार ने जबरन कब्जा कर लिया है ।पीडित महिला ने वर्षों से दूसरे के मकान में किराए पर आधा दर्जन से अधिक परिवार के साथ रह रही हैं । महिला ने एसएसपी से शिकायत में बताया कि तहसील प्रशासन की जांच रिपोर्ट में उक्त चौकीदार को जबरन कब्जा करने की रिपोर्ट में दर्शाया गया है कि चंद्रमा प्रसाद के कब्जे वाली जमीन व मकान की भूमि राजस्व अभिलेखों में नाम अंकित नहीं है, और उक्त जमीन जबरन कब्जा कर लिया है । कि रिपोर्ट लेखपाल ने दिया है । उसके बावजूद तहसील प्रशासन पीडित महिला की जमीन और मकान पर से जबरन कब्जा हटवाया नहीं गया है । जिसको लेकर पीडिता नें मंगलवार को एसडीएम करछना ,जिला अधिकारी प्रयागराज, मुख्य मंत्री योगी आदित्य नाथ सिंह को फैक्स भेज कर 15 सितम्बर को तहसील मुख्यालय करछना में आत्म दाह करने की चेतावनी दी थी, जिस शुक्रवार को एसडीएम करछना ने राजस्व कर्मियों की टीम भेज कर पैमाइश की गयी वही पीडिता का आरोप है कि उक्त बैनामा की भूमि छह विष्वा दर्ज हैं लेकिन राजस्व टीम ने मात्र उसे तीन विष्वा पर ही नाप कर पैमाइश की हैं, महिला ने राजस्व कर्मियों को आरोपित करते हुए न्याय की फरियाद की हैं। पैमाइश के दौरान थाना अध्यक्ष करछना राकेश कुमार सिंह, एस आई उदय वीर सिंह यादव सहित महिला पुलिस के अलावा एक दर्जन राजस्व कर्मी मौजूद रहे।

पीड़ित महिला के आत्मदाह चेतावनी पर पैमाइश करने पहुंची राजस्व विभाग की टीम

बाइक व बोलोरो के भिड़ंत में तीन घायल दो शहर रेफर

मांडा। माण्डा क्षेत्र में बरसात के चलते सड़क के गड्ढे में भरे पानी से बचाव के चक्कर में बोलेरो व बाइक के आमने सामने से भिडंत में तीन घायल हुए, जिनमें दो को नाजुक दशा में इलाज हेतु शहर भेजा गया. बोलेरो व बाइक पुलिस के कब्जे में है. मांडा थाना क्षेत्र के प्रयागराज मिजार्पुर राजमार्ग पर घटना गुरुवार प्रातः लगभग दस बजे घटित हुई. मिजार्पुर जनपद के जिगना थाना क्षेत्र के देवरी बजटा गाँव निवासी राजेश कुमार मांझी अपने घर से प्रयागराज जा रहे थे, ज्योंही मांडा थाना क्षेत्र के टिकरी गाँव के सामने प्रयागराज मिजार्पुर राजमार्ग पर पहुंचे, विपरीत दिशा से एक बोलेरो चालक हरि शंकर यादव लेकर बोलेरो मालिक हरि गेंद यादव निवासी सुरवां दलापुर व अमरेश चंद्र पांडेय को लेकर आ रहे थे. मुख्य सड़क पर गड्ढे में बरसाती पानी से बचाव के चक्कर में दोनों वाहनों में भिडंत हो गयी. बाईक सवार दोनों घायलों को दिघिया चौकी पुलिस पहले एक प्राइवेट अस्पताल ले गयी, लेकिन हालत नाजुक होने के कारण उनको इलाज हेतु शहर भेजा गया।

खबर संक्षेप

ब्लाक स्तरीय चार दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ शुभारंभ

सोरांव। शुक्रवार को ब्लॉक संसाधन केंद्र सोरांव में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोरांव के अधीक्षक डॉ विजय कुमार पाठक एवं स्वास्थ शिक्षा अधिकारी विजय प्रकाश मौर्य तथा खंड शिक्षा अधिकारी वरुण मिश्रा की अध्यक्षता में राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत एवं आयुष्मान भारत कार्यक्रम के तहत स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम हेतु ब्लॉक स्तरीय चार दिवसीय अध्यापकों के प्रशिक्षण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें अधीक्षक एवं एच ई ओ के द्वारा कहा गया कि किशोरा वस्था बहुत ही महत्वपूर्ण अवस्था होती है इसी अवस्था में शारीरिक मानसिक विकास होते है ' तथा खंड शिक्षा अधिकारी के द्वारा कहा गया कि यह प्रशिक्षण हम सभी के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है समस्त प्रतिभागी ध्यान पूर्वक सुने सुनकर किशोर किशोरियों को जाकर बताएं ताकि अपना स्वास्थ्य और आने वाले कल के एक अच्छे भावी माता पिता बन पाए इसी दौरान प्रशिक्षण को महत्वपूर्ण रूप से संचालित कर रहे ओम सिंह स्वास्थ्य परामर्शदाता आर के एस के द्वारा समस्त प्रतिभागी अध्यापकों को बताया गया कि किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें शारीरिक मानसिक बदलाव होते हैं जो स्वास्थ्य शारीरिक सामाजिक भावात्मक और आध्यात्मिक आरोग्य की स्थिति को दशार्ता है। विशेष रूप से आयु समूह 10 से 19 वर्ष के लिए जो तेजी से शारीरिक संज्ञानात्मक और मानसिक सामाजिक भावात्मक द्वारा चिन्हित है, किशोरावस्था बचपन और व्यस्कता के बीच का एक परिवर्तन काल है ओम सिंह के द्वारा बताया गया कि स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देना, स्वास्थ्य और यौन रोगों की रोकथाम ,हिंसा एवं शारीरिक चोट के खिलाफ सुरक्षा जागरूकता और कानून इंटरनेट सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देना मूल्य और जिम्मेदार नागरिकता आत्म कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य पारस्परिक संबंध आदि की जानकारी विस्तार पूर्वक दी गई तथा कहा गया कि हर काम का एक सही समय होता है ।

योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र लोगों को अनिवार्य रूप से मिले : केन्द्रीय मंत्री

अखंड भारत संदेश

केंद्रीय मंत्री ने अधिकारियों के साथ ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज से संबंधित योजनाओं की समीक्षा की, दिए आवश्यक निर्देश

समूह की महिलाओं को विभिन्न योजनाओं से जोड़कर उन्हें उपलब्ध कराएं रोजगार : गिरिराज सिंह

केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह अधिकारियों के साथ योजनाओं पर बैठक करते

प्रयागराज। केंद्रीय मंत्री ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज भारत सरकार गिरिराज सिंह सोमवार को सर्किट हाउस के सभागार में अधिकारियों के साथ प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), मनरेगा, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पंचायती राज, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, सामुदायिक विकास सहित अन्य योजनाओं की समीक्षा की एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए है। मा0 मंत्री जी ने स्वंय सहायता समूह का अधिक से अधिक गठन करते हुए तथा अधिक से अधिक महिलाओं को जोड़ते हुए उनकी आय में वृद्धि लाने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि स्वंय सहायता समूह को विभिन्न योजनाओं से जोड़ते हुए अधिक से अधिक आय बढ़ाने में सहायता करें। मनरेगा के कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने जॉब कार्ड पर जॉब कार्ड धारक का नाम एवं मोबाइल नम्बर अंकित कराने के लिए कहा है। उन्होंने मनरेगा योजना अंतर्गत प्रत्येक ग्राम पंचायत में किसानों से जुड़कर सरकारी भूमि पर फलदार, छायादार पौधे लगाने के निर्देश दिए। मा0 मंत्री ने मनरेगा योजना अंतर्गत खुदवाए गए तालाबों के चारों ओर वृक्षारोपण कराने को कहा। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना की समीक्षा करते हुए मा0 मंत्री जी ने सड़कों के किनारे वृक्षारोपण कराये जाने के लिए कहा है। मा0 मंत्री जी ने कहा कि योजनाओं के शिलान्यास एवं लोकार्पण के कार्य में जनप्रतिनिधियों की सहभागिता अनिवार्य रूप से सुनिश्चित की जाये। मा0 मंत्री जी ने कहा कि जो भी कार्य किये जा रहे है, अभियान चलाकर उनकों पूर्ण करा लिया जाये। कहा कि योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र लोगों को अनिवार्य रूप से उपलब्ध हो। मा0 मंत्री जी ने कहा कि अच्छा कार्य करके लोगो का दिल जीते तथा गरीबों की मदद करें।

मा0 मंत्री श्री उपेन्द्र तिवारी ने कहा कि शौचालयों का सत्यापन एवं जिओ टैगिंग का कार्य प्राथमिकता पर करा लिया जाये। उन्होंने कहा कि जो भी अधिकारी गांव में जाये, वे सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का निरीक्षण अवश्य करें। मा0 मंत्री श्री आनंद स्वरूप शुक्ला ने प्रधानमंत्री आवास योजना एवं मुख्यमंत्री आवास योजना की समीक्षा करते हुए कहा कि कोई भी पात्र व्यक्ति योजना के लाभ से वंचित न होने पाये, इसके साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा कि कोई भी अपात्र व्यक्ति योजना का लाभ न लेने पाये। उन्होंने कहा कि हर एक न्याय पंचायत में मनरेगा पार्क बनाने के सम्बंध में आवश्यक कार्रवाई की जाये। इस अवसर पर मा0 विधायक मेजा श्रीमती नीलम करवरिया, जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री, मुख्य विकास अधिकारी शिपू गिरि, अपर आयुक्त ग्राम विकास सहित अन्य सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

भाजपा विधायक नीलम करवरिया ने मनाया पीएम का जन्मदिन

मेजा रोड। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 71वें जन्मदिन को बीजेपी भव्य तरीके से मनाने की तैयारी में जुटी हुई है। बीजेपी ने 20 दिन के राष्ट्रव्यापी अभियान की योजना बनाई है जो आज से 7 अक्टूबर को खत्म होगा। जानकारी के मुताबिक इस अभियान को सेवा और समर्पण अभियान नाम दिया गया है। इसी क्रम में शुक्रवार को मेजा विधायक नीलम उदयभान करवरिया ने मेजारोड स्थित ओझा आर्यन स्टोर पर केक काटकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन मनाते हुए उनके दीर्घायु होने की कामना किया। विधायक ने कहा कि आज देश लगातार यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है मोदी के नेतृत्व में देश के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक स्थलो पर विकास का कार्य चल रहा है। आज जिस प्रकार से देश के हर परिवार को निशुल्क गैस और बिजली कनेक्शन देने का कार्य हुआ है वह सिर्फ भाजपा की सरकार में संभव है। आगे कहां की हम सबका धर्म है कि गरीब और आम जनमानस की सेवा करें सेवा पुनीत कार्य है।जन्मदिन के अवसर पर विजयकांत मिश्रा,बाबा ओझा,रिंकू ओझा, राहुल द्विवेदी, धीरज दुबे, सुशील ओ केसरी,गाना मिश्रा, विधायक प्रतिनिधि शैलेश पांडे,डब्बू द्विवेदी तथा विधायक के निजी सचिव जितेंद्र शुक्ला के साथ भारी संख्या में क्षेत्रीय लोग मौजूद रहे।

फलदान कर की दीर्घायु की मंगल कामना

घूरपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 71वे जन्म दिवस पर भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा यमुनापार ने नैनी के चकदोंदी स्थित आधार शिला वृद्धाश्रम में फलदान कार्यक्रम का आयोजन कर सैकड़ों वृद्ध जनों को फलदान कर देश के सबसे लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वस्थ्य और दीर्घायु की मंगल कामना की। फलदान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पिछड़ा वर्ग मोर्चा काशी प्रांत के उपाध्यक्ष अश्वनी सिंह पटेल रहे। अध्यक्षता कर रहे जिलाअध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की असाधारण दृष्टि, अनुकरणीय नेतृत्व और समर्पित सेवा ने देश का सर्वांगीण विकास किया है। प्रदेश कार्य समित के रंगबली पटेल विशिष्ट अतिथि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। फलदान कार्यक्रम में अजय पटेल कौशाम्बी उपाध्यक्ष, सहित यमुनापार के पदाधिकारी मयंक गुप्ता, उमाकांत मौर्य, धर्मराज पाल, संजय पाल, सुरेंद्र प्रसाद सिंह, शिवम् सिंह, मिथिलेश, शंकर लाल साहू, अरविंद बिंद, अधिवक्ता धीरेंद्र सिंह आदि शामिल रहे।

मंडल अध्यक्ष ने किसानो को भेंट किया अंगवस्त्र

घूरपुर। यशश्वी लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर भाजपा किसान मोर्चा के परसरा जसरा मंडल अध्यक्ष अभिषेक शुक्ल ने कई गांवो के देव तुल्य किसानो को अंग वस्त्र भेंट कर प्रधानमंत्री के दीघार्यु की मंगल कामना की। जिसमें सम्मिलित हुए जसरा मंडल महामंत्री भूपेन्द्र पाठक , शक्ति केन्द्र प्रभारी परसरा बुद्धि प्रकाश द्विवेदी जी , समाजसेवी विनोद साहू , राजीव लोचन द्विवेदी , अजय द्विवेदी आदि शामिल रहे।

पीएम के जन्मदिन पर कार्यकताओं ने की दीघार्यु की कामना

शंकरगढ़। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी का जन्मदिन शुक्रवार को पूरे जनपद में उत्साह के साथ मनाया गया। पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकताओं ने मंदिरों में पूजा अर्चना के साथ ही पौधरोपण, गरीबों और असहायों में वस्त्र और फल वितरण के साथ ही दीघार्यु के निमित्त सुंदरकांड के पाठ का आयोजन कर किया गया। इसी क्रम में विधानसभा बारा में बारा विधायक डॉ अजय कुमार की अगुवाई में कार्यकताओं ने जन्मदिवस मनाया। सेवा सप्ताह एवं संकल्प दिवस के रूप में समारोह में कार्यकताओं ने स्थानीय मंदिर में जाकर पूजा अर्चना की और प्रसाद का वितरण किया इसके पश्चात घूरपुर में पार्टी पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्मदिन मनाया गया। यमुनापार प्रभारी ओमकार केशरी,जिलाध्यक्ष विभवनाथ भारती, जिलाध्यक्ष किसान मोर्चा उपाध्यक्ष जय सिंह पटेल, जिला मंत्री कमलेश तिवारी, मनोज गुप्ता, सुरेश शुक्ल, वीरेंद्र जायसवाल, जगत शुक्ल, सुरेन्द्र पटेल,आलोक पटेल, बीरेंद्र शुक्ल, श्रीकान्त आचार्य, रामानन्द त्रिपाठी, राजा बाबू पाठक, बब्बन सिंह, मुन्ना मिश्रा, लल्ला पाठक, भूपेन्द्र पाठक,दीप नारायण शास्त्री,संगीता, सुबोध जायसवाल, मोहन यादव, अभिषेक तिवारी आदि लोग उपस्थित रहे। इसीतरह नगर पंचायत कार्यालय शंकरगढ़ में चेयरमैन लल्लू कनौजिया की अगुवाई में जन्मदिन मनाया गया। कार्यकताओं ने फल और मिठाई बांटकर दीघार्यु की कामना किया। इस मौके पर सभासद सुजीत केसरवानी, प्रकाश चंद्र गुप्ता,सभासद ज्योति केसरवानी, लिपिक प्रदीप कुमार, रफीक अहमद,बल्लू केसरवानी, अंशुमान सिंह, मनीष केसरवानी, दीपू शुक्ला आदि लोग मौजूद रहे। इसी तरह सदर बाजार शंकरगढ़ में व्यापार मंडल के अध्यक्ष मूलचंद गुप्ता की अगुवाई में केक काटकर प्रधानमंत्री का जन्मदिन धूमधाम के साथ मनाया गया मौके पर महामंत्री रतन केसरवानी ,वरिष्ठ सभासद सुजीत केसरवानी, उग्रसेन द्विवेदी जी, प्रचार मंत्री दीपक केसरवानी,अर्पण केसरवानी ,गोलू केसरवानी, मनोज केसरवानी, उपाध्यक्ष जय केसरवानी, वेद केसरवानी, हरीश कृष्णानी, नीरज केसरवानी, अमित वर्मा सहित दर्जनों व्यापारी उपस्थित रहे। इसीतरह शंकरगढ़ के भाजपा व रॉयल संगठन कार्यालय में प्रधानमंत्री का जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। सभी ने मिठाईयां बांटकर व नरेंद्र मोदी जी की जय बोल कर जन्मदिवस की बधाई दी।मौके पर जिला कोषाध्यक्ष अनूप केसरवानी, नामित सभासद सुधा गुप्ता, नितेश केसरवानी, सचिन केसरवानी, रवि केसरवानी, बंटी केसरवानी, आनंद केसरवानी, बबलू केसरवानी, पंकज गुप्ता, हरिओम केसरवानी,नितेश केसरवानी आदि लोग मौजूद रहे।

मोदी के जन्मदिवस पर महिला मोर्चा का अनोखा अंदाज

अखंड भारत संदेश

71 महिला कोरोना वारियर्स का हुआ सम्मान

कोरोना वॉरियर्स को किया गया सम्मानित

प्रयागराज। जन जन में लोक प्रिय देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिन को प्रयागराज में भाजपा महिला मोर्चा ने अलग अंदाज में मनाया । कोरोना महामारी से निपटने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस संकल्प और धैर्य की मिसाल पेश की दुनिया उसका लोहा मानती है । पीएम के इसी संकल्प को उनके 71 में जन्म दिवस के मौके पर भाजपा महिला मोर्चा ने जिले में कोविड काल में अपनी जान दांव पर लगाकर कोविड पीड़ितों को बचाने वाली महिलाओं को आज कोरोना योद्धा पुरस्कार से सम्मानित किया है। भाजपा महानगर कार्यालय में आज भाजपा महिला मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद गीता शाक्य ने इन महिलाओं को कोरोना योद्धा सम्मान से सम्मानित किया । महानगर भाजपा कार्यालय में आयोजित इस सम्मान समारोह का आगाज मुख्य अतिथि राज्य सभा सांसद गीता शाक्य द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर मुख्य अतिथि का फूल मालाओं से स्वागत अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने नारी सशक्तिकरण पर जोर देते हुए कहा कि नारी में असीम शक्तियां हैं वह कोरोना काल में भी दृढ़ता से डटी रहीं। उत्तर प्रदेश भाजपा महिला मोर्चा की महामंत्री डा. कृतिका अग्रवाल ने कहा कि जिले में 71 महिलाओं ने कोविड-19 अपनी जान जोखिम में लगाकर जिले के कोविड पीड़ितों को बचाया और उनकी सेवा की उन्हें आज भाजपा के मंच पर पीएम के क्षेत्र में जन्मदिवस पर इस विशेष सम्मान से नवाजा गया है। कोरोना सम्मान पाकर कोरोना योद्धाओं के चेहरे खिल गए । कोरोना महिला योद्धा सम्मान पाने वालों में 4 मुस्लिम महिलाएं, नर्स, महिला पुलिसकर्मी और सफाई कर्मी भी शामिल हैं, जिन्होंने कोविड काल में कोविड पीड़ितों की सेवा की थी। इनमें कई महिलाएं तो खुद भी कोविड की चपेट में आई थी।

विद्युत उप केंद्र व गैराज एवं दुकानों में पूजे गए देव शिल्पी विश्वकर्मा

सहसों। क्षेत्र के सहसों बाजार सहित तमाम जगहों पर गैराज एवं इलेक्ट्रिक इलेक्ट्रॉनिक की दुकानों व कारखानो पर शुक्रवार को देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा की विधि विधान से पूजा अर्चना के उपरांत प्रसाद का वितरण किया गया। इसी तरह थानापुर स्थित विद्युत उपकेंद्र पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भगवान विश्वकर्मा की विधि विधान से पूजा अर्चना करते हुए आशीर्वाद प्राप्त किया तत्पश्चात प्रसाद का वितरण भी किया गया। सहसों स्थित संदीप आटो रिपेयरिंग सेंटर पर संदीप केसरवानी द्वारा भगवान विश्वकर्मा की फूल मालाओं से पूजा अर्चना एवं हवन की गई तत्पश्चात प्रसाद का वितरण किया गया। इसी प्रकार दीप इलेक्ट्रॉनिक एवं मोबाइल रिपेयरिंग सेंटर सहसों में दीपक राज मौर्य सोनू मौर्य एवं सचिन मौर्य ने विधि विधान से पूजन अर्चन कर प्रसाद का वितरण किया। पांडे इनवर्टर शॉप एवं रिपेयरिंग सेंटर में राजेंद्र प्रसाद पांडे द्वारा विधिवत पूजा अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया। इसी प्रकार सहसो बाई पास स्थित कार गैराज, भोपतपुर स्थित ट्रक एवं बस बॉडी में बनाने वाले कारखानों में भी देव शिल्पी का विधि विधान से पूजा अर्चना की गई। देव शिल्पी की पूजा अर्चना सभी स्थानों पर विद्वान आचार्य द्वारा कराया गया।

रेलवे कर्मचारियों ने मनाया देव शिल्पी विश्वकर्मा जयंती

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र में ग्रामीण इलाकों में शुक्रवार को भगवान विश्वकर्मा की पूजा आस्था एवं भक्तिभाव से की गई। इसको लेकर श्रद्धालुओं में काफी उत्साह देखा गया। मेजारोड रेलवे स्टेशन स्थित सीनियर सेक्शन इंजीनियर पथ कार्यालय पर कर्मचारियों के द्वारा भजन कीर्तन के साथ विधि विधान से शिल्पकार भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना किया गया। इस दौरान कर्मचारियों के द्वारा रंग बिरंगी झालरों से कार्यालय की साज-सज्जा किया गया था। भगवान विश्वकर्मा की छोटी-बड़ी प्रतिमाओं की आचार्यों के वैदिक मंत्रोच्चारण से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। कर्मचारियों ने भजन कीर्तन करते हुए हवन कर भगवान विश्वकर्मा का आशीर्वाद लिया। कथा समाप्त होने के बाद प्रसाद का वितरण किया गया। विकास पांडे ने कहा कि भगवान विश्वकर्मा ने ही देवताओं के लिए अनेक भव्य महलों,आलीशान भवनों, हथियारों और सिंघासनों का निर्माण किया। इसलिए इन्हें देवताओं का अभियंता, आदि अभियंता, मशीन का देवता और देवताओं का शिल्पकार जैसे नामों से जाना जाता है। पूजा के दौरान विकास पाण्डेय एसएसई,नीतीश कुमार मिश्रा जेई, विकास सोनकर ड्राइवर,गिरीश मिश्रा,अशर्फी पटेल ,हरेंद्र कुमार,राजेश, प्रदीप, अजीत सिंह पटेल ,कार्यालय अधीक्षक सहित आदि कर्मचारी व अधिकारी मौजूद रहे।

विद्युत सब स्टेशन में धूमधाम से मनाई गईं विश्वकर्मा जयंती

करछना। विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर करछना क्षेत्र में जगह-जगह बड़े धूमधाम से मनाई गई जयंती इस अवसर विद्युत सब स्टेसन करछना पर अवर अभियंता वीरेन्द्र कुमार ने विधि विधान से भगवान विश्वकर्मा की पूजा अर्चना करते हुए सभी सह कर्मियों को प्रसाद वितरण किया गया ।इसी क्रम में करछना के बरदहा, साधु कुटी चौराहा पर, बेला चौराहा, घटना, भीरपुर, भडेवरा, डीहा आदि स्थानो पर संचालित प्रतिष्ठानों में भगवान विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर पूजा अर्चना कर लोगों नें प्रसाद वितरण किया ।

विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजनान्तर्गत विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षित लाभार्थियों को नि:शुल्क टूल किट का किया गया वितरण

● विभिन्न योजनान्तर्गत 10 लाभार्थियों को रू0 1.30 करोड़ का किया गया ऋण वितरण

अखंड भारत संदेश

`दो सौ लाभार्थियों को टूल किट वितरित करते

प्रयागराज। उपायुक्त उद्योग, जिला उद्योग प्रोत्साहन तथा उद्यमिता विकास केन्द्र अजय कुमार चौरसिया ने बताया है कि शुक्रवार को सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम एवं निर्यात प्रोत्साहन विभाग द्वारा विश्वकर्मा दिवस के अवसर पर जनपद प्रयागराज में कलेक्ट्रेट स्थित संगम सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजनान्तर्गत विभिन्न ट्रेडों यथा बढई, लोहार, नाई, दर्जी, राज मिस्त्री इत्यादि में प्रशिक्षित लगभग 200 लाभार्थियों को निःशुल्क टूल किट का वितरण किया गया। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना/प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम/मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना/एक जनपद एक उत्पाद मार्जिनमनी योजनान्तर्गत 10 लाभार्थियों को रू0 1.30 करोड़ का ऋण वितरण भी किया गया। इस अवसर पर मा0 मुख्यमंत्री जी उ0प्र0 की अध्यक्षता में लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम का सजीव प्रसारण भी किया गया। कार्यक्रम में उपायुक्त उद्योग श्री अजय कुमार चौरसिया द्वारा विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के साथ ही साथ अन्य रोजगारपरक ऋण योजनाओं के सम्बन्ध में विधिवत जानकारी दी गई। उपायुक्त उद्योग द्वारा यह भी अवगत कराया गया कि सभी योजनाएं वर्तमान में आनलाइन कर दी गई हैं, अतः इच्छुक कारीगरों द्वारा अपनी सुविधानुसार कहीं से भी आवेदन किया जा सकता है। कार्यक्रम में उपस्थितमाननीय विधायक शहर उत्तरी विधान सभा हर्षवर्धन वाजपेयी द्वारा विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए लाभार्थियों को सरकार द्वारा उपलब्ध कराये गये टूल किट का सदुपयोग कर स्वरोजगार स्थापित करने की बात कही गई। कार्यक्रम में शहर उत्तरी विधानसभा क्षेत्र के माननीय विधायक हर्षवर्धन वाजपेयी, फूलपुर विधानसभा क्षेत्र के माननीय विधायक प्रवीण पटेल, उपायुक्त उद्योग अजय कुमार चौरसिया, जिला अग्रणी प्रबन्धक बैंक आफ बड़ौदा एवं जनपद के विभिन्न विकास खण्डों के लाभार्थी उपस्थित थे।

हवन कर संयंत्र की उन्नति के लिए जगत शिल्पी विश्वकर्मा से प्रार्थना करते इकाई प्रमुख संजय कुदेशिया

विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर केन्द्रीय कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी

इफको की फूलपुर इकाई में विधि विधान से की गई देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा की पूजा

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। सनातन धर्म में बाबा विश्वकर्मा को निर्माण और सृजन का देवता माना गया है। इसलिए विश्वकर्मा भगवान की पूजा सभी कल कारखानों में विधि विधान के साथ की जाती है। आज के दिन इस क्षेत्र में लगे सभी वास्तुकारों में एक नई ऊर्जा का संचार भी होता है। यह बातें शुक्रवार को इफको फूलपुर की केन्द्रीय कार्यशाला में भगवान विश्वकर्मा के साथ ही गणेश एवं मां सरस्वती की भव्य प्रतिमा का अनावरण कर पूजन करते हुए इकाई प्रमुख संजय कुदेशिया ने कही। उन्होंने जगत शिल्पी के चरणों में नत मस्तक होकर जगत कल्याण की कामना के साथ ही इफको संयंत्र की उन्नति की प्रार्थना की। इफको के प्रत्येक अनुभागों व संयंत्रों में सम्बन्धित विभागाध्यक्षों ने कोविड-19 के निदेशों के पालन करते हुए विधि विधान से विश्वकर्मा पूजन का कार्यक्रम सम्पन्न कराया। इस दौरान कार्यशाला में ही बने हवन कुंड में अधिकारियों ने आहुति देकर इफको संयंत्र की सुरक्षा एवं उन्नति के लिए प्रार्थना की। आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष व जनसंपर्क अधिकारी संजय मिश्रा ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा के आशीर्वाद व प्रबंध निदेशक डा० यू०एस० अवस्थी के कुशल निर्देशन में इफको देश के विकास में अपना अतुलनीय योगदान दे रही है। कार्यशाला की सजावट को भव्य बनाने में ए के मलिक और राघवेंद्र त्रिपाठी ने अपना विशेष योगदान दिया। मौके पर महाप्रबंधक (नैनो प्रोजेक्ट) गिरधर मिश्र, महाप्रबंधक (उत्पादन) आर मैती , संयुक्त महाप्रबंधक संजय वैश्य, एम डी मिश्र,मोहन राव एवम राजेंद्रन, उप महाप्रबंधक जी० एस पांडे, आफीसर्स एसोसिएशन के महामंत्री स्वयं प्रकाश, पी के सिंह, ए एन ओझा, संतोष शुक्ल, अरवेन्द्र कुमार, पी के पटेल, संतोष सिंह, दानवीर सिंह, एम पी बर्नवाल,पंकज पाण्डेय,विनय यादव के साथ ही इफको के अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

धूमधाम से मनाया गया देव शिल्पी विश्वकर्मा जयंती

सिरसा । प्रयागराज मेजा क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा जयंती मनाया गया। भगवान विश्वकर्मा को निर्माण एवं सृजन का देवता माना जाता है। भगवान विश्वकर्मा जन्मदिन विश्वकर्मा जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर निर्माण से जुड़े मशीनों,औजारो एवं दुकानों की पूजा विधि विधान से किया जाता है। इस अवसर पर भगवान विश्वकर्मा के चित्र पर पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्जवलित किया गया और नारियल,मेवा,मिश्री,फल और लड्डु का प्रसाद वितरण किया गया। विश्वकर्मा जयंती के उपल्प्स में वी0के0 इंजीनियरिंग वर्क शॉप के प्रोपाइटर एवं प्रधान प्रतिनिधि राम शिरोमणि (नानक विश्वकर्मा) एवं ग्रामप्रधान श्रीमती रेशमा देवी ग्रामप्रधान बजहा उरूवा ने अपने प्रतिष्ठान पर देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा की जयंती बड़े धूमधाम और विधि-विधान से भगवान विश्वकर्मा का पूजा अर्चना किया गया और आये हुए भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया। इस अवसर पर विश्वकर्मा समाज के गणमान्य लोग उपस्थित रहे। अखण्ड भारत सन्देश विनोद विश्वकर्मा (पत्रकार),सुनील विश्वकर्मा(मास्टर जी) दिनेश विश्वकर्मा, लवकुश विश्वकर्मा,सुभाष विश्वकर्मा,दीपक विश्वकर्मा, बबलू विश्वकर्मा, विनोद विश्वकर्मा सैकड़ो लोग देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा पूजा में उपस्थित रहे। इसी कड़ी में भिरपुर में विश्वकर्मा प्लाइवुट एंड हार्डवेयर के प्रोपाइटर दया शंकर विश्वकर्मा ने अपने प्रतिष्ठान पर देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा जयंती बड़े धूमधाम से मनाया।

आंतरिक सामुदायिक संदर्भ व्यक्तियों का आवासीय प्रशिक्षण सम्पन्न

परियावां, प्रतापगढ़। क्षेत्रीय ग्राम्य विकास संस्थान कालाकाकर में आंतरिक सामुदायिक संदर्भ व्यक्तियों का नौ दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। प्रशिक्षण में जनपद कौशांबी के विकास खंड नेवादा सिराथू एवं कौशांबी से राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन अंतर्गत 53 नव चयनित आंतरिक सामुदायिक संदर्भ व्यक्तियों जिसमें 18 बुक्कीपर महिलाएं एवं 35 सोशल मोबिलाइजेशन महिलाओं ने प्रतिभाग किया प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को जलपान भोजन व प्रशिक्षण किट तथा यात्रा भत्ता वितरित किया गया। प्रशिक्षण का समापन संस्थान के आचार्य अनूप कुमार एवं शिक्षण सत्र प्रभारी शैलेंद्र सिंह तथा सह प्रभारी दिनेश चंद्र ने किया।

प्रधानमंत्री ने देश की दशा और दिशा को बदला : धीरज ओझा

दुर्गागंज बाजार में लगे कैम्प में 250 लोगों का हुआ टीकाकरण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 71वें जन्मदिवस पर सेवा और समर्पण कार्यक्रम की दृष्टिगत विधायक रानीगंज अभय कुमार उर्फ धीरज ओझा के नेतृत्व में रानीगंज क्षेत्र के दुर्गागंज बाजार में मेगा वैक्सीनेशन अभियान के तहत आयोजित निशुल्क टीकाकरण एवं स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन किया गया।

कैम्प में लगभग 250 से अधिक लोगों के टीकाकरण के साथ उनका स्वास्थ्य परीक्षण कर दवायें वितरित किया गया। इस दौरान विधायक धीरज ओझा ने कहा कि भाजपा पार्टी की रीति-नीति सबका साथ-सबका विकास-सबका सम्मान करते हुए बिना किसी भेद भाव के

प्रधानमंत्री मोदी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के आदर्श अंत्योदय को आत्मसात करते हुए देश की दशा एवं दिशा बदलने का काम किया। उनके जन-कल्याणकारी नीतियों से समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्तियों को मुख्य धारा से जोड़ने के साथ देश एवं प्रदेश की सामाजिक आर्थिक उन्नति के मार्ग प्रशस्त किये है। इस दौरान ब्लॉक प्रमुख सत्यम ओझा, प्रतिनिधि नीरज ओझा, मण्डल अध्यक्ष विजय कौशल, चिकित्साधीक्षक डॉ रजनीश प्रियदर्शी, बीपीएम दीपक श्रीवास्तव एवं वसीम, फार्मासिस्ट आर.सी.शर्मा, एएनएम नीलम, धर्म प्रकाश, सागर शुक्ला, हरदेव पटेल, शक्ति गुप्ता, गुड्डू ओझा, सोनू पांडेय इत्यादि उपस्थित रहे।

भाजयुमो ने किया रक्तदान शिविर का आयोजन

प्रतापगढ़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर रक्तदान शिविर का आयोजन प्रेमा देवी हॉस्पिटल साहबगंज में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भाजयुमो जिलाध्यक्ष अंशुमान सिंह मौजूद रहे। इस दौरान भाजयुमो के पदाधिकारियों ने पीएम के जन्मदिन पर रक्तदान किया। प्रेमा देवी हॉस्पिटल के डायरेक्टर व भाजयुमो के जिला कोषाध्यक्ष शैलेश कुमार मिश्रा ने रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

महिला सशक्तीकरण पर महाविद्यालय में हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। स्वामी करपात्री महाराज राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रानीगंज में मिशन शक्ति अभियान के तृतीय चरण में डा श्रद्धा सिन्हा के संयोजकत्व में महिला सशक्तिकरण और उसके उपाय विषय पर एक वेबीनार का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय देवरिया के डा0 पंकज शुक्ल रहे। डा0 शुक्ल ने महिलाओं की प्राचीन गौरवशाली परम्परा का जिक्र करते हुए उनकी असीम सामर्थ्य, ऊर्जा, उत्साह को रेखांकित किया। उन्होंने भारतीय महिलाओं के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए जा रहे योगदान का जिक्र करते हुए उन्हें और अधिक प्रोत्साहित करने करने का आह्वान किया। ऑनलाइन संगोष्ठी में विभिन्न महाविद्यालयों के विद्वान प्राध्यापकों/प्राध्यापिकाओं के साथ ही महाविद्यालय के नोडल अधिकारी डा अंशुमान सिंह, परामर्शदात्री डा0 नीलिमा सिन्हा, डा0 जय राजभर, डा0 अजय यादव तथा छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया। अध्यक्षता प्राचार्य डा0 विजय कुमार मिश्र ने किया और संचालन डा0 श्रद्धा सिन्हा ने किया।

दीवार की चपेट में आने से वृद्ध की मौत, कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर थाना क्षेत्र के पहाड़पुर गांव में गुरूवार की रात दीवार गिरने से दरवाजे पर सो रहे वृद्ध की मौत हो गयी। घटना से परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल रहा। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा कर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। सांगीपुर थाना क्षेत्र के पहाड़पुर गांव निवासी रामकिशोर वर्मा 70 गुरूवार की रात भोजन करने के बाद घर के दरवाजे के सामने छप्पर मे सो रहे थे। परिजनों ने बताया कि रात करीब आठ बजे अचानक भरभराकर मड़हे मे बनी कच्ची दीवार गिर गयी। जिससे उसके नीचे चारपाई पर सो रहे वृद्ध घायल हो गया। वृद्ध की चीखपुकार सुनकर घर के लोग दौडे और उसे दीवार के मलबे मे दबा देख आवाक रह गये। आननफानन मे लोगों ने मलबे को हटाकर वृद्ध को बाहर निकाला और उसे इलाज के लिए स्थानीय चिकित्सक के पास ले गये। जहां परीक्षण के बाद चिकित्सक ने वृद्ध को मृत घोषित कर दिया। इसके बाद परिजन शव लेकर घर लौट आये। वृद्ध की मौत की जानकारी होते ही परिवार के लोगों मे कोहराम मच गया। सूचना पर शुक्रवार को सुबह सांगीपुर पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा कर पीएम के लिए भेज दिया गया है।

नगर पालिकाध्यक्षा ने जलभराव क्षेत्रों का लिया जायजा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका की अध्यक्षा प्रेमलता सिंह आज शहर में वर्षा से हुए जलभराव का जायजा लेने के लिये निकली थीं। सबसे पहले वह लोक निर्माण विभाग के डाकबंगले गई जहां दो दिन की बरसात में पूरे डाक बंगले में जलभराव हो गया था। वहां आज नगर पालिका के कर्मचारी मशीन से पानी निकाल रहे थे। नगर पालिकाध्यक्ष ने सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह से पूछा कि यहां जलभराव न हो, इसका कोई स्थायी हल निकाला

लोक निर्माण के डाक बंगले में जलभराव पर जताई चिंता

जाए तो उन्हें बताया गया कि डाक बंगला सड़क के नीचे है। इसी वजह से बरसात में पानी वहां एकत्र होता है। बहरहाल आज मशीन से ज्यादातर पानी निकाला जा चुका था। नगर पालिका के कर्मचारियों ने पानी निकलने के बाद पूरे डाक बंगले की सफाई तथा एंटी लार्वा का छिड़काव किया। नगर पालिकाध्यक्षा डाक बंगला से निकलकर मीरा भवन वार्ड गई जहां कली-कूचों में घूमकर उन्होंने सफाई व जलभराव होने की जानकारी लोगों से ली। अध्यक्षा के साथ सभासद गायत्री शुक्ला, सभासद ज्ञानेश मिश्र, सफाई निरीक्षक एसके सिंह, सफाई प्रभारी प्रशांत सिंह भी थे। अध्यक्षा मीरा भवन से निकलकर सिनेमा रोड आई, जहां इस बार वर्षा का पानी इकट्ठा तो हुआ लेकिन वह कुछ ही क्षण में नालियों से बह गया।

इस पर उन्होंने संतोष जताया। बता दें कि वर्षा होने से सिनेमा रोड पर हमेशा जलभराव होता रहा है लेकिन इस बार नाले-नालियों की सफाई होने से जलभराव की भी कोई समस्या नहीं बन सकी। इस पर उन्होंने संतोष जताया। वर्षा के दूसरे दिन शुक्रवार को मौसम खुला हुआ था जिसमें अध्यक्षा प्रेमलता सिंह क्षेत्र का जायजा लेने के लिये निकली थी। उन्होंने लगभग एक घंटे से अधिक तक क्षेत्र के लोगों से मिली और जानकारी ली।

बलात्कार के आरोपी को दस वर्ष का कारावास

प्रतापगढ़। विशेष जनपद न्यायाधीश/पास्को कोर्ट के न्यायाधीश पंकज कुमार श्रीवास्तव ने अभियुक्त सालू बिंद सुत गोपी बिंद निवासी धनुहा, रानीगंज को बलात्कार के आरोप में दोषी पाते हुए दस वर्ष का कारावास व 30 हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित करने का आदेश पारित किया। अर्थदण्ड की धनराशि अदा न करने पर दो माह का अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा। बता दें कि सात मई 2015 को इस आशय का प्रार्थना पत्र दिया गया कि प्रार्थी के घर पर सालू था, पांच मई 2015 को रात लगभग 11 बजे मेरी पुत्री जिसकी उम्र 12 वर्ष थी, को उपरोक्त सालू बहला-फुसलाकर भगा ले गया। राज्य की ओर से पैरवी सहायक शासकीय अधिवक्ता राजेश त्रिपाठी व देवेश त्रिपाठी ने किया।

लूट की योजना बना रहे छह शातिर अभियुक्त गिरफ्तार

पांच चोरी की बैटरी, तमंचा, नगदी व बोलेरो गाड़ी बरामद

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना बाघराय पुलिस द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र के कुण्डा मोड़ बिहार, नहर पुलिया के पास से लूट/छिनैती की योजना बना रहे छह अभियुक्तों को चार पहिया वाहन (बोलेरो) के साथ गिरफ्तार किया गया, जबकि इनके चार साथी मौके से अन्धेरे का लाभ उठाकर फरार हो गये। गिरफ्तार अभियुक्तों के कब्जे से एक अदद तमंचा व दो जिन्दा कारतूस 315 बोर, पांच इस्तेमाली चोरी की बैटरी एवं दस हजार रूपये नकद बरामद किया गया। गिरफ्तार अभियुक्तों में मुलायम यादव पुत्र बसंतलाल नि0ग्राम गलगली थाना बाघराय, ललित सिंह पुत्र राजाबाबू नि0ग्राम भदरी थाना हथिगवां, रामाधार यादव पुत्र दूधनाथ नि0 ग्राम रहियापुर थाना कुण्डा, राजेन्द्र यादव उर्फ चुल्ले पुत्र छेदीलाल यादव नि0ग्राम रहियापुर थाना कुण्डा, ब्रजेश कुमार पुत्र राधेश्याम नि0ग्राम गलगली थाना बाघराय व बसन्त लाल यादव पुत्र स्व0 कड़ेदीन यादव नि0 ग्राम गलगली थाना बाघराय शामिल हैं। गिरफ्तार अभियुक्तों ने पूछताछ में बताया कि जो चारों लोग मौके से फरार हो गये वे हमारे साथी थे। हम सभी लोग मिलकर लूट/छिनैती/चोरी का काम करते है, आज भी हम लोग यहां इकट्ठा होकर कहीं लूट करने की योजना बना रहे थे, हमारे पास से जो बोलेरो गाड़ी बरामद हुयी है, उसका प्रयोग हम लोग लूट/छिनैती/चोरी की घटना कारित करने के लिये करते है और जो पांच इस्तेमाली बैटरियां बरामद हुयी हैं। हम सभी लोगों ने मिलकर दिनांक 16 अगस्त 2021 को रामगढ़ बनोही ग्राम में स्थित मोबाइल टॉवर से 22 बैटरियां चुराई थी।

बीबीएफजी के टीकाकारण कैम्प में 120 लोगों का हुआ टीकाकरण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। खराब मौसम भी लोगों को कोरोना का टीका लगवाने से नहीं रोक पाया। रोटरी क्लब प्रतापगढ़ सेंट्रल और बच्चा बैंक फ्रेंड्स ग्रुप, बीबीएफजी के कैम्प में टीका लगवाने आये लोग उत्साह से लबरेज दिखे। लोगों का कहना था कि तूफानी बारिश के कारण घरों में कैद हो गये तो टीका लगवाने के बहाने सैर सपाटा भी हो गया।

रीवर डेल पब्लिक स्कूल रेलवे स्टेशन के प्रांगण में स्वास्थ्य महकमे के कोविशिल्ड टीका कैम्प का उद्घाटन स्कूल के प्रबंधक इमरान खान ने मुख्य अतिथि छोटे बच्चों संग फीता काटकर किया।

नौनिहालों ने फीता काटकर कैम्प का किया उद्घाटन

उन्होंने कहा कि कोरोना की टीका सभी को लगवाना चाहिए। परिवार संग कैम्प में आये उमाशंकर का कहना था कि खराब मौसम के बाद भी रोटरी क्लब और बीबीएफजी वालों ने कैम्प लगवाया। इससे लोगों को काफी सहूलियत हुई। इसके लिए थैंक्यू। टीचर सादिया का कहना था कि कैम्प लगने से अस्पताल में धक्के खाने की जरूरत नहीं पड़ी। इस तरह के कैंप लगने चाहिए। इस मौके पर स्वास्थ्य विभाग की टीम में शामिल समन्यवक आकाश दीप शुक्ला, अशरफ अली, शिवेंद्र श्रीवास्तव, प्रीति यादव ने बढ़िया सहयोग किया। फाउंडर राजेश कुमार ने बताया कि 120 से अधिक को टीका लगा। उन्होंने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। कैम्प में उमाशंकर, मोहम्मद अनीश, अश्वनी केसरवानी, शरद केसरवानी, डॉक्टर अनुराग मिश्रा, राजकुमार मोदनवाल, राजेश चौरसिया, रमेश नटराज, वैलेंटियर मोहम्मद खालिद, अरहान का सक्रिय योगदान रहा।

लबालब पानी के बीच टापू बना परियावां सामुदायिक शौचालय

अखंड भारत संदेश

परियावां। ब्लाक कालाकांकर की ग्राम पंचायत परियावां के माता मइया धाम में वर्ष 2020-21 में बनकर तैयार किया गया सामुदायिक शौचालय का लेबिल नीचा होने के कारण दो दिन के बारिश में पानी की चपेट में आ गया। जल्दबाजी में तैयार किया गया शौचालय अधिकारियों की बन्दर बाट का भेंट चढ़ गया। शौचालय में बनाया गया लैट्रिन के तीन गड्ढे व समरसेबुल पानी मे डूब गया जो निर्रथक साबित हो रहे हैं। इस बाबत खंड विकास अधिकारी अर्पणा सैनी का कहना है कि तत्कालीन जेई प्रेमशंकर की स्टीमेट से ग्राम प्रधान द्वारा बनवाया गया है।

दो दिन पूर्व हुई हत्या के मामले में रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगज थाना क्षेत्र के मददुपुर निवासी गनेशी लाल पुत्र महादेव यादव के लड़के राकेश कुमार यादव (33) वर्षीय की हत्या के मामले में मृतक के पिता गनेशी लाल यादव की तहरीर पर थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने पांच हत्यारोपी अशोक कुमार यादव व शैलेश कुमार यादव, मलखान यादव थाना क्षेत्र बक्साबाग (आलापुर), अर्जुन यादव व पप्पन पंडित रामपुर गड़ौली मानिकपुर थाना निवासी के खिलाफ हत्या के मामले में मुकदमा दर्ज किया है। आरोप है कि 15 सितम्बर की रात लगभग 10 बजे अभियुक्तगण एक राय होकर मेरे लड़के राकेश कुमार को गाली गलौज करते हुए मारापीटा और जान से मारकर हत्या कर शव को पेड़ से लटका दिया। सभी अभियुक्तगण फरार हैं।

नाले में डूबने से वृद्ध की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। मवेशी चराने गये बुजुर्ग की नाले मे समा जाने से मौत हो गयी। बुजुर्ग की मौत की जानकारी होने पर परिजनों मे कोहराम मच गया। उदयपुर थाना के खानीपुर निवासी रामआनंद के पुत्र अक्षयवर (60) शुक्रवार को दिन मे तीन बजे गांव के नजदीक मटटन नाले के समीप मवेशी चराने गया हुआ था। अचानक उसकी भैंस मटटन नाले मे डूबने लगी। मवेशी को बचाने के प्रयास मे अक्षयवर भी नाले मे कूद गया। अक्षयवर गहरे पानी मे समा गया। आसपास के चरवाहो ने शोर मचाया तो ग्रामीण तथा घर के लोग पहुंचे। लोगों ने नाले से अक्षयवर को किसी तरह निकाला तो उसकी सांसे थम गयी थी। सूचना मिलने पर उदयपुर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया।

ग्राम पंचायत दयालपुर में सैकड़ो पात्रों को नही बना राशन कार्ड

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर की ग्राम पंचायत दयालपुर में पात्र गृहस्थी राशन कार्ड में बड़े पैमाने पर खेल खेला गया है जिससे साफ पता चलता है कि सरकार की योजना का लाभ गरीबो तक नही पहुँच पा रहा है जिसका नजारा कालाकांकर की ग्राम पंचायत दयालपुर में देखने को मिल रहा है, जहां पर भारी संख्या में ततकालीन ग्राम प्रधान द्वारा अपात्रों को पात्र गृहस्थी का राशन कार्ड बनाकर दे दिया गया है जब कि पात्र लोगो का राशन कार्ड ही नही बनाया गया जिससे राशन से वंचित हैं। गाव के कार्डधारक जीवनलाल, राजमणि गिरि, वृन्दादीन मौर्य, जगतपाल यादव, मुन्नालाल, वकील अहमद रामकृपाल, राजेन्द्र पटेल, शंकरलाल(पूर्व प्रधान) जगदीश मौर्य, अहमद ,जहीर अहमद का आरोप है कि गांव के सैकड़ो पात्रों का राशन कार्ड आज तक नहीं बन सका है जिससे राशन से वंचित होना पड़ रहा है।

हाफ मैराथन का कार्यक्रम आज

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर उत्तर प्रदेश शासन ने वर्ष पर्यंत अमृत महोत्सव आयोजित करने का निर्णय लिया है। इसी क्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा फिट इंडिया फ्रीडम रन के अंतर्गत हॉफ मैराथन कराई जा रही है। इसका प्रतापगढ़ में 18 सितंबर 2021 को आयोजन किया जाना है। इसे प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतापगढ़ सिटी के सौजन्य से सम्पन्न किया जाएगा। इस हॉफ मैराथन में प्रो राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय, प्रयागराज के कुलपति प्रो अखिलेश कुमार सिंह एवं प्रयागराज जोन के पुलिस महानिरीक्षक कवींद्र प्रताप सिंह उपस्थित रहेंगे।

बरसात बाद कच्चे घरों के गिरने का सिलसिला जारी

गरीबों के आशियाने पर आई आफत की बारिश

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पिछले 40 घंटों से अधिक हुई बरसात से जहां लोगों का जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया वहीं गरीबों के आशियाने पर आफत की बारिश आई है। बाबा बेलखरनाथ धाम क्षेत्र के दर्जनों गांवों में गरीबों के आशियाने जमींदोज हो रहे हैं। गांव में कच्चे घरों के गिरने के चलते ग्रामीणों गांव के प्राथमिक विद्यालय सहित अन्य स्थानों पर शरण ले रहे हैं । बाबा बेलखरनाथधाम के सिंगठी खालसा के बृजेश कुमार, पूनम देवी, सुधीर कुमार, नौहर हुसैनपुर के अनिल कुमार गुप्ता,फूला देवी, महादेव, कमलेश, अशोक कुमार, हरि नारायण, सरखेल पुर के सुनील कुमार गौतम, यहियापुर के मोहम्मद फारुख, शमशाद अली, मोहम्मद मुहीद, कलीम, सिरताजुल हसन, बरकत अली, आदिल खान, चौखड़ा के राधेश्याम, लक्ष्मीनारायण, नाजिम अली, श्याम शंकर, श्रीराम गौतम, रामे गौतम, रामचंद्र, श्रीनाथपुर के पवन पांडे का कच्चा घर गुरुवार को दिन भर हुई बरसात के बाद रात में सीलन के चलते गिरकर जमींदोज़ हो गया। पीड़ितों ने घर गिरने के बाद गांव के प्राथमिक विद्यालयों सहित अन्य स्थानों पर शरण ली हैं। घरों के गिरने के बाद नीचे रखा अनाज, कपड़े सहित अन्य घरेलू सामान भीगकर नष्ट हो गया। जिससे लाखों रुपये का हुआ है। एसडीएम पट्टी डीपी सिंह ने बताया कि गांव में गिर रहे घरों से होने वाले नुकसान के आंकलन के लिए लेखपाल तथा कानूनगो को भेजा जा रहा है। जिसके आधार पर रिपोर्ट तैयार कर मुआवजे की कार्रवाई की जायेगी।

विश्वकर्मा दिवस पर 100 लाभार्थियों को दिया गया टूल किट

सदर विधायक ने मुद्रा योजना का बांटा ऋण प्रमाण पत्र

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विश्वकर्मा दिवस पर जिले में आयोजित कार्यक्रम में सदर विधायक राजकुमार पाल द्वारा विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के प्रशिक्षण प्राप्त 100 लाभार्थियों को जिला उद्योग एवं उद्यम प्रोत्साहन केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्रमाण पत्र, टूल किट एवं मुद्रा योजना के अंतर्गत ऋण प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत मुख्य

अतिथि द्वारा प्रशिक्षणार्थियों को टूल किट प्रदान करते हुए स्वरोजगार स्थापित करते हुए आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। इसी के साथ उनके द्वारा मुख्यमंत्री द्वारा इस योजना के माध्यम से गरीब परंपरागत कारीगरों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु धन्यवाद दिया। कार्यक्रम के अंतर्गत मुख्यमंत्री द्वारा राजधानी लखनऊ में एक साथ संपूर्ण प्रदेश में परंपरागत कारीगरों को टूल किट एवं मुद्रा योजना के अंतर्गत ऋण प्रमाण पत्र प्रदान करने शुभारंभ करने का सीधा प्रसारण भी प्रशिक्षणार्थियों द्वारा देखा गया। कार्यक्रम के अंतर्गत उपायुक्त उद्योग दिनेश कुमार चौरसिया द्वारा प्रशिक्षार्थियों को प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के माध्यम से आवश्यकतानुसार बैंक के माध्यम से ऋण प्राप्त करने का सुझाव दिया गया। कार्यक्रम में अग्रणी बैंक प्रबंधक, अनिल कुमार उद्यमी मोहम्मद अनाम, समाजसेवी रोशनलाल उमरवैश्य, सहायक प्रबंधक हरिनारायण यादव आदि मौजूद थे।

कृषि विज्ञान केन्द्र ऐंठू में पोषण वाटिका व वृक्षारोपण का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रधानमंत्री के जन्म दिन के उपलक्ष्य में पोषक अनाज हितधारकों का सम्मेलन, पोषण वाटिका महाअभियान और वृक्षारोपण का शुभारम्भ शुक्रवार को कृषि विज्ञान केन्द्र, अवधेषपुरम् (ऐंठू) के प्रांगण में किया गया। यह कार्यक्रम कृषि विज्ञान केन्द्र एवं इफको फूलपुर प्रयागराज के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत आईसीएआर-आईआईएमआर-हैदराबाद से सीधा प्रसारण कृषि विज्ञान केन्द्र में किसानों को दिखाया गया। इसके बाद किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्र के वरिष्ठ

वैज्ञानिक एवं हेड डा0 ए0के0 श्रीवास्तव ने बताया कि खाद्य सुरक्षा व पोषण के लिए मोटे अनाज के महत्व के बारे में बताया। इफको फूलपुर से आये क्षेत्र प्रबन्धक महेन्द्र सिंह राणा, केन्द्र की गृह वैज्ञानिका स्वाती दीपक दुबे ने भी जानकारी दी। इस अवसर पर डा0 ए0के0 श्रीवास्तव, डा0 नवीन कुमार सिंह, भाष्कर शुक्ला, अवधेश कुमार सिंह, महेन्द्र प्रताप सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

जिले में 25 सितम्बर को मनाया जायेगा गरीब कल्याण दिवस

जिलाधिकारी ने बैठक कर संबंधित अधिकारियों दी जिम्मेदारी

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने बताया कि जनपद भदोही में 25 सितम्बर 2021 को गरीब कल्याण दिवस के रूप में मनाया जायेगा। इस दिन जनपद के समस्त विकास खण्डों में गरीबों के कल्याण हेतु राज्य सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जनसामान्य को उपलब्ध करायी जायेगी। इसके साथ ही प्रत्येक विकास खण्ड में गरीबों के कल्याण हेतु संचालित कार्यक्रमों का आयोजन जनसामान्य के लिये किया जायेगा।

जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित बैठक में उन्होंने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिये हैं कि समस्त विकास खण्डों में जन आरोग्य मेलों का आयोजन किया जाये, जिसमें आमजन का स्वास्थ्य परीक्षण, आयुष्मान कार्ड का वितरण तथा कोविड टीकाकरण आदि की व्यवस्था की जायेगी। इसी प्रकार अग्रणी जिला प्रबंधक को निर्देश दिये है कि सभी प्रकार के ऋण वितरण की व्यवस्था सुनिश्चित करायें। परियोजना निदेशक डी0आर0डी0ए0 के माध्यम से प्रधानमंत्री आवास योजना एवं मुख्यमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों को लाभान्वित कराये जाने के साथ-साथ योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित कराया जायेगा। जिससे अधिक से अधिक पात्र लाभान्वित हो सकें। जिला प्रोबेशन अधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी, जिला पिछडा वर्ग कल्याण अधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी एवं जिला पूर्ति अधिकारी को भी अपने-अपने विभाग से संबंधित विभिन्न योजनाओं का गरीब कल्याण मेले के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार करने एवं अधिक से अधिक पात्रों को लाभान्वित किये जाने के निर्देश भी जिलाधिकारी ने दिये। उन्होंने बताया कि जनपद के समस्त विकास खण्डों में आयोजित जन आरोग्य मेलों में आमजन के स्वास्थ्य परीक्षण, आयुष्मान कार्ड का वितरण, कोविड टीकाकरण, सभी प्रकार के ऋण का वितरण, कृषि सयंत्रों का वितरण, प्रधानमंत्री आवास योजना/मुख्यमंत्री आवास योजना, शौचालय, स्वच्छ पेयजल तथा उज्जवला-2 योजना के अन्तर्गत गैस कनेक्शन दिये जाने की व्यवस्था तथा जनसामान्य को उपलब्ध कराये जाने वाले अन्य कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। इसके अतिरिक्त गांवों की सफाई तथा सेनेटाइजेशन की पर्याप्त व्यवस्था भी सुनिश्चित की जायेगी। विधवा पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन के लिये कैम्प भी आयोजित किये जायेंगे। खाद्य सुरक्षा के अन्तर्गत पात्र परिवारों को राशन कार्ड तथा सामग्री के वितरण की व्यवस्था के अतिरिक्त धात्री महिलाओं व कुपोषित बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं पोषाहार वितरण हेतु प्रबन्ध किया जायेगा। गरीब बालिकाओं के विवाह हेतु संचालित योजना का लाभ पात्र बालिकाओं को दिये जाने की व्यवस्था भी आयोजित कार्यक्रम में की जायेगी। उन्होंने जनसामान्य से अपील भी की है कि कार्यक्रमों में प्रतिभाग कर विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के विषय में जानकारी प्राप्त कर लाभान्वित हो सकते हैं। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी भानू प्रताप सिंह, जिला परियोजना अधिकारी मनोज कुमार राय, उप जिलाधिकारी भदोही आशीष मिश्र, उप जिलाधिकारी औराई चंद्रशेखर, जिला अर्थसंख्या अधिकारी संतोष कुमार सिंह, मुख्य चिकित्सधिकारी संतोष कुमार चक, कृषि निदेशक अरविन्द कुमार सिंह, उद्योग अधिकारी हरेंद्र प्रताप सिंह, समाज कल्याण अधिकारी महेंद्र यादव, जिला खादी ग्रामोद्योग अधिकारी जवाहर लाल, एवं संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

जलजमाव से घिरा बाबूसराय सारीपुर मार्ग

अखंड भारत संदेश

बाबूसराय। औराई विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत बाबूसराय सारीपुर मार्ग की बदहाल व्यवस्था से आम आदमी की परेशानी इस बरसात में बढ़ गई है। विभागीय अधिकारियों और स्थानीय जन प्रतिनिधियों की लापरवाही के चलते ग्रामीणों को आने जाने के लिए रास्ता भी नहीं रह गया है। बताया जाता है कि बाबूसराय लेकर सारीपुर तथा आसपास के गांव को जोड़ने वाले मार्ग पर जल निकासी के लिए आज तक कोई भी व्यवस्था नहीं हो पाई। इसका नतीजा यह है कि थोड़ी बरसात में मार्ग पानी फिर डूब जाता है। लोगों को आने जाने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। वाहन तो दूर जलजमाव के बीच मार्ग से लोगों को पैदल चलने के लिए भी जगह नहीं है। इस रास्ते से दर्जनों गांव पड़ते हैं ऐसी स्थिति कई हफ्तों से बनी हुई है। इस रास्ते को देखकर जिम्मेदार लोग भी अपनी आँख मूदे हुए हैं। समस्याओ का सामना कर रहे स्थानीय लोग काफी आक्रोशित हैं।

शिविर में 40 मरीजों का हुआ परीक्षण

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज। नगर में शुक्रवार को निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे प्रमुख आयुर्वेद चिकित्सक ने मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण कर बचाव के उपाय बताए। ज्ञानपुर रोड नारायणी कटरा लाल मेडिकल में दिन में दस बजे से चार बजे तक आयोजित शिविर में श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद के सुप्रसिद्ध वैद्य सत्य नारायण मिश्रा ने मधुमेह, बवासीर, अस्थमा, कंपवात, जोड़ दर्द चर्म रोग आदि का परीक्षण कर निःशुल्क चिकित्सा परामर्श दिया।

सीएमओ का औचक निरीक्षण अनुपस्थित दो कर्मी निलंबित

अखंड भारत संदेश

सुरियावां। जिले के अस्पतालों व उप केंद्रों में व्यवस्था सुधारने के उद्देश्य से मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. एसके चक ने शुक्रवार को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र महजुदा में निरीक्षण के दौरान बड़ी कार्रवाई कर वार्ड ब्याय एवं स्वीपर को निलंबित कर दिया। वहीं दो कर्मचारी अनुपस्थित पाए जाने पर कार्रवाई करने का निर्देश दिया। जानकारी के मुताबिक औचक निरीक्षण के दौरान साफ सफाई का अभाव मिलने पर स्वीपर महेंद्र एवं वार्ड ब्याय विनय कुमार बिंद को निलंबित कर दिया। इसके अलावा प्रयोगशाला प्राविधिक जयप्रकाश और महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता शशि कला भी निरीक्षण के दौरान अनुपस्थिति पाई गई। इन दोनों लोगों पर भी कार्रवाई करने का निर्देश दिया। जनपद में चिकित्सा व्यवस्था बेपटरी हो चुकी थी, लेकिन जबसे सीएमओ डॉ एसके चक ने कार्यभार संभाला है, इनके निरीक्षण से कुछ सुधार हुआ है। सीएमओ के औचक निरीक्षण से अस्पतालों में खलबली मची रही ।

पीएम के जन्म दिन पर गरीबों में फल व मास्क वितरण

अखंड भारत संदेश

भदोही। देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का शुक्रवार को 71वां जन्म दिन भाजपा जनो द्वारा धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान गरीबों में फल वितरण भी हुआ। नगर के महाराजा बलवंत सिंह हास्पिटल सहित विभिन्न निजी चिकित्सालय में सुबह 10 बजे पालिकाध्यक्ष अशोक जायसवाल व भाजपा जिला महामंत्री लालता प्रसाद सोनकर अलग-अलग दर्जनों कार्यकर्ताओं संग एमबीएस पहुंचे और गरीबों में फल वितरण किया। पालिकाध्यक्ष ने कहा कि सबका साथ सबका विकास, स्वच्छ भारत मिशन का नारा देकर देश का नाम विश्व पटल पर रौशन करने वाले प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी का जन्म दिन गरीबों के बीच मनाया जा रहा है। आज ऐसे महान राजनेता का जन्म दिन है, जिसने चुनावी घोषणाओं को पूरा किया है।

चाहे कश्मीर से धारा 370 हटाने की बात हो, मुस्लिम महिलाओं के तीन तलाक से सम्बंधित समस्या व भगवान श्रीराम के अयोध्या में भव्य मंदिर निर्माण सभी को अमल में ला दिया। देश के पीएम ने समाज के अति गरीब परिवारों को पीएम आवास योजना व निःशुल्क खाद्यान्न वितरण कर लाभान्वित किया है। जन्म दिन सेवा सप्ताह के रुप में मनाया गया। महाराजा बलवंत सिंह राजकीय चिकित्सालय, संतुष्टि हॉस्पिटल तथा बनवासी महिलाओं में फल एवं मास्क वितरण किया गया। इस दौरान दिलीप गुप्ता, डा.अजय बरनवाल, विनीत बरनवाल, गिरधारी जायसवाल, प्रिंस गुप्ता, रचना, अरविंद मौर्या, जितेंद्र यादव, आशीष जायसवाल, मुन्नीलाल यादव, रामनरेश चौहान, मो. अली सिद्दीकी, प्रभु सेठ आदि सेवा कार्य में शामिल रहे।

स्वयंसेवी संस्था माय होम इंडिया ने मनाया पीएम का जन्मदिन

अखंड भारत संदेश

भदोही। सुरियावां विकास खंड के महजूदा गांव में स्वयंसेवी संस्था माय होम इंडिया ने किसानों में पौधे बांटकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जन्म दिन मनाया। प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर किसानों ने भी पौधे पाकर खुशी जाहिर की और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लंबी उम्र की कामना की। किसानों ने संस्था द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की। इस दौरान संस्था के जिला संयोजक सुशील मिश्रा ने संस्था द्वारा किए गए कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संस्था द्वारा कोरोना काल में सराहनीय कार्य किया गया। जिसके लिए संस्था को स्वास्थ्य विभाग द्वारा दो बार प्रशस्ति पत्र प्राप्त हो चुका है। संस्था को शुरू में सैंपलिंग के लिए गांव-गांव कैंप लगवाना, कोविड से बचाव के लिए वैक्सीनेशन के लिए जागरूक करना, मोबाइल वैन द्वारा माइक से लोगों को जागरुक किया गया। लगातार कोरोना काल में संस्था द्वारा कार्य किया जा रहा है। वहीं एक हजार से अधिक वृक्षों को भी विगत कुछ दिनों में वृक्षारोपण कराया गया।

विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना अंतर्गत 250 लाभार्थियों में डीएम ने किया टूल किट का वितरण

कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित कार्यक्रम में विधायक औराई व जिलाधिकारी ने लाभार्थियों में बांटा टूल किट

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा 'विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना' के अन्तर्गत प्रशिक्षित लाभार्थियों को टूलकिट तथा 'प्रधानमंत्री मुद्रा योजना' के तहत ऋण वितरित किया गया।

इसी क्रम में आज कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी आर्यका अखौरी एवं विधायक औराई दीनानाथ भाष्कर की अध्यक्षता में 'विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना' के अन्तर्गत प्रशिक्षित लाभार्थियों को टूलकिट तथा 'प्रधानमंत्री मुद्रा योजना' के तहत ऋण वितरित किया गया। जनपद में टूलकिट तथा ऋण वितरण का वृहद कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिले में 'विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना' के प्रशिक्षित लाभार्थियों को उद्योग विभाग ज्ञानपुर के द्वारा टूलकिट वितरण के साथ-साथ अधिक लाभार्थियों को 'प्रधानमंत्री मुद्रा योजना' से जोड़ा जा रहा है। जिले में जिलाधिकारी आर्यका अखौरी के द्वारा श्रम सम्मान योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षित कुल 250 लाभार्थियों टूल किट वितरित किया गया। जिसमें सिलाई, लोहार, सोनार, टोकरी बुनकर, हलवाई, मोची, राज मिस्त्री ये सम्बंधित ट्रेडों के लाभार्थियों को वितरित किया गया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा 'विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना' के अन्तर्गत प्रशिक्षित लाभार्थियों को टूलकिट तथा 'प्रधानमंत्री मुद्रा योजना' के तहत ऋण वितरित किया गया, 'विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना' के 21,000 प्रशिक्षित लाभार्थियों को टूलकिट वितरण के साथ-साथ 11,000 से अधिक लाभार्थियों को 'प्रधानमंत्री मुद्रा योजना' से ऋण वितरित कर जोड़ा गया का लखनऊ से लाइव प्रसारण भी किया गया। इस अवसर पर खादी ग्रामोद्योग विभाग द्वारा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना के तहत 05 लाभार्थियों को स्वीकृत प्रमाण देकर लाभान्वित किया गया। इस अवसर पर जिला उद्योग अधिकारी, जिला सूचना अधिकारी प्रवीण मालवीय, जिला खादी ग्रामोद्योग अधिकारी जवाहर लाल, वरिष्ठ लेखाकार आनंद कुमार, एसटी रविरंजन, ध्रुव सिंह, उमेश चंद्र वर्मा, एवं संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

देश की जनता को गुमराह कर रही है भाजपा : जजलाल

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिला कांग्रेस कमेटी के महासचिव जजलाल राय ने कहा कि आजादी की लड़ाई में कांग्रेस की बड़ी भूमिका थी। इसके बाद आजादी को बचाए रखने का काम भी कांग्रेस ने ही किया था। आजादी के बाद देश खस्ताहाल में था और यहां उद्योग धंधे ठप पड़ गए थे। देश 562 छोटी बड़ी रियासतों में बटा हुआ था। इनका एकीकरण कांग्रेस ने ही किया। देश में लोकतंत्र की स्थापना की। संवैधानिक संस्थाओं को खड़ा करके उन्हें ताकतवर बनाया। सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े उद्योगों जैसे सेल भेल बीएसएनल शिपिंग कारपोरेशन इंडियन एयरलाइंस एनटीपीसी कोल इंडिया रेलवे एनएमडीसी ओएनजीसी आदि का निर्माण किया। आईआईटी आईआईएम एम्स से लेकर इसरो और परमाणु अनुसंधान केंद्र की स्थापना की। हरित क्रांति के जरिए देश को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाया। श्वेत क्रांति ने दूध की नदियां बहा दी। पाकिस्तान को तोड़कर बांग्लादेश को एक स्वतंत्र राष्ट्र बनाया। सूचना क्रांति के साथ देश को 21 वीं सदी में पहुंचाया। दुनिया भर में भारत का नाम रोशन किया। देश में आर्थिक उदारीकरण की नींव रखी। जिससे भारत आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर हुआ। देश को शिक्षा, सूचना, भोजन और काम का अधिकार कांग्रेस की सरकार ने दिया। श्री राय ने भदोही विधानसभा क्षेत्र के ग्रामसभा जगरनाथपुर, धनवतियां, गोपालपुर गांव में लोगों से जनसंपर्क कर कांग्रेस की उपलब्धियां गिनाई। कहा कि मोदी सरकार की स्वच्छ भारत अभियान से ज्यादा शौचालय कांग्रेस सरकार की निर्मल ग्राम योजना में और प्रधानमंत्री आवास से ज्यादा मकान इंदिरा आवास के तहत बने।

इतना ही नहीं कांग्रेस सरकार द्वारा लाई गई मनरेगा, पीडीएस जैसी योजनाओं ने कोरोना के समय करोड़ों देशवासियों की जिंदगी का संकट दूर किया। श्री राय ने कांग्रेस द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्य पर प्रकाश डालते हुए लोगों को बताया कि आईआईएम, आईआईटी, एम्स, डीआरडीओ, तारापुर परमाणु ऊर्जा केंद्र, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, भाखड़ा नंगल डैम, श्वेत क्रांति, नीली क्रांति, कंप्यूटर क्रांति, पंचायती राज, जवाहर नवोदय विद्यालय, दलित- पिछड़ों एवं आर्थिक रूप से कमजोर छात्र छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति, चंद्रयान, मंगलयान, अमेरिका से परमाणु करार, आर्थिक उदारीकरण, आदि महत्वपूर्ण कार्य जो कांग्रेस ने 70 सालों में किया वह भाजपा 70 जन्म में भी वह काम नहीं कर सकती। जनसंपर्क के दौरान ओमप्रकाश तिवारी, रामाअसरे बिंद, गफ्फार अली, महेश मिश्रा, मोनू तिवारी, लालमणिराम, श्यामलाल प्रजापति, देवीप्रसाद राय, जवाहिर लाल, कैलाशनाथ सरोज, गुलाबचंद सोनकर, मुनरा देवी आदि लोग शामिल रहे।

जनसंपर्क कर गिनाई गई कांग्रेस शासनकाल की उपलब्धियां

चरवा नगर पंचायत में दो दर्जन से अधिक माकान बारिश में गिरे

अखंड भारत संदेश

चायल,कौशाम्बी। बीते तीन दिनों से हो रही मूसलाधार बारिश से चरवा नगर पंचायत छेत्र के आलग-अलग वार्डों मे दो दर्जन से अधिक कच्चे मकान धराशाई हो गए,आलम ये है कि इन गरीबों के पास अब खुले आसमान के नीचे पन्नी डाल कर रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। ऐसी स्थित में भी सरकारी मुलाजिम क्षेत्र में कहीं नहीं दिखाई दे रहे हैं। लोग लेखपाल शिवनारायण को फोन लगाते लगाते थक गए मगर लेखपाल के ऊपर कोई असर नहीं हुआ। चरवा उत्तर थोक,गांधी नगर वार्ड में भरी बारिश से सरस्वती प्रसाद,रमा देवी, अरुण कुमार, शर्मिला देवी, सतीश कुमार, प्रेम नारायण आदि का मकान जमींदोज हो गया। वहीं अम्बेडकर नगर चरवा खुर्द में ही सबसे ज्यादा कच्चे मकान गिर गए, जिनमें बिट्टन देवी, सुनीता देवी, शिव प्रसाद रैदास, पंचम लाल, राम चन्द्र, नत्थू लाल, मेवा लाल,राम सुमेर, मुन्ना लाल, राम बहोरी, शंकर लाल, केदार नाथ, रुद्र प्रताप,नीलम आदि का मकान इस बारिश में छतिग्रस्त हो गया हैं। और अयोध्या का पूरा सहित चन्द्र मणि नगर में भी लोगो पास किसी भी प्रकार की व्यवस्था ना होने की वजह से पन्नी डाल कर इस बेरहम बारिश मे जीवन बीतने को मजबूर है। इन सभी लोगों ने चरवा नगर पंचायत कार्यालय में प्रधान मंत्री आवास योजना के तहत फार्म जमा कर रक्खा है मगर इनको एक अदद छत कब मिलेगी और इनके जीवन में कब खुशहाली आएगी ये कोई नहीं जानता है।

भाजपा नेता नें बच्चों को बांटा ड्रेस व कापी किताबें

सिराथू,कौशाम्बी। आदर्श ग्राम उद्योग जन सेवा समिति सिराथू कौशाम्बी द्वारा देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्म दिवस के अवसर पर सिराथू नगर पंचायत के दर्जन भर से अधिक बच्चों को ड्रेस कॉपी किताबें व फल वितरित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता अरुण केशरवानी मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहे। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा बच्चे देश का भविष्य एवं समाज का आईना होते हैं हमें इन्हें अच्छी शिक्षा दीक्षा देकर आगे बढ़ाना चाहिए जिससे यह अपने घर परिवार और देश का नाम रोशन कर सकें।

कौशाम्बी में पेड़ से लटकी मिली युवक की लाश

हत्या और आत्महत्या के बीच पुलिस ने शुरू की जांच

अखंड भारत संदेश

सिराथू,कौशाम्बी। कड़ा धाम कोतवाली क्षेत्र के मोती का पुरवा गांव के बाहर युवक की लाश पेड़ से लटकी मिली है। शुक्रवार की सुबह ग्रामीणों ने लाश देख पुलिस को सूचना दी।

मौके पर पहुंची पुलिस ने युवक की पहचान फतेहपुर जनपद निवासी कुलदीप सरोज के रूप में की है। पुलिस ने घर वालो को सूचना देकर शव कब्जे में ले लिया है। पुलिस की प्राइमरी जांच में मामला प्रेम सम्बन्ध के हत्या और आत्महत्या से जुड़े होने की आशंका जताई जा रही है। फतेहपुर के सुल्तानपुर घोष थाना क्षेत्र के काजीपुर प्रेम नगर निवासी कुलदीप सरोज (20) भग्गू की लाश कड़ा धाम थाना क्षेत्र के मोती का पुरवा गांव में पेड़ से लटकती मिली। ग्रामीणों ने लाश देख पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची को युवक कुलदीप सरोज की लाश बैर के पेड़ से रस्सी के सहारे टंगी मिली। शव के पास साइकिल पड़ी थी। संभावना जताई जा रही है कि कुलदीप उसी के सहारे सीमावर्ती जनपद फतेहपुर से घटना स्थल तक पंहुचा होगा। कुलदीप की पहचान पुलिस ने उसकी नौढिया गांव निवासी एक रिस्तेदार से कराई है।

पुलिस ने कुलदीप के घर को सुचना भेज अग्रिम कार्यवाही के लिए थाने बुलाया है। फिलहाल पुलिस ने पेड़ से उतार शव को कब्जे में ले लिया है। पुलिस की प्रारंभिक जाँच में युवक की मौत का कारण प्रेम सम्बन्धो से जुड़ा हो सकता है। लिहाजा पुलिस हत्या और आत्महत्या के दोनों पहलुओं में जांच कर रही है। इंस्पेक्टर कड़ा धाम सीबी मौर्या ने बताया, मोती का पुरवा गांव में शव मिलने की सूचना पर पुलिस ने उसे कब्जे में लिया है। शव की शिनाख्त कुलदीप निवासी फतेहपुर जनपद थाना सुल्तामपुर घोस के रूप में की गई है। परिजनों को सूचना दी गई है। पुलिस हत्या और आत्महत्या के बिन्दुओ पर जांच कर रही है। जल्द घटना का खुलासा किया जायेगा।

फतेहपुर जिले प्रेम नगर का रहने वाला है मृत युवक

सम्पादकीय

बच गया वोडाफोन, एजीआर पर एक और पहल हो

टेलिकॉम क्षेत्र को सरकार ने बड़ी राहत दी है, कंपनियों को चार साल तक एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू (एजीआर) और स्पेक्ट्रम का बकाया नहीं चुकाना होगा। एजीआर में अब 'नॉन-टेलिकॉम' आइटम शामिल नहीं होंगे सरकार ने टेलिकॉम क्षेत्र को बड़ी राहत दी है। कंपनियों को चार साल तक एडजस्टेड ग्रॉस रेवेन्यू (एजीआर) और स्पेक्ट्रम का बकाया नहीं चुकाना होगा। एजीआर की परिभाषा बदली गई है। इसमें अब 'नॉन-टेलिकॉम' आइटम शामिल नहीं होंगे। स्पेक्ट्रम यूसेज चार्ज (एसयूसी) को भी जीरो कर दिया गया है। ये दोनों उपाय अब से लागू होंगे, न कि पिछली तारीख से। इनसे कर्ज से दबी दूरसंचार कंपनियों को बड़ी राहत मिलेगी। इस क्षेत्र पर 8 लाख करोड़ का कर्ज है। इनमें से 1.8 लाख करोड़ रुपये का बकाया तो वोडाफोन आइडिया पर ही है। वोडाफोन आइडिया को अभी कारोबार से इतनी नकदी नहीं मिल रही है कि वह कर्ज भी चुका सके और उसके साथ अपने नेटवर्क के विस्तार के लिए निवेश भी कर सके। इसीलिए कंपनी में बड़ी हिस्सेदारी रखने वाले आदित्य बिड़ला ग्रुप ने कुछ समय पहले सरकार से राहत की अपील की थी। उसने यह भी कहा था कि सरकार चाहे तो वह वोडाफोन आइडिया में अपनी हिस्सेदारी पब्लिक सेक्टर की किसी कंपनी को बेचने को तैयार है। रिलायंस जियो, भारती एयरटेल, वोडाफोन आइडिया के बाद बीएसएनएल इस क्षेत्र की चौथी कंपनी है। अच्छी बात यह है कि इन उपायों से वोडाफोन आइडिया के डूबने का डर खत्म हो गया है। सरकार ने जो कदम उठाए हैं, उनमें से कुछ का लाभ तो कंपनियों को तुरंत मिलेगा।

तत्काल राहत एजीआर से जुड़ी देनदारियों और स्पेक्ट्रम के बकाया भुगतान को लेकर मिली है। केंद्र ने यह भी कहा है कि वह बकाया रकम के बदले कंपनियों में हिस्सेदारी भी लेने को तैयार है, बशर्ते वे इसके लिए राजी हों। यह वोडाफोन आइडिया के लिए बड़ी राहत है। मसलन, उसके लिए निवेशकों से पैसा जुटाना आसान हो जाएगा। इस क्षेत्र में बिना इजाजत 100 फीसदी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की भी मंजूरी दी गई है। यानी कोई कंपनी चाहे तो विदेशी निवेशकों से भी फंड जुटा सकती है। इसके बावजूद वोडाफोन आइडिया के लिए आने वाला वक्त चुनौतीपूर्ण बना रहेगा। उसे सरकार, बैंकों और वित्तीय संस्थानों का कर्ज चुकाने के साथ अपने नेटवर्क को बेहतर बनाने के लिए निवेश करना होगा। सरकार ने राहत पैकेज में एसयूसी भी खत्म कर दिया है, लेकिन यह राहत पिछले बकाया पर नहीं मिलेगी। दूरसंचार कंपनियों पर बकाया एजीआर का 70 प्रतिशत तक पेनल्टी और ब्याज की रकम है। अगर सरकार ने मान लिया है कि कंपनियों के नॉन-टेलिकॉम रेवेन्यू में उसकी हिस्सेदारी नहीं है तो यह राहत पिछले बकाया पर भी मिलनी चाहिए थी। बेशक, इसमें सुप्रीम कोर्ट का फैसला एक पेच है, लेकिन इस बाधा को नया कानून बनाकर दूर किया जा सकता है। सरकार को इसकी पहल करनी चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि दुनिया आज 5जी की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा है तो भारत इसमें पीछे नहीं रह सकता। हम पहले ही इस मामले में तय समयसीमा से पीछे चल रहे हैं।

भारतीय राजनीति में नरेंद्र मोदी होने के मायने

प्रणय विक्रम सिंह

भारत 'नवनिर्माण' की अमृत बेला से गुजर रहा है। 'अंत्योदय' के दर्शन में विकास को ढाल कर 'राष्ट्रोदय' की स्वर्णिम संकल्पना को साकार करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस युगांतरकारी 'नव निर्माण' के वास्तुकार हैं। वंचितों, शोषितों, उपेक्षितों, उपहासितों, किसानों और महिलाओं के सर्वांगीण उत्थान को समर्पित यह 'निर्माण प्रक्रिया' भारत के पुरातन गौरव की पुनर्स्थापना की चिर उत्कंठा का परिणाम है। अभिलाषा महान किंतु अनेकानेक व्यवधान। लेकिन जब नेतृत्वकर्ता नरेंद्र मोदी जैसा दृढ़ संकल्पी हो तो समस्याओं के समाधान निकल ही आते हैं। दशकों से देश में अलगाव की आग धधकाने वाले अनुच्छेद 370 और धारा 35ँ जैसे नासूर के शांतिपूर्ण निर्मूलन से मोदी की दृढ़ इच्छाशक्ति को बखूबी समझा जा सकता है। ऐसे ही सदियों से मजहबी आतंकवाद व राजनीतिक तुष्टीकरण की कुचेष्टाओं के कारण सप्रयास लम्बित किए गए श्रीरामजन्मस्थान विवाद का शांतिपूर्ण एवं विधि सम्मत समाधान निकाल कर शताब्दियों से आहत सनातन आस्था को उसका गौरव वापस लौटने का अनिर्वचनीय कार्य भी नरेंद्र मोदी की प्रबल तेजस्विता का अप्रतिम उदाहरण है। यही नहीं, तीन तलाक की 'कुप्रथा' का अंत कर महिलाओं को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर उपलब्ध करा कर नरेंद्र मोदी ने भारतीय लोकतंत्र को नई ऊंचाइयां दीं और समतामूलक समाज की स्थापना में मील का पत्थर स्थापित किया। इन सबके मध्य, 'स्वच्छ भारत अभियान' के माध्यम से घर-घर बने शौचालयों ने स्वास्थ्य सुरक्षा के साथ-साथ नारी शक्ति के 'सम्मान' संरक्षण का जो अतुल्य कार्य किया है, उसके लिए तो मानव सभ्यता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सदैव ऋणी रहेगी। मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं कि वैश्विक महामारी कोरोना की क्रूर विभीषिका के कारण 'आस व विश्वास' की टूटती डोर पर असहाय और असहज स्थिति में बैठे भारत के जन गण मन में एकाएक 'जान, जहान एवं जीविका' के सुरक्षित होने के सुखद अहसास से उत्पन्न अनिर्वचनीय 'आत्मविश्वास' का नाम हैं नरेंद्र मोदी।

यही कारण है कि इदं राष्ट्राय इदं न ममङ्ग जैसे राष्ट्र साधना के पुनीत मंत्र को चरितार्थ करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज, राष्ट्रीय आशा, अपेक्षा और अभिलाषा का केंद्र बन गए हैं। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' की कार्य संस्कृति को मूर्तरूप प्रदान करते 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के शिल्पकार मोदी, नए भारतङ्ग के विश्वकर्मा हैं। नया भारत, जो शत्रु को घर में घुसकर मारता है। जो, डिजिटल इण्डिया की तरंगों पर थिरकता है। जिसका प्रगति पथ, अंतिम व्यक्ति से अंतरिक्ष तक है। जहां राष्ट्र रक्षा ही धर्म है। जहां अंत्योदय से राष्ट्रोदयङ्ग एक राष्ट्रीय संकल्प है। जहां, आतंक और अनियमितता का निर्मूलन राष्ट्रीय विचार है। मां और मातृभूमि के प्रति अगाध श्रद्धा से पूरित और पं. दीनदयाल उपाध्याय की राष्ट्रवादी विचारधारा में दीक्षित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भारतीय जनमानस के ऐसे महानायक हैं, जो आस्था और आधुनिकता के संगम तथा परंपरा और प्रगतिशीलता के सेतुबंध हैं। वे एक तरफ भारत की सकल आस्था के केंद्र प्रभु श्रीरामजन्मस्थान पर बन रहे दिव्य-भव्य राम मंदिर के निर्माण, पावन संगमस्थली प्रयागराज में विश्व प्रसिद्ध कुम्भ के आयोजन और हजारों वर्षों पूर्व भारतीय मनीषियों द्वारा मानवता को भेंट की गई अतुल्य विधा योग से सम्पूर्ण जगत का साक्षात्कार कराने जैसे दुसाध्य कार्यों को निर्णायक दिशा देते हैं। वहीं, दूसरी तरफ मुद्रा योजना, स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया जैसी योजनाओं द्वारा भारतीय उद्यमशीलता एवं नवाचार को नए आयाम प्रदान करते हैं। यह कोई छोटी उपलब्धि नहीं है कि भारत जैसा विकासशील राष्ट्र एक नहीं, दो प्रकार की स्वदेशी कोविड वैक्सीन का निर्माण कर सम्पूर्ण विश्व को हतप्रभ कर देता है। ऐसी ही अभूतपूर्व उपलब्धियों को राजनीतिक जगत 'मोदी मैजिक' की संज्ञा देता है। यही नहीं अनेक मित्र

राष्ट्रों को निःशुल्क कोविड वैक्सीन उपलब्ध करवाकर भारत की महान 'वसुधैव कुटुंबकम' संस्कृति से दुनिया को परिचित कराया। हर भारतीय को निःशुल्क कोरोना वैक्सीन लगवाने का निर्णय और उसे सफलतापूर्वक पूर्ण करने का कार्य सिर्फ मोदी जैसा स्टेट्समैन ही कर सकता है। डिजिटल होता इण्डिया, मोदी की दूरदृष्टि का ही सुफल है। लोकल के लिए वोकलङ्ग होकर मोदी ने स्वदेशी से स्वशासन की संकल्पना को स्वर प्रदान कर आत्मनिर्भर भारतङ्ग की बुनियाद रखने का कार्य किया है। भारतीय लोकतंत्र में गरीबी उन्मूलन के लिए 'नारे' तो बड़े क्रांतिकारी बने, लेकिन गरीबी हटाने के लिए फैसलाकुन प्रयासों की हमेशा कमी रही। अतः गरीबी सुरसा की तरह बढ़ती गई और निर्धन समुदाय बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी मोहताज हो गया। लेकिन प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी ने विकास को अंत्योदय की अवधारणा से जोड़कर शताब्दियों की पीड़ा को हरने का ऐतिहासिक कार्य किया है। अब देखिए, संसाधनहीनता के चलते दशकों से चूल्हे के धुएं से अपना स्वास्थ्य खोने को विवश महिला शक्ति को उज्ज्वला योजना के माध्यम से निःशुल्क रसोई गैस कनेक्शन प्रदान कर उसे वंचना से मुक्ति दिलाने का कार्य किया। निर्धन समाज को 05 लाख रुपये तक निःशुल्क चिकित्सा सुविधाओं से लाभान्वित करने हेतु शुरू की गई 'आयुष्मान भारत' योजना ने इलाज के लिए गरीबों के खेत और मकानों को बिकने से बचाने का कार्य किया है। अन्नदाता किसानों की आत्महंता बनने की विवशता समझते हुए प्रारम्भ की गई प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, किसान सम्मान निधि, प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई योजना आदि के माध्यम से करोड़ों अन्नदाता किसानों के जीवन में आय का वर्धन और मौसम जनित अस्थिरता का अंत करने का कार्य सम्पन्न हुआ। आज, 'प्रधानमंत्री जनधन योजना' के कारण ही करोड़ों लाभार्थी, सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं से सीधे जुड़ पाए हैं। हरि अनन्त, हरि कथा अनन्ता की भांति 'नए भारत' का निर्माण करती प्रधानमंत्री मोदी द्वारा संचालित योजनाओं की अगणित श्रृंखला के विषय में जितना लिखा जाए, कम है। अधिकांश योजनाओं का जिक्र यहां नहीं हो पाया है, लेकिन निश्चित रूप से वह आमजन के मानस पर अवश्य अंकित होंगी। कह सकते हैं कि ग्रामोदय से भारत उदय तक, प्रधानमंत्री आवास योजना से किसान सम्मान निधि तक, अनुच्छेद-370 से तीन तलाक की कुप्रथा हटाने तक मोदी के हर निर्णय ने भारत और भारतीय लोकतंत्र को मजबूती प्रदान की है। इन सबके दरम्यान अनेक सियासी जमातें और बहुत सारे लोग विभिन्न कारणों से मोदी से असहमत भी हैं, लेकिन इन तमाम असहमतियों और चुनौतियों के मध्य मोदीङ्ग आज भारतीय राजनीति के केंद्र भी हैं, परिधि भी हैं।

दरअसल, भारतीय राजनीति में नरेंद्र मोदी होने के अनेक मायने हैं।

जन्मदिन विशेष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हिंद की सियासत में अंत्योदयङ्ग का प्रतीक हैं। उनकी उपस्थिति भारतीय लोकतंत्र को परिवारवाद, जातीय अधिनायकवाद तथा कुलीन श्रेष्ठताबोध की जड़ता से मुक्ति का अहसास कराती है। इतनी विराटता कि कभी वीजा देने से इंकार करने वाला महाबली अमेरिका 'हाउडी मोदी' के जयघोष के साथ उनका नागरिक अभिनंदन करता है। सरलता इतनी कि पतितपावनी मां गंगा के तीर पर स्वच्छताकर्मियों के चरण धोकर कृष्ण-सुदामा की स्मृति को जीवंत कर देते हैं। प्रत्येक स्थिति में मित्रता निभाने के लिए प्रसिद्ध नरेंद्र मोदी शत्रुओं को सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक का उपहारङ्ग देकर हतप्रभ कर देते हैं। यह मोदी इफेक्टङ्ग ही है, जिसके कारण हम सभी ने पाक और चीन के मुद्दे पर विश्व जनमत को 'भारतपक्षीय' होते हुए अनेक बार देखा है। भारतीय राजनीति में जीवित किंवदंतीङ्ग बन चुके अपराजेयङ्ग छवि वाले मोदी के विषय में जितनी अधिक बात उनके समर्थक करते हैं, उससे कहीं अधिक चिंतन उनके विरोधी करते हैं। मतलब समर्थक और विरोधी दोनों के मन पर मन की बातङ्ग करने वाले मोदी का कब्जा है। यह कब्जा हमेशा बरकरार रहे। ताकि लोकतंत्र आबाद रहे। फिलहाल, सहमति और असहमति दोनों स्थितियों में भारतीय लोकतंत्र को सात्विक मर्यादाओं का पुनर्पाठ कराने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनकी 71वीं वर्षगांठ पर दिली मुबारकबाद।

अफगानिस्तान : भारत अपने हितों के बारे में साफ संदेश दे!

जगदीश रत्तनाणी

कूटनीति की मांग है कि वार्ता के द्वार हमेशा खुले रखे जाएं और विश्वास का माहौल बनाया जाए तथा प्रत्यक्ष सहयोग के क्षेत्रों को तलाशा जाए, भले ही तालिबान कितनी भी नफरत करने वाले दिखाई देते हों। यही एक मार्ग है जिसके जरिए भारत अफगानिस्तान में अपने हितों एवं वहां की बुनियादी अधोसंरचना में सुधार और अन्य परिसंपत्तियों में किए गए अपने निवेश की रक्षा कर सकता है। यदि ऐसा जल्दी नहीं किया गया तो अमेरिका अफगानिस्तान में लड़ाई हार ही चुका है, भारत भी यह लड़ाई हार जाएगा।अफगानिस्तान के ताजा घटनाक्रम ने कई जटिल संदेश भेजे हैं लेकिन उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि यदि योद्धा लक्ष्य प्राप्ति के लिए लड़ रहे हों तो धन, शस्त्र और सैनिकों की अंतहीन आपूर्ति के बावजूद उबड़-खाबड़ भूमि पर कब्जा करने में मदद नहीं कर सकते। पूर्व प्रधानमंत्री दिवंगत वीपी सिंह का कहना था कि आप पैसे की कमी के कारण चुनाव हार सकते हैं लेकिन आप कभी चुनाव सिर्फ इसलिए नहीं जीत सकते कि आपके पास पैसा है।, युद्ध और व्यवसाय के बारे में भी यह कहा जा सकता है कि आप किसी देश की सीमा को धन, बंदूकों या टेक्नालॉजी के अभाव में हार सकते हैं पर आप उसे सिर्फ इसलिए नहीं जीत सकते क्योंकि आपके पास धन, टेक्नालॉजी या मनुष्य बल या बड़े वेतनभोगी सलाहकारों और भाड़े के सैनिकों की बड़ी तादाद है।

वास्तव में प्रश्न यह है कि एक सेना लड़ने के लिए क्यों तैयार होती है और लड़ाई में क्यों बनी रहती है एक कहावत है कि किसी लड़ाई में कुत्ते की मौजूदगी कम महत्वपूर्ण है बनिस्बत इसके कि कुत्ते में लड़ाई का कितना जज्बा है। जिस अफगान फौज को अमेरिका ने प्रशिक्षित किया था और आशा की थी कि वह अफगानिस्तान की सुरक्षा के कर्तव्य को निभाएगी, वह इस उम्मीद पर खरी नहीं उतरी कि अब इनकी निगहबानी में तालिबान कभी लौट नहीं पाएंगे। जबरन खड़ी की गई इस फौज का एकमात्र उद्देश्य था कि अमेरिकी धन का प्रवाह लगातार बना रहे और यह धन जितना आता गया इसने फौज को उतना ही भ्रष्ट और कमजोर किया। यह तालिबानियों की तारीफ नहीं है लेकिन उनमें कुछ करने का जज्बा था और एक दिशा भी थी जो उनका लक्ष्य था। अमेरिका के समर्थन से बनी अफगान फौज गोरी अमेरिकी सेना के लिए भाड़े के फौजी बने रहे जिन्हें अमेरिका ने युद्ध को निजी व्यवसाय बनाने के अपने उद्देश्य के लिए आयातित कर रखा था। अमेरिकियों को ये सारी बातें किसी अन्य से ज्यादा मालूम थीं। अफगानिस्तान से सेना की वापसी के अमेरिकी सरकार के फैसले पर आश्चर्य, गुस्सा या आलोचना करनी हो तो करें पर इस बात पर किसी को संदेह नहीं था कि यहां तालिबानियों की वापसी होगी। कम से कम अमेरिकी दृष्टिकोण से देखें तो भले ही यह तुरंत न हो पर इस स्थिति को टालना असंभव था। जो कुछ भी तत्काल नतीजे सामने आए हैं वे उसके साथ ही रहना चाहते हैं और यह इतना बुरा भी नहीं है जितना पहले संपर्क माध्यमों में बताया जा रहा था। यह इसलिए है क्योंकि अब पता चल गया है कि अमेरिका यह सब समझता था और इसलिए उसने तालिबानी नेताओं से दोस्ताना संपर्क बनाये रखे थे। तालिबानियों की वापसी के संकेत दुनिया को आज नहीं बल्कि एक दशक पूर्व ही मिल चुके थे। सैन्य मामलों के विश्लेषक जॉन कुक ने 2012 में अपनी पुस्तक अफगानिस्तान : द परफेक्ट फेलियर, में लिखा था- यदि अफगान सिपाही यह महसूस करते हैं कि वे अपनी यूनिट छोड़ सकते हैं तो वह बिना किसी हिचक के छोड़ देंगे और उन्हें इसकी कोई सजा भी नहीं मिलेगी। यदि उनके मन में वापसी की इच्छा होगी तो वे वापस आ जाएंगे। यदि वे लौटते नहीं हैं तो उनकी जगह नए लोगों को भर्ती कर लिया जाएगा। वे फौज में सिर्फ एक कारण से हैं और वह कारण है पैसा।, उसने लिखा था कि अफगानी फौज और ऊर्जा से भरे प्रतिबद्ध तालिबानियों के बीच का अंतर समझना आसान है लेकिन इसे सही करना असंभव है। समय के साथ यह स्थिति और बिगड़ती गई। जब ट्रम्प प्रशासन ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह अफगानिस्तान से फौज की वापसी के लिए कटिबद्ध है तो पिछले 2 वर्षों में पतन की यह रफ्तार और तेज होती गई। अफगानिस्तान में तालिबानियों के आने के पहले ही सेना ने अपनी चौकियां खाली कर दी थीं। तालिबानियों के पास अफीम के अवैध व्यापार से काफी धन है। अमेरिकी इंस्टीट्यूट आफ पीस की 2021 की रिपोर्ट के अनुसार, अफगानिस्तान विश्व में अवैध अफीम का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है जिसके जरिए वह तीन अरब बिलियन अमेरिकी डॉलर की कमाई कर रहा है। इस धंधे में करीब छह लाख पूर्णकालिक लोग काम कर रहे हैं जो अफगानी सुरक्षा बलों में काम कर रहे लोगों की संख्या से दो गुना ज्यादा है। तालिबानियों की वापसी की अपरिहार्यता के बारे में विभिन्न अमेरिकी एजेंसियों की रिपोर्ट पढ़ने लायक है। उदाहरण के लिए, सिगार (स्पेशल इंस्पेक्टर जनरल ऑफ़ अफ़गानिस्तान रिकंस्ट्रक्शन) की 46वीं तिमाही रिपोर्ट में कहा गया है कि अक्टूबर-दिसंबर, 2019 की तिमाही में प्रतिदिन दुश्मन, के 90 हमले हुए। इस तिमाही में कुल 8204 हमले हुए जो इस पूरे दशक में सर्वाधिक थे। हमले बढ़ने पर अफगानी फौजों ने अपनी ओर से सिर्फ 31 प्रतिशत हमलों का जवाब दिया। अफगानी फौज अधिकांश समय मादक पदार्थों के सेवन के कारण बेसुध, थकी हुई और नींद लेने की इच्छुक तथा आदेशों के प्रति अनादरपूर्ण रवैया अपनाने वाली थी। 2019 की समाप्ति तक अमेरिकी फौजों ने कमान संभाली और 70 फीसदी हमलों का प्रतिकार किया। सवाल यह उठता है कि जब अफगानिस्तान में स्थिति बदतर हो रही थी तो नई दिल्ली की क्या सोच थी क्या किसी ने इस बात पर ध्यान दिया था भारतीय उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने अफगानी राष्ट्रपति डॉ.मोहम्मद अशरफ गनी से कहा था कि अफगानिस्तान में स्थिरता और समृद्धि तभी आ पायेगी जब वे पिछले 18 वर्षों की उपलब्धियों को सहेज कर रखते हैं।

धर्म की राजनीति नहीं करते मगर धार्मिक स्थलों पर खूब जाते हैं राहुल

शकील अख्तर

ऐसा नहीं है कि राहुल प्रियंका को वहां की हकीकत से लोगों ने आगाह नहीं करवाया हो। मगर किसी के खिलाफ भी कार्रवाई करने में ये लोग इतनी देर लगाते हैं कि तब तक खेल हो चुका होता है। अभी जी-23 के बागी नेताओं का उदाहरण सबके सामने हैं। खुले आम बगावत के बावजूद उन्हें कोई और बड़ा कांड करने की मोहलत दी जा रही है। उसी जम्मू में जहां अभी जी-23 के नेताओं ने अपना पृथक सम्मेलन किया गुलाम नबी आजाद ने प्रधानमंत्री मोदी की तारीफ की। वहीं वैष्णो देवी यात्रा के बाद राहुल, आजाद के साथ खड़े हुए थे। वही फोटो मीडिया में चले। विपक्ष का नेता कौन है इसे पहचानने का सबसे आसान तरीका है यह देखना कि सत्तापक्ष और उसके सहयोगी जैसे मीडिया किसका विरोध सबसे ज्यादा कर रहे हैं! क्या राहुल गांधी के अलावा विपक्ष का कोई और नेता ऐसा है जिस पर इतने हमले हुए हों सरकार, पार्टी, मीडिया, व्हाट्सएप ग्रुप सब रात दिन लगे रहते हैं। क्यों क्योंकि एक, राहुल डरते नहीं हैं। दो, वे छोटे स्तर पर जाकर किसी का विरोध नहीं करते हैं। तीन, अपने ऊपर हो रहे तमाम गंदे और ब्लो द बेल्ट (अनैतिक, अभद्र) हमलों से भी वे विचलित नहीं हो रहे हैं और चार एवं आखिरी मगर सबसे महत्वपूर्ण की धर्म और जाति की राजनीति से ऊपर उठकर युवा, किसान, मजदूर, गरीब सबकी बात कर रहे हैं। राहुल का यह समावेशी अंदाज ही विभाजन की राजनीति को सबसे ज्यादा परेशान करता है। राहुल धर्म की राजनीति नहीं करते। मगर धार्मिक स्थलों पर खूब जाते हैं। और वह भी एक सामान्य यात्री की तरह, पैदल पहाड़ चढ़ते हुए। अभी वैष्णो देवी की यात्रा पर गए। 14 किलोमीटर का पहाड़ी रास्ता मास्क लगाकर तेज चलते हुए। साथ वालों ने जिनमें सुरक्षाकर्मी भी शामिल थे चढ़ाई पर मास्क उतार लिए मगर राहुल ने लगाए रखा। कैमरों के लिए ऐसे दृश्य बहुत आकर्षक होते हैं। कमेन्ट्री करने वाले रिपोर्टरों के लिए भी। मगर टीवी ने लाइव तो दिखाया नहीं। मगर उसके बाद सवालों की झड़ी लगा दी। उनके सवाल कैसे होते हैं कुछ ऐसे कि यहां क्यों गए वहां क्यों नहीं इस ढाबे पर चाय पी उस पर क्यों नहीं इस आदमी से बात की उससे क्यों नहीं जब चलने में टी शर्ट पहनी तो दर्शन के समय कुरता क्यों एंकर चिल्लाते हैं कि उनके इन सवालों के जवाब नहीं मिल रहे। राहुल देश और समाज के सामने के इन गंभीर सवालों से बच कर भाग रहे हैं।

अगा कभी-कभी ऐसा होता है कि जनता खुद ही जवाब दे देती है। टीवी वालों को तो वह भी महत्व देती नहीं। मगर अभी एक मंत्री को जवाब दे दिया। केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी अमेठी से चुनाव जीत चुकी हैं। मगर उन्हें अभी भी यकीन नहीं होता कि जनता ने उन्हें चुना है। अमेठी में एक लस्सी वाले से उन्होंने पूछा था कि क्या कभी राहुल या गांधी परिवार का कोई व्यक्ति यहां आया है अपने मोबाइल पर बड़ी हसरत से वीडियो बनाते हुए ईरानी जी ने टीवी एंकरों की तरह यह सवाल पूछा था। लस्सी वाले ने शांति से जवाब दिया हां, राहुल जी आए थे और प्रियंका जी भी। स्मृति ईरानी का चेहरा देखने लायक था। उन्हें पता नहीं किस ने अमेठी, रायबरेली में परिवार के बारे में ऐसा सवाल पूछने की सलाह दी थी या तो वह व्यक्ति अमेठी रायबरेली का नहीं था या स्मृति ईरानी का शुभचिन्तक नहीं था। ईरानी जी वहां परिवार के साथ जाते रहने वाले किसी पत्रकार से ही पूछ लेतीं तो वह बता देता कि यह लोग सबसे मिलते हैं। हर जगह जाते हैं। दर्जनों पत्रकार ऐसे हैं जो बरसों से अमेठी रायबरेली जा रहे हैं। इनमें से कई भक्त बनकर अब संपादक, एंकर बन गए हैं। राहुल के खिलाफ किसी भी स्तर तक जाने को तैयार रहते हैं। इन्हीं से अगर ईरानी जी पूछ लेतीं तो वे बता देते कि राहुल कहीं रास्ते में सड़क किनारे बैठकर भी वहां लंच कर लेते थे। और प्रियंका खेत में काम कर रही किसान महिलाओं के साथ भी। सोनिया गांधी खुद वहां अपनी साड़ी प्रेस करके पहन लेती हैं और प्रियंका रात को चुपचाप कैप्टन सतीश शर्मा (कैप्टन अब रहे नहीं) के साथ जाकर उस घर में पैसे और सामान दे आती हैं, जहां लड़की की शादी होना है। कांग्रेस में पहले एक ही कैप्टन हुआ करते थे जो खुले हाथों कार्यकर्ताओं और अमेठी, रायबरेली की जनता की मदद करते थे। आज के कैप्टन (पंजाब के मुख्यमंत्री अमरिन्दर सिंह) के बारे में जनता और कार्यकर्ताओं में से किसी के पास ऐसी चुपचाप मदद करने की कहानियां नहीं हैं। चुपचाप मदद करने की ये परंपरा नेहरू से शुरू हुई थी, जो निराला जैसे फक्कड़ कवि, सरदार पटेल जैसे नेता के परिवार, साधारण कार्यकर्ता सबकी मदद करते थे। उनकी जेब में तो कभी पैसा रुकता ही नहीं था। उनके निजी सचिव एमओ मथाई ने अपनी किताब में लिखा है कि वे अपनी पूरी तनखा कुछ ही दिनों में बांट देते थे। पर्सनल स्टाफ ने जब उनकी जेब में पैसा रखना बंद किया तो वे अपने सुरक्षाकर्मियों से उधार मांगकर जरूरतमंदों को दे देते थे। सुरक्षाकर्मी फिर मथाई से पैसे मांगते थे। मथाई को सुरक्षाकर्मियों को निर्देश देना पड़े कि उन्हें पैसे मत देना या कम देना। इन्दिरा गांधी भी लोगों की बहुत मदद करती थीं। इनमें पत्रकार लेखकों के साथ गांवों के लोग भी शामिल होते थे। दिल्ली के बाहर से आए एक लेखक ने बताया कि दिन भर लोगों से मिलते देर हो गई। इन्दिरा जी से मिलने रात को जब पहुंचे तो धवन ने कहा कि उन्होंने आपको पूछा था। मगर अब तो बहुत देर हो गई। क्या मैसेज पहुंचाएं लेखक ने कहा नहीं। सरदार जी टैक्सी वाले का बिल दे दो। दिन भर से इन्हें साथ लिए हूं। ज्यादा पैसे हो गए। आर के धवन ने तत्काल सरदार जी को पैसे दिए। और लेखक जी को अपनी गाड़ी से पहुंचाने का इंतजाम किया। सामान्य समय में यह सब सहज मानवीय प्रवृति की कहानियां होती हैं।

सिद्धू को पंजाब में कैप्टन अमरिंदर से लोकप्रिय मानना कांग्रेस की भूल है

डॉ. हरिकृष्ण बड़ोदिया

पंजाब प्रदेश आजकल कांग्रेस नेताओं की व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और खुन्नसों का अखाड़ा बना हुआ है और यह तब हुआ है जब कांग्रेस आलाकमान ने एक गंभीर और लोकप्रिय मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह की इच्छा के विरुद्ध एक मसखरे क्रिकेटर को प्रदेश का कांग्रेस प्रमुख बना दिया। नवजोत सिंह सिद्धू ना तो गंभीर और अनुशासित नेता हैं और ना उन्हें राष्ट्रीय नीतियों और देश की विदेश नीति का कोई ज्ञान है। नवजोत वस्तुतः केवल गेंद को हिट कर बाउंड्री पार कराने का हुनर जानते हैं लेकिन ऐसे बल्लेबाज कई बार हिट विकेट ही होते हैं। अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति में सिद्धू इस कदर अंधे हुए कि उन्होंने कांग्रेसी आलाकमान को इस बात के लिए डराया कि यदि उन्हें कांग्रेस अध्यक्ष नहीं बनाया गया तो वे आम आदमी पार्टी ज्वाइन कर लेंगे। एक तरफ तो वे निरंतर दिल्ली में कांग्रेस आलाकमान पर दबाव बना रहे थे तो दूसरी तरफ वे आम आदमी पार्टी के नेताओं से खुलकर मिल रहे थे जिससे कांग्रेस को यह आभास हो जाए कि यदि उन्हें अध्यक्ष पद नहीं दिया तो वह पंजाब में कांग्रेस के लिए नुकसानदेह साबित हो सकते हैं।

सच्चाई तो यह है कि सिद्धू ग्यारह खिलाड़ियों में ओपनर तो हो सकते हैं लेकिन उनमें कैप्टन बनने की कोई क्षमता नहीं है। जिस दिन उन्हें आलाकमान ने अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया उसी दिन से उन्होंने पंजाब कांग्रेस में तोड़फोड़ शुरू कर कैप्टन अमरिंदर सिंह को कमजोर करने की फील्डिंग शुरू कर दी। वस्तुतः अमरिंदर सिंह एक गंभीर मुख्यमंत्री के साथ कांग्रेस के सिद्धू की तुलना में कई गुना लोकप्रिय नेता हैं। अध्यक्ष बनते ही सिद्धू ने आनन-फानन में छह सलाहकारों की नियुक्ति कर यह प्रमाणित कर दिया कि वे खुद कुछ भी नहीं जानते इसीलिए उन्हें 6-6 सलाहकारों की जरूरत है। उनकी गतिविधियां कभी सकारात्मक और देशहित की नहीं रहीं। वे ऐसे भारतीय हैं जो दुश्मन पाकिस्तान के इमरान खान की तारीफ में मेरा यार इमरान जीवे जीवे, पाकिस्तान जीवे जीवे के कसीदे पढ़ते हैं। वे पाक सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा को गले लगाते हैं। उन्हें नहीं मालूम कि भारत की विदेश नीति क्या है और वे क्या बोल रहे हैं। वे यह भी नहीं जानते कि इन हरकतों से उनकी छवि को क्या फायदा या नुकसान होगा।

स्तीफा देने वाले उनके सलाहकार मालविंदर सिंह माली इतने बड़े अज्ञानी हैं कि वे भारत के संविधान और भारत की विदेश नीति के विरुद्ध कहते हैं कि कश्मीर एक स्वतंत्र देश है तथा भारत और पाकिस्तान ने इस पर अवैध कब्जा कर रखा है। इस सलाहकार को यह नहीं मालूम कि दुनिया जानती है कि कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा था, है और रहेगा। इस बयान से यह स्पष्ट होता है कि सिद्धू ने जिन नेताओं को अपना सलाहकार नियुक्त किया वे सभी सिद्धू की तरह पाकिस्तान समर्थक और भारत विरोधी विचारों के पोषक थे। क्या वास्तव में वर्तमान दौर में कांग्रेस मोदी विरोध में भारत के हितों के विरुद्ध चिंतन को जायज मानती है यदि ऐसा नहीं था तो पहले तो सिद्धू को इसकी आलोचना करनी थी लेकिन सिद्धू ने ऐसा नहीं किया। अगर सीएम अमरिंदर सिंह ने माली के बयान पर नाराजगी ना जताई होती तो ना तो आलाकमान सिद्धू को माली को हटाने को निर्देशित करता और ना माली खुद इस्तीफा देते। माली ने जो बयान दिया वह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरनाक और पूरी तरह से देशद्रोही बयान है जिस पर उन पर मुकदमा चलाया जाना चाहिए। किंतु सिद्धू के रहते ऐसा संभव नहीं हो सकता। अब खबरों में बने रहने और पार्टी में अपने अस्तित्व को बचाने के लिए मालविंदर सिंह माली अपनी जान को खतरा बता रहे हैं, जिसके लिए वे कैप्टन अमरिंदर सिंह समेत कई लोगों को जिम्मेदार बता रहे हैं। उन्होंने कहा है कि यदि उनकी जान को कोई खतरा होता है या शारीरिक हानि होती है तो इसके लिए अमरिंदर सिंह और कई कांग्रेसी और आप के नेता जिनके नाम उन्होंने गिनाए हैं ही जिम्मेदार होंगे। आजकल मालविंदर सिंह माली मुख्यमंत्री और उनके समर्थकों के खिलाफ खुलकर बयान बाजी कर रहे हैं। वह कैप्टन को अलीबाबा और उनके साथियों को चालीस चोर बता रहे हैं। आश्चर्य तो इस बात का है कि मालविंदर सिंह माली कांग्रेस के ऐसे सिपहसालार हैं जिन्होंने अपनी फेसबुक पेज पर 1989 की एक मैगजीन 'जन तक पैगाम' में प्रकाशित इंदिरा गांधी की ऐसी फोटो लगाई जो खोपडिओं के ढेर पर खड़ी हैं तथा जिनकी बंदूक की नोक पर एक खोपड़ी टंगी है। इन हरकतों से स्पष्ट है कि जैसे उनके नेता सिद्धू हैं वैसे ही उनके सलाहकार हैं। क्या आलाकमान में इतना विवेक नहीं है कि वह समझ सके कि नवजोत सिंह सिद्धू भले ही कांग्रेस में आ गए हैं किंतु उनकी आईडियोलॉजी कांग्रेस की नहीं है और ना उनके सलाहकारों की आईडियोलॉजी कांग्रेसी है। अगर कांग्रेस ने मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह के कद को कम करने के लिए सिद्धू को अध्यक्ष नियुक्त किया है तो यह मान कर चलिए कि कांग्रेस आलाकमान 22 के चुनावों में पंजाब से हाथ धोने जा रही है।

रोहित शर्मा को उपकप्तानी से हटाना चाहते थे विराट कोहली, सिलेक्टर्स को उम्र का दिया था हवाला

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के रेगुलर कप्तान विराट कोहली के टी-20 वर्ल्ड कप के बाद टी-20 की कप्तानी छोड़ने के ऐलान के बाद बड़ी बात सामने आ रही है। एक रिपोर्ट के मुताबिक विराट कोहली ने चयनकर्ताओं को प्रस्ताव दिया था कि वो रोहित शर्मा को उपकप्तानी से हटा दें। उन्होंने रोहित शर्मा की उम्र का हवाला देते हुए सिलेक्टर्स को ये प्रस्ताव दिया था। वो चाहते थे वनडे में 34 साल के रोहित से उपकप्तानी वापस लेकर केएल राहुल को सौप दी जाए। सूत्रों के मुताबिक बोर्ड ने उनका ये प्रस्ताव नहीं माना।

कहा जा रहा कि कोहली सिलेक्शन कमिटी के पास यह प्रस्ताव लेकर गए थे कि रोहित को वनडे उप-कप्तानी से हटा दिया जाए, क्योंकि वह 34 साल के हैं। वह चाहते थे कि वनडे टीम की उप-कप्तानी लोकेश राहुल को सौंपी जाए जबकि टी20 फॉर्मेट में यह जिम्मेदारी पंत निभाएं। सूत्र ने कहा, 'बोर्ड को यह पसंद नहीं आया जिसका मानना है कि कोहली असल उत्तराधिकारी नहीं चाहते।' कोहली के टी20 कप्तानी छोड़ने पर रोहित को यह जिम्मेदारी मिलना लगभग तय है और ऐसे में पंत, राहुल और जसप्रीत बुमराह उप-कप्तानी के दावेदार हो सकते हैं। दिल्ली कैपिटल्स की टीम अगर आईपीएल खिताब जीत लेती है, तो उसके कप्तान पंत सबसे बड़े दावेदार बन जाएंगे। सूत्र ने कहा, 'पंत मजबूत दावेदार हैं लेकिन आप लोकेश राहुल को नहीं नकार सकते क्योंकि वह भी आईपीएल कप्तान है। जसप्रीत बुमराह भी छिपा रुस्तम साबित हो सकते हैं।

बीसीसीआई के एक सूत्र ने बताया, 'विराट को पता है कि अगर टीम यूएई में टी20 वर्ल्ड कप में अच्छा प्रदर्शन नहीं करती है, तो उन्हें लिमिटेड ओवरों की कप्तानी से हटाया जा सकता था। जहां

तक सीमित ओवरों की कप्तानी का सवाल है तो उसने हटकर अच्छा किया है।' उन्होंने कहा, 'उसने अपने ऊपर से थोड़ा दबाव कम किया है, क्योंकि ऐसा लग रहा है कि वह अपनी शर्तों पर यह काम कर रहा था। अगर टी20 में प्रदर्शन में गिरावट आती है तो शायद 50 ओवर में फॉर्मेट में ऐसा नहीं हो।' बीसीसीआई अगर निकट भविष्य में कोहली से वनडे की कप्तानी भी ले लेता है, तो यह हैरानी भरा नहीं होगा। टी20 वर्ल्ड कप में ट्रॉफी जीतने में नाकाम रहने के बाद कोहली को 50 ओवर में फॉर्मेट में भी सिर्फ बल्लेबाज के रूप में उतरना पड़ सकता है। इसमें कोई शक नहीं कि ड्रेसिंग रूम में भी उप-कप्तान रोहित शर्मा को 'लीडर' माना जाता है, जिन्होंने युवा खिलाड़ियों को साथ लेकर चलना सीख लिया है और वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में मुंबई इंडियन्स के साथ साल दर साल ऐसा करते आए हैं। कोहली को पिछले कुछ समय से ड्रेसिंग रूप में पूरा सपोर्ट नहीं मिला है। उनको करीब से देखने वालों का मानना है कि उनकी वर्किंग स्टाइल में लचीलापन नहीं है। साउथम्पटन में वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल में दो सपिनरों के साथ उतरना हो या 2019 वर्ल्ड कप से पहले चौथे स्थान पर किसी खिलाड़ी को स्थापित नहीं होने देना, उनके अंदर लचीलेपन की कमी देखने को मिलती है। भारत ने इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज में भले ही 2-1 की बढ़त बनाई हो, लेकिन दुनिया के नंबर एक ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन को नहीं खिलाने के फैसले पर सवाल उठते हैं। पिछले साल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एडिलेड टेस्ट से पहले उन्हें पूरा समर्थन हासिल था, लेकिन उस मैच में भारत के 36 रन पर सिमटने और फिर कोहली के पैटरनिटी लीव पर जाने से काफी चीजें बदल गईं। किसी ने खुलकर नहीं कहा लेकिन भारत ने जब अपनी बेस्ट टीम के साथ खेल रहे ऑस्ट्रेलिया (2018-19 से अलग) को पिछड़ने के बावजूद हराया तो खिलाड़ी अधिक एकजुट महसूस कर रहे थे। कोहली जब इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज के लिए टीम से जुड़े तो उन्हें पता था कि युवा खिलाड़ियों ने अपने व्यक्तिगत प्रदर्शन से अपनी छाप छोड़ी है।

एक पूर्व खिलाड़ी ने अनौपचारिक बातचीत के दौरान पीटीआई से कहा था, 'विराट के साथ समस्या कम्यूनिकेशन की है। महेंद्र सिंह धोनी के मामले में, उसका कमरा 24 घंटे खुला रहता था और खिलाड़ी अंदर जा सकता था, वीडियो गेम खेल सकता था, खाना खा सकता था और जरूरत पड़ने पर क्रिकेट के बारे में बात कर सकता था।' उन्होंने कहा, 'मैदान के बाहर कोहली से कॉन्टैक्ट कर पाना बेहद मुश्किल है।

पीसीबी के ट्वीट पर अचानक से ट्रेंड करने लग फुल शब्द

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के लिए शुक्रवार 17 सितम्बर का दिन ऐसा साबित हुआ, जिसे वह जल्द से जल्द भूलना चाहेगा। दरअसल आज पहले न्यूजीलैंड ने पाक के खिलाफ वनडे सीरीज शुरू होने से पहले सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए खेलने से इनकार कर दिया, जिसके बाद पूरे पाकिस्तानी दौरे को रद्द करना पड़ा। पाक टीम की मुसीबतें यहीं खत्म नहीं हुईं। पीसीबी के ट्विटर अकाउंट से जब इस सीरीज को लेकर सूचना दी गई तो बोर्ड से गलती अंग्रेजी शब्द 'इल्त्त' का

गलत इस्तेमाल हो गया। पीसीबी ने शुक्रवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ दौरा रद्द होने पर ट्विटर पर जानकारी दी। इसमें वह 'इल्त्त ईदर्द एम्लिूब' लिखना चाह रहा था, लेकिन उसने गलती से 'इददत ईदर्द एम्लिूब' लिख दिया। बोर्ड के ऐसा करते ही सोशल मीडिया पर लोग जमकर मजाक उड़ाने लग गए। यहां देखें फैन्स के रिएक्शन गौरतलब है कि इंटरनेशनल टीमें 2009 में श्रीलंकाई क्रिकेट टीम पर लाहौर में आतंकी हमले के बाद से पाकिस्तान का दौरा करने से बचती रही हैं। श्रीलंकाई टीम जब टेस्ट मैच खेलने के लिए गद्दाफी स्टेडियम जा रही थी तब उस पर हमला किया गया था। इस हमले में श्रीलंका टीम के छह सदस्य घायल हो गए थे, जबकि छह पाकिस्तानी पुलिसकर्मियों और दो नागरिकों की जान चली गई थी। पाकिस्तान को इस साल के आखिर में इंग्लैंड और वेस्टइंडीज तथा अगले साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया की मेजबानी करनी है। न्यूजीलैंड के इस फैसले के बाद इन दौरों पर भी खतरे के बादल मंडराने लगे हैं।

न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने ऐन मौके पर रद्द किया पाकिस्तान दौरा, भड़क उठे स्टार पाक खिलाड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने शुक्रवार को सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए पाकिस्तान का दौरा रद्द कर दिया है। समस्या तब शुरू हुई जब लिमिटेड ओवरों की सीरीज का पहला वनडे रावलपिंडी स्टेडियम में शुक्रवार को समय पर शुरू नहीं हुआ और दोनों टीमें होटल के अपने कमरों में ही रहीं। इसके बाद न्यूजीलैंड क्रिकेट के मुख्य कार्यकारी डेविड वाइट ने बयान जारी करके कहा कि उन्हें जो सलाह मिल रही थी उसे देखते हुए दौरा जारी रखना संभव नहीं है। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने अपनी तरफ से कहा कि न्यूजीलैंड ने दौरा रद्द करने का एकतरफा फैसला किया। कीवी टीम के इस कदम से पूरा पाकिस्तान देश निराश है और उनके बाबर आजम, शोएब अख्तर और मोहम्मद हफीज जैसे बड़े खिलाड़ियों ने सोशल मीडिया पर निराशा और गुस्सा जाहिर किया

है। पीसीबी ने अपने बयान में कहा, 'पाक क्रिकेट बोर्ड और पाकिस्तान सरकार सभी मेहमान टीमों के लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करती है। हमने न्यूजीलैंड क्रिकेट को भी इसका आश्वासन दिया था।' उसने कहा, 'पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत स्तर पर न्यूजीलैंड की प्रधानमंत्री से बात की और उन्हें बताया कि हमारे पास दुनिया की सर्वश्रेष्ठ खुफिया प्रणाली है और मेहमान टीम के लिए किसी भी तरह का कोई सुरक्षा खतरा नहीं है।' पीसीबी ने कहा कि न्यूजीलैंड टीम के साथ आए सुरक्षा अधिकारी भी यहां की सुरक्षा व्यवस्था से संतुष्ट थे। बयान में कहा गया है, 'पीसीबी मैचों के आयोजन जारी रखने के लिए तैयार है। पाकिस्तान और दुनियाभर के क्रिकेट प्रेमी आखिरी क्षणों में सीरीज रद्द किए जाने से निराश होंगे।' इस दौरे में तीन वनडे और पांच टी-20 इंटरनेशनल मैच खेले जाने थे।

पाकिस्तान में खेलने को तैयार नहीं न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम, मैच से ठीक पहले रद्द किया दौरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। इस साल यूएई और ओमान में होने वाले टी-20 वर्ल्ड कप की तैयारियों की खातिर पाकिस्तान में लिमिटेड ओवर सीरीज खेलने आई न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने वर्तमान दौरा रद्द कर दिया है। आज न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के बीच वनडे सीरीज की शुरुआत होनी थी, लेकिन सुरक्षा कारणों के चलते न्यूजीलैंड ने खेलने से इनकार कर दिया। कीवी टीम पूरे 18 साल पाकिस्तान का दौरा कर रही थी। इस घटना के बाद अब भविष्य में पाक का दौरा करने वाली टीमों के मन में भी डर का माहौल बन सकता है। पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के बीच 3 वनडे और पांच मैचों की टी-20 सीरीज खेली जानी थी। न्यूजीलैंड के इस दौरे में वनडे सीरीज के मुकाबले रावलपिंडी और टी-20 सीरीज के मुकाबले लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में होने थे। दोनों टीमों के बीच खेले जाने वाले पहले वनडे में जब 20 मिनट का वक्त रह गया था, तब वहां उपद्रव की खबर आई सामने आई। इसके बाद खिलाड़ियों को स्टेडियम पहुंचने के बजाए होटल के कमरों में ही रहने की हिदायत दी गई। इसके अलावा क्रिकेट फैन्स को भी स्टेडियम में एंट्री नहीं करने दी गई।

इस दौरे के रद्द होने के बाद अब जल्दी ही कीवी खिलाड़ियों को पाकिस्तान से वापस बुलाने के इंतजाम किए जाएंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट के चीफ एग्जीक्यूटिव डेविड वाइट ने कहा कि हमें अपनी सरकार से जो सलाह मिली है, उसके बाद दौरा जारी रखना संभव नहीं था। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि इससे पीसीबी को झटका लगा होगा, जो कि एक शानदार मेजबान है, लेकिन खिलाड़ियों की सुरक्षा हमारे लिए सर्वोपरि है और हम मानते हैं कि हमारे पास यही एक ऑप्शन बचा था। पीसीबी ने अपने बयान में कहा, 'पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड और पाकिस्तान सरकार सभी मेहमान टीमों के लिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करती है। हमने न्यूजीलैंड क्रिकेट को भी इसका आश्वासन दिया था।' उसने कहा, 'पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने व्यक्तिगत स्तर पर न्यूजीलैंड की प्रधानमंत्री से बात की और उन्हें बताया कि हमारे पास दुनिया की सर्वश्रेष्ठ खुफिया प्रणाली है और मेहमान टीम के लिए किसी भी तरह का कोई सुरक्षा खतरा नहीं है।' पीसीबी ने कहा कि न्यूजीलैंड टीम के साथ आए सुरक्षा अधिकारी भी यहां की सुरक्षा व्यवस्था से संतुष्ट थे।

शरत श्रीधरन को मिली बड़ी जिम्मेदारी, बने जूनियर चयन समिति के अध्यक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने शुक्रवार को अखिल भारतीय जूनियर चयन समिति नियुक्त करने की घोषणा की है, जिसका अध्यक्ष दक्षिण क्षेत्र के शरत श्रीधरन को बनाया गया है। जूनियर चयन समिति के अन्य सदस्यों में पंजाब के पूर्व ऑलराउंडर किशन मोहन (उत्तर क्षेत्र), बंगाल के पूर्व तेज गेंदबाज राणादेब बोस (पूर्वी क्षेत्र), गुजरात के पूर्व बल्लेबाज पथिक पटेल (पश्चिम क्षेत्र) और मध्य प्रदेश के पूर्व गेंदबाज हरविंदर सिंह सोढ़ी (मध्य क्षेत्र) शामिल हैं।तमिलनाडु की तरफ से 100 रणजी मैच खेलने वाले पहले क्रिकेटर शरत इस समिति के प्रमुख होंगे। शरत का घरेलू क्रिकेट में 15 सालों का इतिहास रहा है।

न्यूजीलैंड ने रद्द किया पाक दौरा

माइकल वॉन बोले- पाकिस्तान क्रिकेट के लिए शर्म की बात है

नई दिल्ली (एजेंसी)। न्यूजीलैंड क्रिकेट टीम ने वनडे सीरीज का पहला मैच शुरू होने से आधे घंटे पहले पाकिस्तान का लिमिटेड ओवर दौरा सुरक्षा कारणों के चलते रद्द कर दिया गया। कीवी टीम ने अपने देश की सरकार से सुरक्षा खतरे को लेकर मिली खुफिया जानकारी के बाद रावलपिंडी में यह फैसला लिया। हालांकि पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने इसे एकतरफा फैसला करार देते हुए कहा कि मेहमान टीम की सुरक्षा को किसी तरह का खतरा नहीं था। कीवी टीम के इस फैसले के बाद इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने रिएक्शन देते हुए कहा है कि यह पाकिस्तान क्रिकेट के लिए शर्म की बात है।उन्होंने ट्वीट करते हुए

लिखा, 'न्यूजीलैंड का यह फैसला पाकिस्तान टीम को आर्थिक रूप से भारी नुकसान पहुंचाएगा। उम्मीद है कि पाकिस्तान में सुरक्षों मुद्दों को जल्द ही सुलझा लिया जाएगा और देश में एक बार फिर इंटरनेशनल क्रिकेट देखने को मिलेगा। पाकिस्तान क्रिकेट के लिए शर्म की बात।' न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के इस दौरे के रद्द होने के बाद अब इंग्लैंड का अगला पाक दौरा भी खतरे में नजर आ रहा है। इसके साथ ही इस बात की भी उम्मीद की जा रही है कि पाक दौरा रद्द होने की सूरत में इंग्लैंड के सभी खिलाड़ी आईपीएल 2021 के दूसरे फेज में नजर आएंगे।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले सुरक्षा के मद्देनजर पाक और न्यूजीलैंड के बीच टी-20 सीरीज को रावलपिंडी से लाहौर ट्रांस्फर किया गया था, लेकिन अब सुरक्षा कारणों के चलते पूरे दौरे को ही रद्द कर दिया गया है। इस पर पाकिस्तान करिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने कहा कि अन्य टूरिंग टीमों की तरह न्यूजीलैंड के लिए भी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी और यहां तक कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान ने न्यूजीलैंड में अपने समकक्ष से बात की थी, लेकिन समस्या का हल नहीं निकाला जा सका।

केविन पीटरसन ने बताया, किस टीम के पास आईपीएल २०२१ जीतने का शानदार मौका

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई इंडियंस रविवार को दुबई में चेन्नई सुपर किंग्स के साथ भिड़ने को तैयार है। आईपीएल 2021 के दूसरे हाफ का आगाज 19 सितंबर को इन दोनों के बीच मुकाबले के साथ होगा। मुंबई इंडियंस की कोशिश होगी कि वो जीत दर्ज करके प्वॉइंट टेबल में अपनी स्थिति मजबूत करे। मुंबई इंडियंस 8 प्वॉइंट के साथ चौथे नंबर पर है। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान केविन पीटरसन ने सुझाव दिया है कि आईपीएल 2020 की चैंपियन अपने पहले दो गेम हारने का जोखिम नहीं उठा सकती है। उन्होंने कहा कि चेन्नई सुपर किंग्स के पास खिताब जीतने का शानदार मौका है। पीटरसन ने कहा,' वे(मुंबई इंडियंस) पहले अपने कुछ गेम हार जाते हैं और फिर टूर्नामेंट के अंत में अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

लेकिन हम पहले से ही टूर्नामेंट के अंत की तरफ हैं। मुंबई खेलना शुरू करने से पहले तीन या चार गेम हारने का जोखिम नहीं उठा सकता क्योंकि वापसी करने क लिए बहुत कम समय है। अगर उन्हें अपना ताज बरकरार रखना है, तो उन्हें पहली गेंद से ही उस पर रहना होगा। जाहिर है, उनके पास जो प्रतिभा है, उसके साथ वे ऐसा करने में सक्षम हैं। सीएसके के बारे में बोलते हुए पीटरसन ने स्वीकार किया कि वो आईपीएल 2021 के पहले हाफ में उनके प्रदर्शन से हैरान थे और चौथी बार खिताब जीतने का उनके पास शानदार मौका है। धोनी की अगुवाई वाली चेन्नई सुपर किंग्स 10 अंकों के साथ प्वॉइंट टेबल में दूसरे स्थान पर है।

आशीष नेहरा ने बताया, मुंबई इंडियंस के स्टार ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या पर क्यों होंगी सबकी निगाहें

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या पिछले कुछ समय से शानदार फॉर्म में नहीं है। बल्ले के साथ तो उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है। वहीं हार्दिक पांड्या ने गेंदबाज के तौर पर पूरी तरह से वापसी नहीं की। टीम इंडिया के पूर्व तेज गेंदबाज आशीष नेहरा का मानना है कि हार्दिके के उतार-चढ़ाव वाली फॉर्म की वजह से मुंबई के इस ऑलराउंडर पर सबकी नजरें होंगी।

आईपीएल 2021 के दूसरे हाफ का आगाज 19 सितंबर से हो रहा है। मुंबई इंडियंस और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच पहला मुकाबला खेला जाएगा। आशीष नेहरा ने क्रिक बज से बातचीत में कहा, 'उन पर(हार्दिक पांड्या) सबकी निगाहें हैं। मैं ये नहीं कह रहा हूं कि उन्हें हमेशा सभी चार ओवर करने चाहिए, लेकिन अगर वह कीरोन पोलार्ड की मदद के लिए कुछ ओवर फेंक सकते हैं तो यह टीम के लिए बहुत बड़ा प्लस होगा। बल्ले के साथ, वह एक प्रभावशाली खिलाड़ी हैं। पिछले एक साल में उनकी फॉर्म में उतार-चढ़ाव रहा है, लेकिन वह एक ऐसे खिलाड़ी हैं जो चीजों को जल्दी से बदल सकते हैं। इसलिए, मुंबई इंडियंस वास्तव में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद करेगी।इस साल मार्च में इंग्लैंड के खिलाफ लिमिटेड ओवरों की सीरीज में हार्दिक रन नहीं बना पाए थे। इसके अलावा आईपीएल के पहले फेज में वो मुंबई इंडियंस की तरफ से खेलेते हुए भी फॉर्म में वापसी को लेकर संघर्ष करते दिखे। हाल ही में श्रीलंका के खिलाफ खेली गई लिमिटेड ओवरों की सीरीज में भी उनका संघर्ष जारी रहा। उन्होंने तीन वनडे मैचों में सिर्फ 19 रन बनाए और एक टी-20 इंटरनेशनल में 10 रन बनाए।

टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली ने रविचंद्रन अश्विन को इंस्टाग्राम पर दी जन्मदिन की बधाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के दिग्गज ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन आज अपना 35वां जन्मदिन मना रहे हैं। आर अश्विन को सुबह से ही सोशल मीडिया में बधाई संदेश मिल रहे हैं। टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली ने भी अश्विन को जन्मदिन की शुभकामनाएं सोशल मीडिया के जरिए दी। अश्विन इस समय आईपीएल 2021 के दूसरे फेज में हिस्सा लेने के लिए यूएई में हैं। वो दिल्ली कैपिटल्स की तरह से खेलेंगे। अश्विन को आगामी टी-20 वर्ल्ड कप के लिए भारतीय टीम में जगह मिली है। अश्विन वर्ल्ड कप से पहले दुनिया की सबसे बड़ी लीग में अपनी क्षमता दिखाने को लेकर उत्सुक हैं।विराट ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर अश्विन को जन्मदिन की बधाई दी। बीसीसीआई ने भी अपने ऑफिशियल ट्विटर अकाउंट से

अश्विन को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। अश्विन की बात करें तो अश्विन ने भारत की तरफ से 236 इंटरनेशनल मैच खेले हैं और 615 विकेट लिए हैं। अश्विन ने इस दौरान 3483 रन भी बनाए हैं। अश्विन वर्ल्ड कप 2011 और चैंपियंस ट्रॉफ़ी 2013 में विजेता बनी भारतीय टीम का हिस्सा थे। अश्विन ने 79 टेस्ट मैच में 413 विकेट हासिल किए हैं। वनडे में उनके नाम 111 मैचों में 150 विकेट हैं। टी-20 इंटरनेशनल में अश्विन ने 46 मैचों में 52 विकेट लिए हैं। आईपीएल 2021 का पहला फेज अश्विन के लिए खास नहीं रहा था। उन्होंने डीसी की तरफ से 5 मैच खेले थे, जिनमें उन्हें मात्र एक विकेट मिला था।

दिल्ली कैपिटल्स ने आईपीएल 14 के पहले फेज में 8 में से 6 मैच जीते थे। वो 12 अंकों के प्वॉइंट टेबल में पहले पायदान पर है। दिल्ली कैपिटल्स अपने अभियान की शुरुआत 22 सितंबर को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ दुबई इंटरनेशनल स्टेडियम में करेगी।

विराट कोहली के टी-20 की कप्तानी छोड़ने के ऐलान पर इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने कैसे किया रिएक्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन ने विराट कोहली के टी-20 वर्ल्ड कप के बाद टी-20 इंटरनेशनल की कप्तानी छोड़ने के फैसले को निःस्वार्थ करार दिया। विराट कोहली ने गुरुवार को घोषणा कि कि उन्होंने टी-20 वर्ल्ड कप के बाद भारत की टी-20 क्रिकेट टीम की कप्तानी छोड़ने का फैसला किया है। हालांकि उन्होंने साफ किया कि वो तीनों फॉर्मेटों में भारतीय टीम की तरफ से खेलेंगे। विराट कोहली ने कप्तानी छोड़ने का फैसला टीम इंडिया के हेड कोच रवि शास्त्री और सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा से चर्चा के बाद लिया। वॉन ने कोहली के इंस्टाग्राम पोस्ट पर कमेंट करके लिखा,'अच्छा किया। ये एक बहुत निःस्वार्थ निर्णय है और ये आपको सभी दवाबों से थोड़ा रेस्ट करने के लिए कुछ अच्छा स्पेस देगा।

तालिबान संकट में अफगानियों को नहीं भूला है भारत : पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साफ किया है कि तालिबान संकट के दौर में भी भारत अफगानिस्तान के नागरिकों से अपनी दोस्ती और पुराने रिश्ते को नहीं भूलेगा। पीएम मोदी ने अफगानिस्तान में गंभीर मानवीय संकट बताते हुए कहा है कि भारत खाना और दवा भेजकर मदद करना चाहता है। अफगानिस्तान को लेकर आयोजित एससीओ-सीएसटीओ समिट में पीएम मोदी ने कहा, ''अफगानिस्तान में गंभीर मानवीय संकट है।

आर्थिक और व्यापारिक गतिविधियों में बाधाओं की वजह से अफगानिस्तान में लोगों की आर्थिक दिक्कतें बढ़ रही हैं। साथ में कोरोना की चुनौती भी है, जो उन्हें तनाव दे रही है। पीएम मोदी ने कहा, ''विकास और मानवीय सहायता में भारत अफगानिस्तान का विश्वसनीय सहयोगी है। हमने इन्फ्रास्ट्रक्चर, शिक्षा, स्वास्थ्य, क्षमता विकास सहित सभी सेक्टर में अफगानिस्तान के सभी हिस्से में योगदान दिया है। आज भी हम अनाज और दवा अपने अफगान मित्रों को भेजना चाहते हैं।पीएम मोदी ने कहा, ''हमें मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि अफगानिस्तान में मानवीय सहायता ठीक तरीके से पहुंचे। भारतीयों और और अफगानियों के बीच विशेष रिश्ता रहा है। अफगान समाज की मदद के लिए सभी क्षेत्रीय और वैश्विक पहल का भारत पूरी तरह समर्थन करेगा।

खाना और दवा भेजकर करना चाहते हैं मदद

संजय राउत ने समझाया सीएम उद्धव 'भविष्य के साथी' वाले बयान का मतलब, बोले- बीजेपी के लोग एमवीए में आ सकते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने शुक्रवार को एक कार्यक्रम में भाजपा नेता की मौजूदगी के बीच कहा, 'मेरे मौजूदा, पूर्व और यदि हम साथ आते हैं तो फिर भविष्य के सहयोगी...'। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, जहां भाजपा नेता और रेल राज्य मंत्री राव साहेब दानवे बैठे हुए थे। मुख्यमंत्री के इस बयान के बाद शिवसेना-भाजपा के फिर से करीब आने के कयास लगाए जा रहे थे। अब सीएम के इस बयान पर शिवसेना के नेता संजय राउत ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। संजय राउत ने कहा, 'हमें यह समझने की जरुरत है कि मुख्यमंत्री ने क्या कहा...उनके कहने का मतलब था कि बीजेपी से कुछ लोग महा विकास अघाड़ी में आ सकते हैं।

नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी को बनाया गया संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य का एडवोकेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। संयुक्त राष्ट्र संघ ने नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी को सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) एडवोकेट बनाया है। एसडीजी एडवोकेट के रूप में सत्यार्थी संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत विकास लक्ष्य को सन् 2030 तक हासिल करने में भूमिका निभाएंगे। सत्यार्थी की बाल दासता को समाप्त करने और बच्चों के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अधिकारों के लिए वैश्विक आंदोलन के निर्माण में अग्रणी भूमिका रही है। उन्होंने बच्चों के खिलाफ हिंसा को समाप्त करने और एक ऐसी दुनिया के निर्माण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है, जहां हर बच्चे को स्वतंत्र, स्वस्थ, शिक्षित और सुरक्षित जीवन जीने का प्राकृतिक अधिकार हासिल हो सके। उनके इसी योगदान को देखते हुए उन्हें एसडीजी एडवोकेट बनाया गया है। कैलाश सत्यार्थी की एसडीजी एडवोकेट के रूप में नियुक्ति ऐसे समय में हुई है, जब एक तरफ बाल श्रम उन्मूलन का अंतरराष्ट्रीय वर्ष चल रहा है, वहीं

दूसरी तरफ पूरी दुनिया को दो दशकों में पहली बार बाल श्रम में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिली है। बाल श्रमिकों की संख्या अब बढ़कर 16 करोड़ हो गई है। पहले यह संख्या तकरीबन 15.2 करोड़ थी। गौरतलब है कि कोविड-19 के दुष्परिणामों ने लाखों बच्चों को खतरे में डाल दिया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने सतत विकास लक्ष्य के एजेंडे में सन 2025 तक समूचे विश्वभर से बाल श्रम उन्मूलन का लक्ष्य रखा है। ऐसे में 2025 तक दुनिया से बाल श्रम को खत्म करने के संकल्प पर एक बड़ा सवाल उठ खड़ा होता है और संयुक्त राष्ट्र ने 2030 ने सतत विकास लक्ष्य हासिल करने की जो प्रतिबद्धता जताई है, वह भी चुनौतीपूर्ण लग रही है।

एक तरफ दुनियाभर में बाल श्रमिकों की संख्या बढ़कर रही है, वहीं दूसरी तरफ कोरोना महामारी के दुष्परिणामों ने लाखों बच्चों को और अधिक असुरक्षित बना दिया है। यह नियुक्ति वर्तमान संकट के मद्देनजर की गई है, जिसका हम सामना कर रहे हैं।

ऑनलाइन प्रॉपेगेंडा से भारत में जाल फैलाना चाहता है इस्लामिक स्टेट, एनआईए ने किया साजिश का खुलासा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेशनल इन्वेस्टिगेशन एजेंसी ने शुक्रवार को कहा कि इसने अब तक इस्लामिक स्टेट से जुड़े कम से कम 37 केसों की जांच की है। सबसे ताजा मामला जून 2021 का है। एजेंसी ने बताया कि इन 37 केसों में अब तक कुल 168 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। 31 केसों में चार्जशीट दायर की जा चुकी है और ट्रायल में 27 दोषी करार दिए जा चुके हैं। एजेंसी ने कहा कि इसकी जांच से पता चला है कि इस्लामिक आतंकी समूह ''लगातार ऑनलाइन प्रॉपेगेंडा के जरिए जाल फैला रहा है।'' एनआईए की ओर से जारी बयान में कहा गया है, ''भोले-भाले युवाओं को फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म पर टारगेट बनाया जा रहा है। एनआईए ने कहा कि जैसे ही कोई इस्लामिक स्टेट की विचारधारा में दिलचस्पी दिखाता है, उसे ऑनलाइन हैंडलर्स से बातचीत के लिए ललचाया जाता है, जो विदेशों में मौजूद होते हैं और इनक्रिप्टेड सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म के जरिए संपर्क साधते हैं।

...तो आज भारत में होता करतारपुर साहिब, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह का कांग्रेस पर निशाना

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुक्रवार को कहा कि बंटवारे के समय कुछ सावधानियां बरते गये होते तो करतापुर साहिब पाकिस्तान में नहीं भारत में होता। सिख समुदाय ने आजादी की लड़ाई में बड़ा संघर्ष किया है। राजनाथ सिंह ने कहा कि जब हमें आजादी मिली तब हमें बंटवारे का दंश झेलना पड़ा, सिख समुदाय को काफी कुछ बर्दाश्त करना पड़ा। राजनाथ सिंह ने कहा, 'अपने युवाओं को सिखों का इतिहास पढ़ाएं। यह देश सिख समुदाय का योगदान कभी नहीं भूलेगा। कुछ लोग खालिस्तान की मांग करते हैं। आप खालिस्तान की बात क्यों करते हैं...सारा

हिन्दुस्तान आपका है।' रक्षा मंत्री ने कहा कि भारत ने पूर्व में कई मुश्किलों का सामना किया है। सिख समुदाय की वजह से ही आज भारतीय संस्कृति बची हुई है। सिख समुदाय का इतिहास स्वर्णिम रहा है लेकिन परेशानी यह है कि इनमें से कई लोग इतिहास को नहीं जानते हैं।

बता दें कि यह गुरुद्वारा पाकिस्तान के नारवाल जिले में है और यह भारत की सीमा से सिर्फ तीन किलोमीटर की दूरी पर ही है। लाहौर से इसकी दूरी तकरीबन 120 किलोमीटर की है। पहले भारत के श्रद्धालु करतारपुर साहिब गुरुद्वारे का दर्शन दूरबीन से करते थे, जिसे भारत और पाकिस्तान की सरकार ने मिलकर कॉरिडोर बनवा दिया था।

करतारपुर साहिब गुरुद्वारा सिखों का एक धार्मिक स्थल है, जोकि पाकिस्तान में स्थित है। इसी गुरुद्वारे को गुरु नानक देव ने अपनी जिंदगी के आखिरी साल बिताए थे। यहां पर उन्होंने तकरीबन 16 साल तक जीवन व्यतीत किया था। उनके शरीर को त्यागने के बाद इस गुरुद्वारे को बनवाया गया था।

बेंगलुरु: एक घर में मिली 5 लाशें, ढाई साल की बच्ची जिंदा बची

नई दिल्ली (एजेंसी)। बेंगलुरु के एक घर में 5 लाशें मिलने से हड़कंप मच गया है। मृतकों में 9 महीने की एक बच्ची भी शामिल है। थिगालारापाल्या में चेतन सर्किल फोर्स क्रॉस के पास यह घर स्थित है। घर से एक ढाई साल की बच्ची अचेत अवस्था में मिली है। बताया जा रहा है कि यह बच्ची करीब 4 दिनों से भूखी थी और उसकी हालत बेहद खराब थी। पुलिस ने जिंदा मिली लड़की को फिलहाल इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। शुरुआती जांच के बाद पुलिस ने कहा है कि घर के सभी 4 वयस्कों ने अलग-अलग कमरों में जाकर दरवाजे और खिड़कियां बंद कर ली और फिर उन्होंने सुसाइड कर लिया। नौ महीने की बच्ची बिस्तर पर मृत मिली है। अभी पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि क्या भूख की वजह से इस बच्चे की मौत हुई है मृतकों की पहचान 51 साल की भारती, 34 साल की सिंचना, 31 साल की सिंधूरानी और 25 साल के मधुसागर के तौर पर हुई है।मृतक बच्ची की पहचान सिंधूरानी की बेटी के तौर पर की गई है। पुलिस को आशंका है कि चार दिन पहले इन सभी ने आत्महत्या की है। लेकिन यह मामला शुक्रवार की शाम को उजागर हुआ है। जिंदा बची लड़की के बारे में कहा जा रहा है कि वो सिंचना की बेटी है।

भारी बारिश के बीच भी यूपी में बंपर वैक्सीनेशन, पीएम मोदी के जन्मदिन पर 23 लाख लोगों को लगा टीका

लखनऊ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के मौके पर यूपी में भी कोरोना का बंपर टीकाकरण हुआ है। कोविन पोर्टल पर रात आठ बजे तक जारी आंकड़ों के हिसाब से प्रदेश में 23 लाख 25 हजार 349 लोगों को टीके लग चुके थे। भारी बारिश के बीच भी इतनी बड़ी संख्या में लोगों का टीकाकरण केंद्रों में पहुंचना भी काबिले तारीफ माना जा रहा है। हालांकि इस आंकड़े में लगातार बढ़ोत्तरी दर्ज की जा रही थी। यूपी नौ करोड़ से ज्यादा टीके लगाकर अब तक सर्वाधिक टीकाकरण करने वाला राज्य है। इससे पूर्व सात सितंबर को एक दिन में करीब 33 लाख टीके लगाने का कीर्तिमान भी यूपी बना चुका है। कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए राज्य सरकार का पूरा जोर इन दिनों टीकाकरण पर है। लोगों को टीका लगवाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम

चलाए जा रहे हैं। इन्हीं सबके चलते प्रदेश में जनजीवन सामान्य हो गया है। हालांकि कोविड प्रोटोकॉल का पालन अब भी जरूरी है। वहीं बीते 24 घंटे में राज्य में 01 लाख 91 हजार 444 कोरोना सैंपल की जांच की गई। इनमें से 01 लाख 15 हजार सैंपलों की आरटीपीसीआर जांच की गई। जांच में 17 नए केस सामने आए जबकि इसी अवधि में 16 लोगों को इलाज के बाद डिस्चार्ज कर दिया गया। अब तक प्रदेश में 7 करोड़ 59 लाख 52 हजार 672 सैंपलों की जांच हो चुकी है। राज्य का रिकवरी रेट 98.7 फीसदी और पॉजिटिविटी रेट 0.01 प्रतिशत है। प्रदेश में अब कोरोना के संक्रिय केस महज 191 रह गए हैं।

विराट कोहली ने पीएम नरेंद्र मोदी को दी जन्मदिन की शुभकामनाएं, किया ट्वीट

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आज 71वां जन्मदिन है। प्रधानमंत्री नरेंद्र को पूरी दुनिया से बर्थडे की शुभकामनाएं मिल रही हैं। टीम इंडिया के कप्तान

विराट कोहली ने भी प्रधानमंत्री को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी। विराट ने ट्विटर पर पीएम मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनके बेहतर स्वास्थ की कामना की। पीएम मोदी की खेलों के प्रति विशेष लगाव है। वो अक्सर खेलों को लेकर ट्वीट करते हैं और समय निकालकर खिलाड़ियों से मिलते हैं। विराट कोहली ने ट्वीट कर लिखा, 'हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी जी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। ईश्वर आपको अच्छा स्वास्थ और खुशियां दे।' पीएम मोदी के जन्मदिन पर रिकॉर्ड वैक्सीनेशन का लक्ष्य रखा गया है। आज देश भर में रिकॉर्ड डेढ़ करोड़ कोरोना के टीके लगाने की तैयारी की गई है। गौरतलब है कि पीएम मोदी 13 साल तक गुजरात के मुख्यमंत्री रहे और उसके बाद सात साल से पीएम हैं। विराट कोहली ने गुरुवार को टी-20 वर्ल्ड कप के बाद भारतीय टी-20 टीम की कप्तानी छोड़ने का ऐलान कर सबको चौंका दिया था। कोहली की कप्तानी में भारत का रिकॉर्ड शानदार रहा है। कोहली की कप्तानी में भारत ने 45 टी-20 इंटरनेशनल खेले हैं। इसमें भारत ने 27 मैच जीते हैं और सिर्फ 14 टी-20 मैच गंवाए हैं। दो मैच टाई रहे और दो मैचों का कोई नतीजा नहीं निकला।

मानवता के इतिहास में सबसे लोकप्रिय नेता हैं पीएम नरेंद्र मोदी, बोले बीजेपी के युवा मोर्चा अध्यक्ष

नई दिल्ली (एजेंसी)। 71वें जन्मदिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को कई लोगों ने बधाइयां दीं। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या ने प्रधानमंत्री मोदी के बारे में कहा कि वो मानवता के इतिहास में सबसे लोकप्रिय नेता हैं। अहमदाबाद स्थित कर्णावती क्लब में आयोजित एक कार्यक्रम में तेजस्वी सूर्या ने यह बात कही। प्रधानमंत्री को उनके जन्मदिन की बधाई देते हुए तेजस्वी सूर्या ने कहा, 'प्रधानमंत्री का जन्मदिन मनाना मेरी लिए सौभाग्य की बात है। वो भी उनके जन्मस्थली पर। जब मैं सुबह सरदार वल्लभभाई पटेल इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर पहुंचा तब मुझे ऐसा हुआ कि गुजरात की जमीन ने कई महान नेताओं को जन्म दिया है। हमारे प्रधानमंत्री प्रजातंत्र के जरिए चुने गए मानवता के इतिहास में सबसे लोकप्रिय नेता हैं। उन्होंने आगे कहा, 'मैं कहता हूं कि यह सच है कि क्योंकि साल 2014 और 2019 के आम चुनावों में भारतीय वोटरों की संख्या कई देशों की पूरी जनसंख्या से ज्यादा थी। हमारे प्रधानमंत्री पिछले 20 साल से राज्य और केंद्र की सत्ता

में है और उनको लेकर कोई इनकम्बेंसी भी नहीं है। दुनिया में इतना ऊंचा मुकाम किसी अन्य नेता ने हासिल नहीं किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 71वें जन्मदिवस पर शुक्रवार को राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, उप राष्ट्रपति एम. वेंकैया नायडू और विभिन्न दलों के नेताओं ने उन्हें शुभकामनाएं दीं तथा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं ने उनके नेतृत्व की सराहना की। इस अवसर पर भाजपा ने अपने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे कोविड-19 रोधी टीकाकरण कार्यक्रम में मदद करें। पार्टी चाहती है कि शुक्रवार को रिकॉर्ड संख्या में टीकाकरण हों। भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर 20 दिनों का ''सेवा और समर्पण अभियान आरंभ किया जो सात अक्टूबर तक चलेगा। पार्टी इस दौरान मोदी के सार्वजनिक जीवन में दो दशक पूरा करने का भी जश्न मनाएगी। इसमें वह अवधि भी शामिल है जिस दौरान मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे। राष्ट्रपति कोविंद ने अपने संदेश में कहा, ''प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

अफगानिस्तान में आतंकवाद पर लगाना होगा लगाम, एससीओ में सदस्य देशों ने एक सुर में बुलंद की आवाज

दुशांबे (एजेंसी)। ताजिकिस्तान की राजधानी दुशांबे में हुई एससीओ मीट में सभी सदस्य देशों ने अफगानिस्तान के लिए समर्थन जताया है। सभी देशों ने अफगान में स्वतंत्रता, एकता, लोकतंत्र और शांति के लिए आवाज उठाई। सदस्य देशों ने अफगानिस्तान को आतंकवाद और आतंक से मुक्त करने की बात कही। इस दौरान सदस्य देशों ने अफगानिस्तान में सम्मिलित सरकार की जरूरत पर जोर दिया। कहा गया कि सभी धर्मों, संप्रदायों राजनीतिक समूहों और अफगान सोसायटी की भागीदारी सरकार में होनी चाहिए। साथ ही सदस्य देशों ने आतंक के सभी स्वरूपों को खारिज किया। इस दौरान इस बात पर जोर दिया गया कि आतंकवाद और इसकी वित्तीय मदद पर भी पूरी तरह से रोक लगनी चाहिए। सदस्य देशों ने आतंकवाद, अलगाववाद और अतिवाद को बढ़ावा देने वालों पर भी लगाम कसने की जरूरत बताई। शंघाई सहयोग संगठन के सदस्य देशों ने इस बात पर जोर दिया कि वह ऐसी सभी शक्तियों के खिलाफ खड़े होंगे जो आतंकवाद का किसी भी रूप में सपोर्ट करते हैं। साथ ही आतंकवाद को समर्थन देने वाले व्यक्तियों और संस्थानों पर भी कड़ी कार्रवाई की जरूरत बताई गई।

अखंड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.
UPHIN 2001/9025

कोरोना का रास्ता बंद कर देगी नेजल स्प्रे वैक्सीन, 3 का सेकंड फेज ट्रायल पूरा, 8 पर रिसर्च

नई दिल्ली (एजेंसी)। क्या नाक के रास्ते दी गई वैक्सीन संक्रमण और ज्यादा बेहतर कारगर होगी? इस संभावना को लेकर दुनिया भर में कई वैक्सीनों पर काम चल रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक कुल आठ ऐसी दवाओं पर फिलहाल रिसर्च चल रही है। इसमें चीन की शियामेन यूनिवर्सिटी, हांगकांग यूनिवर्सिटी और बीजिंग की वांताई बायोलॉजिकल फार्मेसी की दवाओं का सेकेंड फेज का ट्रायल हो चुका है। नाक से दी जाने वाली वैक्सीन के बारे में रिसर्चर नताली मिलक्लार्क ने जानकारी दी। नताली अभी लिले पेश्चर इंस्टीट्यूट की तरफ से डेवलप की जा रही है नाक के रास्ते दी जाने वाली खांसी की दवा पर काम कर रही हैं। नताली ने बताया कि वायरस नाक के रास्ते ही संक्रमण फैलाता है। इसलिए नेजल स्प्रे के पीछे आइडिया है कि दरवाजा ही बंद कर दिया जाए। वहीं मार्च में प्रकाशित एक लेख में भी नेजल स्प्रे डेवलप करने की मांग की गई थी। इसके पीछे तर्क दिया गया था कि यह संक्रमित व्यक्ति पर तत्काल प्रभाव डालेगा।

नाक से दी जाने वाली दवा से इम्यूनोग्लोबिन एंटीबॉडी डेवलप करने की कोशिश की जा रही है।

यह इंफेक्शन को पूरी तरह से ब्लॉक कर देगी। आर्टिकल के मुताबिक इससे वायरस के शरीर में पहुंचने की संभावना खत्म हो जाती है। फिलहाल इस तरह की जो वैक्सीन उपलब्ध हैं वह कोरोना के घातक रूप से मजबूती से बचाव करती हैं। लेकिन यह वायरस के प्रभाव को रोकने में पूरी तरह से सक्षम नहीं हैं। नताली मिलक्लार्क ने बताया कि नेजल स्प्रे के इस्तेमाल से अन्य लोगों तक संक्रमण पहुंचने का खतरा काफी कम हो जाता है।

इसका एक फायदा यह भी है कि अगर कोई व्यक्ति कोरोना की चपेट में आता भी है तो उसका वायरल लोड कम होगा। यानी उसके संक्रमण से गंभीर रूप से प्रभावित होने का खतरा काफी कम हो जाएगा। मार्च में ही प्रकाशित एक अन्य आर्टिकल ने इसके कुछ अन्य फायदों के बारे में भी बताया है। इसके मुताबिक नेजल स्प्रे के रूप में आने वाली वैक्सीन को रेफ्रिजरेटर में रखने की भी जरूरत नहीं होगी। साथ ही इसकी देखरेख के लिए स्वास्थ्य विशेषज्ञों की भी आवश्यकता नहीं होगी। लोग खुद ही घर पर इसे रख सकेंगे। वहीं ऐसे लाखों लोग जो इंजेक्शन लगवाना पसंद नहीं करते, उनके लिए यह नेजल स्प्रे किसी वरदान से कम नहीं होंगे।

अमेरिका के टेक्सस राज्य में गर्भपात पर रोक से चिंताएं

नई दिल्ली (एजेंसी)। टेक्सास का नया ठहार्टबीट बिलठ छह सप्ताह के बाद गर्भपात पर प्रतिबंध लगाता है. विशेषज्ञों का कहना है कि महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित करने से उनके मानसिक स्वास्थ्य पर असर पड़ेगा.अमेरिका के दूसरे सबसे बड़े राज्य, टेक्सस के एक नये कानून के तहत प्रेग्नेंसी के छह सप्ताह बाद गर्भपात कराना मना है. जानकार कहते है कि औरतों के लिए विकल्पों को सीमित करने से उनकी मानसिक सेहत पर भी गलत असर पड़ेगा. टेक्सस के इस नये गर्भपात कानून को ठहार्टबीट बिलङ्क नाम दिया गया है. डीडब्लू से अपने निक नेम के साथ बात करने पर सहमत, पेशे से वित्तीय सलाहकार सैम जब गर्भवती हुई थीं तो उन्हें पता था कि उन्हें क्या करना है. वह बताती हैं, ठएक रात के कैजुअल सेक्स के कुछ हफ्तों बाद एक रोज मैं सुबह अलसाई हुई साथ उठी तो मैंने फौरन फ्लैन्ड पेरेंटहुड में मिलने का समय ले लिया।

तालिबान राज में महिलाओं की भलाई के लिए नहीं होगा कोई काम, मंत्रालय का भी बदला नाम

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबान शासन आने के बाद बहुत सारी चीजें बदल रही हैं।

ऐसे ही बदलाव का शिकार हुआ है यहां की वुमन मिनिस्ट्री। शुक्रवार को राजधानी काबुल में कुछ वर्कर इस मिनिस्ट्री का साइन बोर्ड बदलते देखे गए। वहीं यहां काम करने वाली महिला कर्मचारियों का कहना है कि उन्हें बिल्डिंग में प्रवेश नहीं करने दिया जा रहा है। शुक्रवार को महिला मंत्रालय की बिल्डिंग पर 'मिनिस्ट्रीज ऑफ प्रेयर एंड गाइडेंस एंड द प्रमोशन ऑफ वर्च्यू एंड प्रिवेंशन ऑफ वाइस' लिखा हुआ था। रॉयटर्स समाचार एजेंसी ने इस बात की जानकारी दी। वहीं यहां काम करने वाली महिला कर्मचारियों ने बताया कि वह कई हफ्तों से ऑफिस आने की कोशिश कर रही हैं। लेकिन उन्हें घर वापस लौटा दिया जा रहा है। रॉयटर्स ने इन महिलाओं से बातचीत का वीडियो भी बनाया है। आखिर गुरुवार को इस बिल्डिंग के गेट बंद कर दिए गए। नौकरी की उम्मीद खत्म होते देख एक महिला ने हताशा में कहा कि मैं अपने घर की एकमात्र कमाने वाली सदस्य हूं। वहीं एक अन्य महिला ने कहा कि जब वहां वुमन मिनिस्ट्री ही नहीं रहेगी तो फिर अफगान महिलाएं करेंगी क्या? वहीं इस बारे में सवाल पूछने पर तालिबान प्रवक्ता ने कोई जवाब नहीं दिया।